श्वेत स्वर्णिमा

वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका – 2023



भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

श्वेत स्वर्णिमा

वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका – 2023



संपर्क सूत्र : संपादक

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

पोस्ट बैग क्र. 2, शंकरनगर पोस्ट ऑफिस, नागपुर - 440033 (महाराष्ट्र)

दूरभाष - (07103) 275536/38 फैक्स : (07103) 275529

ई मेल : director.cicr@icar.gov.in ▪ वेब साइट : http://www.cicr.org.in

भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान
वर्धा रोड, नागपुर (महाराष्ट्र)

श्वेत स्वर्णिमा-2023

(वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका)



संरक्षक एवं प्रकाशक
डॉ. वाय.जी. प्रसाद
निदेशक
भा.कृ.अनु.प.-के.क.अनु.सं., नागपुर

प्रधान संपादक
डॉ. रचना पाण्डे
वरिष्ठ वैज्ञानिक
भा.कृ.अनु.प.-के.क.अनु.सं., नागपुर

संपादक
डॉ. महेन्द्र कुमार साहू
सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.)
भा.कृ.अनु.प.-के.क.अनु.सं., नागपुर

संपर्क सूत्र
संपादक
भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर
पोस्ट बैग क्र. 2, शंकरनगर पोस्ट ऑफिस, नागपुर - 440010 (महाराष्ट्र)
दूरभाष : (07103) 275536/38 फैक्स : (07103) 275529
ई मेल : director.cicr@icar.gov.in
वेब साइट : http://www.cicr.org.in

प्रकाशन : **दिसंबर**, 2023
मुद्रक : **सूर्य ऑफसेट**
28, फार्मलैंड, रामदासपेठ, नागपूर-440010

सर्वाधिकार : **भा.कृ.अनु.प.-के.क.अनु.सं., नागपुर**

: केवल विभागीय उपयोग हेतु :

नोट - पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं, संस्थान अथवा संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं।

निदेशक की कलम से...



आप जानते ही हैं कि हमारा देश अनेकता में एकता का प्रतीक है। इसका एक मात्र आधार 'हिंदी' ही है जो पूरे देश को एक सूत्र में बाँधती है। हिंदी संपर्क सूत्रों की एक कड़ी होने के साथ-साथ हमारे लिए आत्म सम्मान की जननी भी है। 'हिंदी' भाषा हम में भाईचारे एवं सद्भावना का निर्माण कर राष्ट्रीय एकता की कड़ी को मजबूत करती है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन तथा हिंदी के प्रयोग को उत्तरोत्तर बढ़ाने हेतु संस्थान द्वारा नियमित रूप से प्रकाशित वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'श्वेत स्वर्णिमा' कृत संकल्प है।

'श्वेत स्वर्णिमा' के विगत अंक पर प्राप्त हुई प्रतिक्रियाएँ इस बात की स्पष्ट द्योतक है कि पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल रही है और पत्रिका के प्रकाशन ने संस्थान की प्रसुप्त साहित्यिक प्रतिभाओं के चिंतन-मनन को पर्याप्त अभिव्यक्ति प्रदान करने के मार्ग खोल दिए हैं। मुझे विश्वास है कि विगत अंक की भाँति यह अंक भी राजभाषा (हिंदी) के प्रचार-प्रसार हेतु बहुउपयोगी साबित होगा।

अतः मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए समस्त रचनाकारों एवं संपादक मंडल को उनके अथक प्रयास के लिए अपनी हार्दिक बधाई देता हूँ।

'श्वेत स्वर्णिमा' पत्रिका निरंतर पल्लवित-पुष्पित होती रहे इन्हीं हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

- डॉ. वाय.जी. प्रसाद
निदेशक
भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

प्रधान संपादक की कलम से...



आज विश्व-प्रतिस्पर्धा का युग है। आर्थिक तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक जबरदस्त होड़ शुरू हो गई है। विश्व के देश इस प्रतिस्पर्धा में अब भारत की महान शक्ति को स्वीकार करने लगे हैं। हमारे पास प्रचुर संसाधन हैं और मानव संसाधन की दृष्टि से भी भारत अग्रणी देश है। प्रतिस्पर्धा के इस दौर में आगे बढ़ने के लिए हमें अपने इस मानवीय संसाधन का अधिकतम और सर्वोत्तम उपयोग करना होगा और तदहेतु राजभाषा (हिंदी) अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

इस संबंध मे हमें यह देखना होगा कि कार्यालयों में, कारखानों में और खेतों में काम करने वाले लोग कौन हैं। आज चाहे औद्योगिक क्रांति हो या कृषि क्रांति, यह तभी संभव होगी, जब हम लोगों तक अपनी बात पहुंचा सकेंगे और कोई भी प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी तभी सही अर्थों में संस्कृति में परिवर्तित हो पाती है, जब वह लोगों तक उनकी भाषा में पहुंचाई जाएं। इस दृष्टि से भी हमें हिंदी को देखना चाहिए, उस पर विचार करना चाहिए और उसे व्यवहार में लाना चाहिए। 'श्वेत स्वर्णिमा' पत्रिका का प्रकाशन इस पावन उद्देश्य की प्राप्ति हेतु एक लघु प्रयास है जो निःसंदेह संस्थान में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मन में हिंदी के प्रति जागृति एवं कर्तव्यनिष्ठा की भावना को बढ़ावा देगा।

अतः इस संबंध में मेरा आपसे अनुरोध है कि कृपया आप 'श्वेत स्वर्णिमा' के सफल प्रकाशन को ही केवल हमारा उद्देश्य न समझें बल्कि 'श्वेत स्वर्णिमा' में प्रकाशित बहुउपयोगी जानकारियों का लाभ उठाते हुए आप सभी हिंदी में कार्य करने की ओर प्रवृत्त हो, यही हमारा वास्तविक लक्ष्य है।

हम श्रीमती स्वाती दिक्षित, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, प्रमुख पुस्तकालय श्रीमती रमा अय्यर, निजी सचिव, फसल सुधार विभाग एवं श्रीमती रचना देशमुख, तकनीकी अधिकारी, फसल उत्पादन विभाग का मनपूर्वक आभार व्यक्त करते है कि, उन्होंने पत्रिका प्रारुपण, सुधार कार्य तथा उसकी रूपरेखा तैयार करने के लिए अपना उल्लेखनीय एवं सराहनीय योगदान दिया।

- डॉ. रचना पाण्डे
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं
प्रधान संपादक (श्वेत स्वर्णिमा)
भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

संपादकीय



भाषा न केवल राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक है, वरन राष्ट्रीय भावना को जागृत करने एवं राष्ट्र को सुदृढ़ करने के लिए भी जरूरी है। राष्ट्रीय चेतना को सशक्त वाणी देने के लिए हम सभी का यह दायित्व है कि हिंदी को सहज में अपनाई जाने एवं समझी जाने वाली भाषा बनाने में अपना रचनात्मक योगदान दें।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि किसी अन्य देश की भाषा, दूसरे देश की राष्ट्रभाषा नहीं बन सकी। रूस के विभिन्न प्रदेशों में अनेक भाषाएँ प्रचलित हैं किन्तु संपूर्ण सोवियत की भाषा रूसी है। रूस ने कभी 'अंग्रेजी' के माध्यम से अपनी वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति करने का प्रयास नहीं किया, जबकि वह देश आज वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति में संसार में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जब रूस भाषा की दृष्टि से आत्मनिर्भर हो सकता है, जर्मनी और चीन भी अपनी भाषा में प्रगति कर सकते हैं तो कोई कारण नहीं कि हमारा गौरवशाली देश अपनी भाषा के माध्यम से चौमुखी विकास न कर सके।

आज कृषि विज्ञान के क्षेत्र में नित नये-नये अनुसंधान एवं प्रयोग हो रहे हैं तथा नयी-नयी जानकारियां प्राप्त हो रही हैं। इन सबकी जानकारी समय रहते जन साधरण तक हिंदी भाषा में पहुंचाना राष्ट्रीय विकास को गति प्रदान करना है। इससे हर देशवासी, विशेष रूप से हमारे किसान लाभान्वित होंगे।

अतः इस दृष्टि से भी हमें हिंदी को देखना चाहिए, उस पर विचार करना चाहिए और उसे व्यवहार में लाना चाहिए। 'श्वेत स्वर्णिमा' का प्रकाशन सही अर्थों में इस पावन उद्देश्य की प्राप्ति हेतु हमारा एक लघु प्रयास मात्र है जो निःसंदेह संस्थान में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मन में हिंदी के प्रति जागरूकता एवं कर्तव्य निष्ठा की भावना को बढ़ावा देगा।

हम पत्रिका प्रकाशन के लिए संस्थान के निदेशक डॉ. वाय.जी. प्रसाद के विशेष आभारी हैं, जिन्होंने हमें इस पत्रिका को प्रकाशित करने हेतु प्रोत्साहित किया। इस अंक के प्रकाशनार्थ संस्थान के विभिन्न विभागों एवं अनुभागों में कार्यरत जिन अधिकारियों एवं कर्मचारियों का महत्वपूर्ण योगदान हमें प्राप्त हुआ है, हम उनके हृदय से आभारी हैं। 'श्वेत स्वर्णिमा' पत्रिका के आगामी अंक को और अधिक बहुपयोगी एवं रूचिकर बनाने में आप सभी का सहयोग हमें यथावत् प्राप्त होता रहेगा, इस आशा और विश्वास के साथ।

– डॉ. महेन्द्र कुमार साहू
सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) एवं
संपादक (श्वेत स्वर्णिमा)
भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	कृषि / लोकप्रिय लेख	लेखक	पृष्ठ क्र.
1.	भारतीय कृषि में महिलाओं का योगदान	डॉ. वाय.जी. प्रसाद डॉ. रचना पाण्डे डॉ. महेंद्र कुमार साहू	01
2.	ढींगरी खुम्बी : खेत से बाजार तक	श्रीमती सुनीता चौहान डॉ. एस. एन. रोकडे	04
3.	गुणवत्ता से भरपूर फल मौसम्बी के लाभ और मौसम्बी का अचार	डॉ दीपा लाल डॉ सुनील रोकडे श्रीमति जयश्री खोब्रागडे	07
4.	टमाटर खाने के फायदे और टमाटर के मूल्य वर्धित पदार्थ	डॉ दीपा लाल श्रीमति जयश्री खोब्रागडे डॉ सुनील रोकडे	10
5.	अजीबो गरीब और अद्भुत रेलगाडी	डॉ सुनील नीलकंठ रोकडे	13
6.	मेरी मन की भावनायें	श्रीमती निता काटे	15
	कविता		16
7.	केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान हमारा है	डॉ. बाबासाहेब फंड	16
8.	आजादी का जश्न	श्रीमती रचना देशमुख	17
9.	कितना बड़ा हो गया है तु	श्रीमती चैताली रोडगे	18
10.	घिर घिर आये बदरवा कारे	डॉ. सुनिल रोकड़े	19
11.	माटी के लाल	श्री मयुर कुमार मेश्राम	19
12.	तलाश	श्रीमती पूजा दिनेश सिंह ठाकूर	20
13.	प्रजनन वैज्ञानिक की दरखास्त	डॉ. दिलीप पाटील	21
14.	आदित्य एल–1	डॉ. दिलीप पाटील	22
15.	कपास	श्रीमती के. सुभश्री	22
16.	चंद्रयान – 3	डॉ. दिलीप पाटील	23

क्र.सं.	कृषि / लोकप्रिय लेख	लेखक	पृष्ठ क्र.
	ग़ज़ल		24
17.	डर लगता है	श्रीमती माधुरी राऊलकर	24
18.	हर लम्हे को	श्रीमती माधुरी राऊलकर	24
19.	महल	श्रीमती माधुरी राऊलकर	24
20.	रिश्तों के दर्पण	श्रीमती माधुरी राऊलकर	24
	राजभाषा खंड		25
21.	हिंदी सप्ताह : उदघाटन समारोह रिपोर्ट – 2020		25
22.	हिंदी सप्ताह : समापन समारोह रिपोर्ट – 2020		27
23.	हिंदी सप्ताह : उद्घाटन समारोह रिपोर्ट – 2021		31
24.	हिंदी सप्ताह : समापन समारोह रिपोर्ट – 2021		33
25.	हिंदी सप्ताह : उद्घाटन समारोह रिपोर्ट – 2022		38
26.	हिंदी सप्ताह : समापन समारोह रिपोर्ट – 2022		41
27.	हिंदी सप्ताह : उद्घाटन समारोह रिपोर्ट – 2023		46
28.	हिंदी सप्ताह : समापन समारोह रिपोर्ट – 2023		49
29.	भा.कृ.अनु.प–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबत्तूर में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा समारोह का संक्षिप्त रिपोर्ट		54
30.	भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर द्वारा 'प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग' के कार्मिकों हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 08 जनवरी, 2020) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट		56
31.	भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'प्रशासनिक संवर्ग' के कार्मिकों हेतु आयोजित एक दिवसीय (दिनांक : 30 जून, 2020) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट।		57
32.	भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग' के कार्मिकों हेतु आयोजित एक दिवसीय (दिनांक : 12 सितम्बर, 2020) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट।		59
33.	भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा "सतर्क भारत, समृद्ध भारत" विषय पर आयोजित एक दिवसीय (दिनांक : 27, अक्टूबर, 2020) हिंदी कार्यशाला / व्याख्यान सत्र रिपोर्ट।		60
34.	भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'प्रशासनिक एवं तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 30 मार्च, 2021) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट ।		61
35.	भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'प्रशासनिक एवं तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 26 जून, 2021) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट।		62

क्र.सं.	कृषि / लोकप्रिय लेख	लेखक	पृष्ठ क्र.
36.	भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'प्रशासनिक एवं वैज्ञानिक/तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 08 सितंबर, 2021) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट।		63
37.	भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'प्रशासनिक एवं वैज्ञानिक/तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 30 दिसंबर, 2021) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट।		65
38.	भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'प्रशासनिक एवं वैज्ञानिक/तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 11 मार्च, 2022) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट।		67
39.	भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'प्रशासनिक एवं तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 24 मई, 2022) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट।		68
40.	भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 13 सितंबर, 2022) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट।		69
41.	भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 30 दिसंबर, 2022) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट		71
42.	भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 21 मार्च, 2023) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट ।		73
43.	भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर द्वारा 'प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग' के कार्मिकों हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 18 अप्रैल, 2023) हिंदी कार्यशाला रिपोर्ट।		76
44.	भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'कार्बनिक कृषि : अमृत पोषण' विषय पर आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 20 सितम्बर, 2023) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट ।		78
45.	भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'कपास के परिप्रेक्ष्य मे' विषय पर आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 28 दिसम्बर, 2023) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट		80
46.	भारत सरकार की राजभाषा नीति		81
47.	राजभाषा निर्देशिका		84
48.	महान व्यक्तियों के मौलिक व वैकल्पिक नाम		85
49.	विभिन्न विषयों से सम्बन्धित विज्ञान		86
50.	वैज्ञानिक उपकरण और उनका उपयोग		87
51.	चुटकुले		88

नोट : उपर्युक्त रचनाओं में प्रकाशित विचार रचनाकार के अपने हैं और उनसे सहमत अथवा असहमत होना 'श्वेत स्वर्णिमा संपादक मंडल' के लिये आवश्यक नहीं है।

भारतीय कृषि में महिलाओं का योगदान

– **डॉ. वाय.जी. प्रसाद,** निदेशक
– **डॉ. रचना पाण्डे,** वरिष्ठ वैज्ञानिक
– **डॉ. महेंद्र कुमार साहू,** सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी
भा.कृ.अनु.प. – केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर (महाराष्ट्र)

"विश्व में खेती का सूत्रपात और वैज्ञानिक विकास का प्रारंभ महिलाओं ने ही किया। भूमि, जल, वनस्पति और जीव–जंतुओं जैसे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।"

– डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन (सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक)

'महिलाएँ' राष्ट्र के विकास में पुरुषों के बराबर ही महत्व रखती हैं। हमारे देश में 70 प्रतिशत आबादी आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। 85 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण परिवार अपनी आजीविका के लिए कृषि पर ही निर्भर हैं। आज कृषि में महिलाओं का योगदान 65 से 70 प्रतिशत हैं, परंतु अधिकांश महिलाएं नई तकनीकों को अपनाने और आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों का लाभ उठाने तथा औपचारिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में भाग लेने में असमर्थ हैं। वे अपनी घरेलू जिम्मेदारियों में ही उलझी रहती हैं। भारत के 48 प्रतिशत कृषि से संबंधित रोजगारों में महिलाएं ही कार्यरत हैं, जबकि लगभग 7.5 करोड़ महिलाएं दुग्ध उत्पादन तथा पशुधन व्यवसाय से संबंधित गतिविधियों में सार्थक भूमिका निभाती हैं। आंकड़ों के मुताबिक कृषि उत्पादन में महिलाओं का योगदान 20 से 30 प्रतिशत ही है। एक शोध के अनुसार, भारतीय हिमालय क्षेत्र में, एक हेक्टेअर खेत पर एक वर्ष में बैलों की एक जोड़ी 1064 घंटे, एक आदमी 1212 घंटे और एक महिला 3485 घंटे काम करती है। यह एक ऐसा आंकड़ा है, जो महिलाओं के कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान को दर्शाता है।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने दिनांक : 15 अक्टूबर, 2008 को पहला 'अंतर्राष्ट्रीय ग्रामीण महिला दिवस' (International Day of Rural Women) मनाया था। जिसके बाद से अंतर्राष्ट्रीय ग्रामीण महिला दिवस हर साल मनाया जा रहा है। कृषि क्षेत्र (Agriculture Sector) में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को बढ़ाने के मकसद से वर्ष 2016 में कृषि मंत्रालय ने हर साल 15 अक्टूबर को 'महिला किसान दिवस' (Women's Farmers Day) मनाने का फैसला लिया था। इसका उद्देश्य कृषि विकास, ग्रामीण विकास खाद्य सुरक्षा और ग्रामीण गरीबी उन्मूलन में महिलाओं के महत्व के प्रति लोगों को जागरूक करना है।

भारतीय कृषि के उत्थान में महिलाओं के योगदान का मूल्यांकन हम उनके निम्नलिखित महत्वपूर्ण कृषि कार्यों के आधार पर कर सकते हैं।

डेयरी और पशुपालन में महिलाओं का योगदान : देश के मानव संसाधनों में से महिलाएँ एक ऐसा वर्ग है जो पशुपालन से संबंधित कार्यों, जैसे दूध दूहना, चारा काटना, जानवरों व उनके रहने के स्थानों की सफाई, उपले बनाना और उनको संभालकर रखने आदि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कृषि क्षेत्र की कुल आमदनी में पशुधन का हिस्सा 25 प्रतिशत है। इसके अलावा महिलाएँ दुधारू पशुओं की संख्या के बारे में फैसला करने, चारे की खरीद, नये पशुओं की खरीद–फरोख्त और गर्मी व सर्दी में पशुओं को रखने के स्थान तय करने में भी महत्वपर्ण भूमिका निभाती हैं।

रेशम उत्पादन में महिलाओं का योगदान : भारत में रेशम उत्पादन सबसे महत्वपूर्ण नकदी फसलों में से एक है। अनिवार्य रूप से एक गांव उद्योग पर आधारित है जहां ज्यादातर महिलाएं प्रमुख कार्यकर्ता के रूप में पाई जाती हैं। विश्व स्तर पर एशिया को रेशम का मुख्य उत्पादक माना जाता है क्योंकि यह 95% से भी अधिक रेशम का उत्पादन करता है।

भारत को विश्व में रेशम के दूसरे सबसे बड़े उत्पादक के रूप में स्थान दिया गया है और इसके पास 18% लगभग 28,000 मैट्रिक टन वार्षिक रेशम उत्पादन के साथ वैश्विक कच्चे रेशम उत्पादन में महिलाओं की हिस्सेदारी है। भारत के 6.39 लाख गांवों में से लगभग 69,000 गांवों में रेशम उत्पादन का अभ्यास किया जा रहा है रेशम उत्पादन में कुल कार्य बल की लगभग 60% महिलाओं को शामिल किया गया है।

बागवानी में महिलाओं का योगदान : बागवानी में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। फलों की खेती में वह निराई, सिंचाई, संग्रह, छंटाई और ग्रेडिंग में शामिल होती हैं। जिन कृषि कार्यों में महिलाओं की भागीदारी शत–प्रतिशत होती है उनमे उत्पाद की सफाई कटाई भंडारण जैसी गतिविधियां शामिल हैं। वे मशरूम की खेती, वर्मी–कम्पोस्ट प्रसंस्करण, फूलों की खेती, नर्सरी रखरखाव, टिशू कल्चर, फलों और फूलों के अंकुर उत्पादन और खाद्य प्रसंस्करण के माध्यम से अत्यधिक लाभकारी रोजगार उत्पन्न करती हैं।

वानिकी में महिलाओं का योगदान : ज्यादातर भारतीय ग्रामीण और विशेष तौर पर आदिवासी आबादी जंगलों पर निर्भर करती है। वे फल, नट, जड़ें, कंद, सब्जियां, मशरूम, रस, गोंद, दवाएं, बीज, घरेलू, सामान निर्माण सामग्री, अंडे, शहद, फर, जंगली पत्ते और कृषि उपकरण एकत्र करती हैं। महिलाएं वानिकी और कृषि–वानिकी मूल्य श्रृंखलाओं में विशेष योगदान देती हैं।

इसके अलावा महिलाओं द्वारा इन गतिविधियों से उत्पन्न आय उनके घरों की क्रय शक्ति में महत्वपूर्ण वृद्धि करती है।

ग्रामीण उत्पादन में महिलाओं का योगदान : भारतीय ग्रामीण महिलाएं मजदूरी गैर–कृषि या गैर–कृषि आय सृजन गतिविधियों में लगी हुई हैं। प्रमुख गतिविधियों में उनकी भागीदारी पशुधन छोटे उद्यमों कृषि प्रसंस्करण और घरेलू उद्यानों के माध्यम से होती है। वे टोकरी, झाड़ू, रस्सी और चटाई बनाने रेशम कोकून पालन, बांस के काम, लाख की खेती, तेल निष्कर्षण और पत्ती प्लेट बनाने आदि जैसे छोटे पैमाने के उद्यमों के विकास में महत्पूर्ण भूमिका निभाती है।

प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में महिलाओं का योगदान : भूमि उपयोग और उसके प्रबंधन में महिलाएँ बहुत योगदान देती हैं। वे जानती हैं कि पानी की गुणवत्ता का संरक्षण और रख रखाव कैसे किया जाता है। पहाड़ी क्षेत्रों की महिलाएँ अपने घरों के आस–पास के संसाधनों (पहाड़ी ढ़लान पर सीढ़ीनुमा खेती) को उपयोग में कैसा लाना इससे वह भली भांति परिचित हैं।

मुर्गी पालन में महिलाओं का योगदान : तमाम कृषि–कार्यों में से मुर्गी पालन सबसे अधिक फायदेमंद है क्योंकि इसके प्रति इकाई जमीन से अधिकतम लाभ प्राप्त होता है। इसके अलावा खेती की तरह मुर्गीपालन, वर्षा या सिंचाई पर निर्भर नहीं है, साथ ही इसमें बंजर जमीन का भी उपयोग किया जा सकता है। महिलाएँ मुर्गियों को दाना और पानी देने, अंडे इकट्ठा करने तथा उन्हें बेचने जैसे कार्य बखूबी कर सकती हैं। लेकिन तकनीकी प्रशिक्षण की कमी, नकदी–प्रबंधन में कमजोरी और विपणन सुविधाओं का अभाव इस व्यवसाय में बड़ी बाधाएँ हैं। मुर्गीपालन व्यवसाय से अधिक लाभ कमाने और कृषक परिवारों की आमदानी बढ़ाने के लिए गाँवों और शहरों के बीच संपर्क कायम करना जरूरी हैं। मुर्गी बाड़ों में स्वच्छता का ध्यान रखना भी अत्यंत आवश्यक हैं।

मछली पालन में महिलाओं का योगदान : ग्रामीण महिलाओं के लिए मछली पालन व्यवसाय से आर्थिक स्थिति सुधारने के बड़े अवसर हैं। इसे परम्परागत व्यवसायों के साथ–साथ अपनाया जा सकता है। जब इसे बागवानी या मुर्गीपालन के साथ अपनाया जाता है तो यह बड़ा ही फायदेमंद साबित होता है क्योंकि इससे घर के आसपास ही आर्थिक गतिविधियों का दायरा बढ़ जाता है और महिलाएँ इनमें आसानी से भाग ले सकती है।

खाद्य सुरक्षा में महिलाओं का योगदान : खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। खाद्य श्रृंखला में महिलाओं की भूमिका फसल उगाने तक सीमित नहीं होती, बल्कि वे खाद्य प्रसंस्करण, खाद्य–संरक्षण और भंडारण के लिए भी उत्तरदायी हैं, इन गतिविधियों के माध्यम से वे यह सुनिश्चित करती है कि खाद्य पदार्थ सुरक्षित रहें, उनकी पौष्टिकता बनी रहे तथा वे पूरे साल उपलब्ध रहे। धान कूटकर चावल निकालना, चावल से खीर बनाना, मछली सुखाना और डिब्बाबंदी व संरक्षण के लिए फलों तथा सब्जियों को साफ करके काटना आदि गतिविधियों में महिलाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

अन्य कृषि संबंधित कार्यों में महिलाओं का योगदान : पिछले एक दशक में मशरूम की खेती पढ़ी–लिखी महिलाओं में बड़ी लोकप्रिय हो गयी है। वे इसके वैज्ञानिक तौर–तरीके बड़ी आसानी से सीख जाती है। खेती–बाड़ी की समूची गतिविधियों में महिलाएँ भाग लेती है और उनके पास इसके लिए हुनर और धैर्य भी होता है। निःसंदेह मशरूम की खेती किसी भी विकास कार्यक्रम का आवश्यक अंग बनाया जा सकता है। इसके माध्यम से महिलाओं का सामाजिक आर्थिक स्तर ऊँचा उठाया जा सकता हैं। महिलाएँ जरूरत से ज्यादा पैदा हुए फलों और सब्जियों को संरक्षित करके कमी वाले मौसम में उनका उपयोग कर सकती हैं। जैसे कि वे घरेलू उपयोग के लिए अचार–मुरब्बे आदि बनाती हैं। कृषि से संबंधित जिन अन्य घरेलू कार्यों में महिलाएँ भाग लेती है उनमें खलिहानों की सफाई, अनाज का वर्गीकरण, हिसाब–किताब रखना और कृषि उपकरणों की देखभाल आदि प्रमुख हैं। परिवार को पूरे साल ताजे फल और सब्जियाँ मिलती रहें इसके लिए महिलाएँ ही घर के पास या पानी के स्रोत के पास साग–सब्जी उगाती हैं। अब मधुमक्खी पालन भी कृषक महिलाओं में लोकप्रिय होता जा रहा है।

इस प्रकार हम देखते है कि भारतीय कृषि के उत्थान एवं उससे संबंधित कृषि कार्यों में महिलाएँ महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।

भारतीय महिला किसानों की समस्याएँ

1. भू-स्वामित्व

- महिला किसानों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि जिस भूमि पर वे खेती कर रही हैं, उस पर स्वामित्त्व का दावा करने के मामले में वे शक्तिहीन हैं। कृषि जनगणना 2015 के अनुसार, लगभग 86% महिला किसान इस संपत्ति से शायद इसलिये वंचित हैं क्योंकि हमारे समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था स्थापित है। विशेष रूप से भूमि पर स्वामित्व की कमी महिला किसानों को संस्थागत ऋण के लिये बैंकों से संपर्क करने की अनुमति नहीं देती क्योंकि बैंक आमतौर पर जमीन के आधार पर ही ऋण स्वीकृत करते हैं।

2. भूमि अधिग्रहण

- पिछले वर्षों में भूमि अधिग्रहण दोगुना हो गया है जिसके परिणामस्वरूप खेतों का औसत आकार घट गया है। इसलिये, अधिकांश किसान छोटे और सीमांत वर्ग (एक श्रेणी जो निर्विवाद रूप से महिला किसानों को शामिल करती है) के अंतर्गत आते हैं, इनके पास 2 हे. से कम भूमि होती है।

3. अनुकूल मशीनरी

- महिला किसान और मजदूर आमतौर पर श्रम–केंद्रित कार्य (कुदाल या फावड़े की मदद से गड्ढा खोदना, घास काटना, खरपतवार हटाना, कटाई करना, बेंत का संग्रह, पशुधन की देखभाल) करती हैं।
- विभिन्न कृषि परिचालनों के लिये महिला–अनुकूल उपकरण और मशीनरी रखना महत्त्वपूर्ण है।
- अधिकाँश कृषि मशीनरी ऐसी हैं जिनका संचालन करना महिलाओं के लिये मुश्किल है। इस समस्या के बेहतर समाधान के लिये निर्माताओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

4. संसाधनों तक पहुँच

- अंतिम समस्या यह है कि कृषि को अधिक उत्पादक बनाने के लिये संसाधनों और आधुनिक उपकरणों (बीज, उर्वरक, कीटनाशक) तक महिला किसानों की पहुँच आमतौर पर पुरुषों की तुलना में कम होती है।

समाधान

- कृषि और ग्रामीण विकास के लिये नेशनल बैंक के माइक्रो–फाइनेंस पहल के तहत किसी आनुषांगिक के बिना ही दिये जाने वाले ऋण प्रावधान को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। क्रेडिट, प्रौद्योगिकी और उद्यमशीलता क्षमताओं के प्रावधान तक बेहतर पहुँच महिलाओं के आत्मविश्वास को और बढ़ावा देगी और उन्हें किसानों के रूप में मान्यता प्राप्त करने में मदद करेगी।
- महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिये सामूहिक खेती की संभावना को प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- इन्हें किसान निर्माता संगठनों के माध्यम से और अधिक विकसित किया जा सकता है। इसके अलावा, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, बीज और रोपण सामग्री पर उप–मिशन तथा राष्ट्रीय कृषि विकास योजना जैसी सरकारी प्रमुख योजनाओं में महिला केंद्रित रणनीतियों और समर्पित व्यय को शामिल किया जाना चाहिये।
- महिला किसानों को सब्सिडी वाली सेवाएँ प्रदान करने के लिये राज्य सरकारों द्वारा प्रचारित कृषि मशीनरी बैंक और कस्टम भर्ती केंद्रों को तैयार किया जा सकता है।
- प्रत्येक जिले में कृषि विज्ञान केंद्रों को विस्तार सेवाओं के साथ–साथ अभिनव प्रौद्योगिकी के बारे में महिला किसानों को शिक्षित और प्रशिक्षित करने का एक अतिरिक्त कार्य सौंपा जा सकता है।

  इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि सदियों से महिलाएँ घोर उपेक्षा और भेदभाव का शिकार रही हैं। फिर भी उन्होंने जीवन के सभी क्षेत्रों में शानदार योगदान दिया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि कृषि के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी का स्वरूप और परिमाण अलग क्षेत्रों में अलग–अलग है। किसी एक क्षेत्र में भी उनका योगदान पारिस्थितिकीय उप–क्षेत्रों, कृषि प्रणालियों, जातियों, वर्गों और परिवार चक्र के स्तरों के अनुसार बदलता रहता है। मगर इन सब भिन्नताओं के बावजूद, खेती–बाड़ी के काम में जुताई को छोड़कर और ऐसा कोई कार्य नहीं है जिसमें महिलाएँ सक्रिय रूप से भागीदार नहीं होती। कुछ कार्यों, जैसे प्रसंस्करण और भण्डारण में तो महिलाएँ ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, इस कारण इसमें पुरुषों की संख्या नगण्य है।

विकासशील देशों, खास तौर पर भारत में कृषि आर्थिक विकास का आधार है, इसलिए महिलाओं और पुरुषों दोनों की भूमिकाओं की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। महिलाओं की पूरी भागीदारी के रास्ते की तमाम बाधाओं को दूर किया जाना चाहिए, ताकि सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन के सभी क्षेत्रों में वे बराबरी की भागीदार बन सकें। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के समग्र विकास के लिए भारत में कृषि के विकास और खेती में महिलाओं की भागीदारी के बीच तालमेल बनाना आज समय की माँग है।

आशा उत्साह की जननी है। आशा में तेज है, बल है, जीवन है। आशा ही संसार की संचालक शक्ति है।

– प्रेमचंद

ढींगरी खुम्बी : खेत से बाजार तक

श्रीमती सुनीता चौहान, विषय विशेषज्ञ
डॉ. एस.एन. रोकडे, पूर्व प्रमुख
कृषि विज्ञान केन्द्र, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान,
पांजरी फार्म, वर्धा रोड, नागपुर

विगत कुछ वर्षों से कृषि चुनौतीपूर्ण और खर्चिला बन चुका है। अतः उत्तम उदरनिर्वाह के लिए देश के छोटे, मंझोले किसानों, ग्रामीण महिलाओं, बेरोजगार युवकों और कृषि मजदूर आदि के लिए रोजगार तथा अतिरिक्त आय का साधन ढूँढकर बताना और प्रशिक्षित करना आवश्यक हो गया है। ढींगरी खुम्बी उत्पादन एक ऐसा ही उत्तम पूरक व्यवसाय है जो किसान अपने घर/खेत में कर सकता है। यह व्यवसाय गाँव से हो रहे पलायन को थामने की क्षमता रखता है। इसके लिए जरूरी प्रशिक्षण तथा जानकारी हर जिले में मौजूद कृषि विज्ञान केंद्र में मिलती है।

खुम्बी (मशरूम) का इतिहास मानव सभ्यता से आदिकाल से जुड़ा हुआ है, वेदों व बाईबल मे इसका वर्णन मिलता है। यह विभिन्न नामों से जैसे छत्रक, खुम्बी, कुक्कुरमुत्ता व भूमि कवक आदि से जाना जाता है। भारत में इस खुम्बी का प्रयोग सब्जी के रूप में किया जाता है। प्लुरोटस की प्रजातियों को सामान्यतयाः ढींगरी खुम्ब कहते है। खुम्बी की प्रजातियां भारत मे उगाई जाती है। इनमें से प्लुरोटस सजोरकाजू, प्लुरोटस फ्लोरिडा, प्लुरोटस ऑस्ट्रिएटस, प्लुरोटस फ्लेबेलेटस, तथा प्लुरोटस सिट्रोनोपिलेटस आदि प्रमुख प्रजातियां है। अन्य खुम्बियों की तुलना में सरलता से उगाई जाने वाली ढींगरी खुम्ब खुम्बी है। जो खाने में स्वादिष्ट, सुगन्धित, मुलायम तथा पोषक तत्वों से भरपूर होती है। इसमे वसा तथा शर्करा नगण्य होने के कारण यह मोटापे, मधुमेह तथा रक्तचाप से पीडित व्यक्तियों के लिए आदर्श आहार है। मशरूम एकमात्र ऐसा खाद्य है जिसके सेवन से सभी प्रकार के पौष्टिक तत्व शरीर में पहुंचते है जिससे कुपोषण को हटाया जा सकता है।

ढींगरी खुम्बी के पोषकतत्व प्रति 100 ग्राम

खुम्ब अपने उच्चस्तरीय खाद्य मूल्यों के कारण ही संपूर्ण विश्व में अपना विशेष महत्व रखता है। ढींगरी खुम्बी में उर्जा (kcal/100 g) 33, प्रोटीन 3.31, फोलिक एसिड 1.33, नमी 89. 18, काफी मात्रा में विटामिन तथा खनिज द्रव्य होते है। फोलिक एसिड का रक्तालपता (एनीमिया) को दूर करने में अपना चिकित्सीय महत्व है। इसके अतिरिक्त इसमें कई और चमत्कारी गुण पाए जाते है। इनमें कार्बोहाइड्रेट्स की मात्रा कम पाई जाती है। जो कि वजन घटाने में महत्वपूर्ण है। यह विश्व में उगाये जाने वाले मशरूमों में तीसरा प्रमुख मशरूम है तथा भारत में इसका दूसरा स्थान है। इस मशरूम को खाने से शरीर में ग्लूकोज सहन करने की क्षमता बढ़ती है जिससे मधुमेह रोगियों के उपचार में अत्यन्त लाभकारी पाया गया है। जल में घुलनशील कार्बोहाइड्रेट की उपस्थिति के कारण इसमें कैंसर रोधी गुण पाये जाते है साथ ही उत्सर्जन तंत्र संबंधी रोगों एवं कोलेस्ट्राल को कम करने में भी सहायक है।

ग्रामीण महिलाओं को खुम्बी की खेती करनी चाहिए, क्योंकि इस अंशकालिक गतिविधि के साथ–साथ वे घरेलू कार्यों की भी देखभाल कर सकती है। जरूरी साज सामान तथा कुशलता के अनुसार यह तकनीक उनकी पहुँच के अंदर है तथा इससे उन्हें अपने श्रम का उचित मूल्य मिल सकता है।

सन 2005–2006 में स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना के अंतर्गत कई उद्योग धंधे मुख्यतः महिलाओं के लिए शामिल किए गए हैं। उसमें खुम्बी उत्पादन उद्योग की और नागपुर तहसील के परसोडी गांव की महिलाओं ने बचत गट बनाकर यह उद्योग आरंभ किया और उन्होंने खुम्बी बाजार में बेची जिससे ग्रामीण लोगों के दैनिक भोजन में खुम्बी को स्थान मिलने लगा है। जिससे कुपोषण पर प्रभावी तरीके से रोक लगाने में खरा उतरा है।

ढींगरी मशरूम उगाने का सही समय

दक्षिण भारत तथा तटवर्ती क्षेत्रों में सर्दी का मौसम विशेष उपयुक्त है। उत्तर भारत में ढींगरी खुम्बी उगाने का उपयुक्त समय अक्तूबर से मध्य अप्रैल के महीने है। ढींगरी खुम्बी की



फसल के लिए 25 से 28 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान तथा 70–80% आर्द्रता बहुत उपयुक्त होती है। ठंडे क्षेत्र में उपलब्ध प्रजातियों को समय–समय पर पूरा साल बिना वातावरण को नियंत्रित किए वर्ष भर लगा कर किसान अतिरिक्त आयुपर्जन कर सकते है। यह खुम्बी सोयाबीन, ज्वार, गेहूं, कपास के भूसे तथा अन्य कृषि अपशिष्टों पर उगाया जाता है। इसे छप्पर वाली झोपड़ियों/कच्चे/पक्के घरों में, बड़े पेड़ों के नीचे शीत कक्ष (अल्पखर्ची) बना कर उगाया जा सकता है।

ढींगरी खुम्बी के बॅड को किटाणु रहित करना

रासायनिक पध्दति : गेहूं, सोयाबीन, चना, ज्वार, कपास की फसल की कटाई के बाद सूखे पराल/डंठलों को 4–5 सेंटीमीटर के छोटे–छोटे टुकड़ों में काटा जाता है। कोई भी कृषि उपशिष्ट एक वर्ष से अधिक पुराना नहीं होना चाहिए। कटे हुए टुकड़ों को एक बोरे में बंद कर 12–14 घंटे तक 100 लीटर पानी में 100 मिली. फार्मेलिन मिलाकर डुबाया जाता है तथा उसके पश्चात पानी निकाल दिया जाता है। 4–5 घंटे छांव में पानी निकलने के लिये रख दिया जाता है। इन गीले डंठलों को पॉलीथीन के थैलों में 2 प्रतिशत कवक जाल तथा 1 प्रतिशत बेसन का इस्तेमाल कर 4 परतों में भर दिया जाता है। उचित वायु मिश्रण के लिए थैलों में छेद कर दिए जाते है। यह खुम्ब 25 दिनों में तैयार हो जाती है। इस तरीके की ढींगरी खुम्ब उत्पादन कम लागत की वजह से कृषक, महिलाओं और युवकों में उत्पादन हेतु बहुत प्रसिध्द है। सन 2021 में कृषि विज्ञान केंद्र, भा,कृ.अनु.प., नागपुर के एकीकृत खेती प्रणाली में 123 किसानों को खुम्ब उत्पादन का कौशल्य सिखाकर प्रशिक्षित किया गया।





निदेशक महोदय का अवलोकन

भाप पध्दति से : कटे पराल को बोरियों में भरकर साफ पानी में 10–12 घंटों के लिए भिगो दिया जाता है। इस भीगे हुए पराल को 70–75 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान वाले पानी में तकरीबन दो घंटे रखा जाता है या इसे इतनी देर पानी की भाप भी दी जा सकती है। इस तरह तैयार पराल को ठंडा करने के बाद इस में बीज मिलाया जाता है। ढींगरी का स्पान/बीज शीशे की बोतल या प्लास्टिक की छोटी थैलियों में मिलता है या आर्डर पर बनवाया जा सकता है। ढींगरी की खेती पॉलीथीन की थैलियों (13 x 22 इंच) में की जाती है। इन थैलियों मे 6 इंच की दूरी पर आधा–आधा सेंटीमीटर के छेद कर दिये जाते हैं। इस प्रकार का खुम्ब उत्पादन किसानों की नजर में उत्तम, सफल एवं खर्चिला है। यह खुम्ब भी 25 दिनों में तैयार हो जाती है।

फसल : सफेद धागों जैसी संरचना कवक जाल (स्पॉन) सबस्ट्रेट को फैलता है तथा लगभग 15 दिनों में यह ठोस भूसे का आबध्द भार बन जाता है। इसके पश्चात् पॉलीथीन बैग को हटा दिया जाता है तथा इन बैग्स को अच्छी हवा वाले कमरे में रखा जाता है। इस कमरे की 70–80 प्रतिशत आर्द्रता बनाए रखने के लिए फर्श/जमीन तथा दीवारों पर दिन में दो तीन बार पानी से गिला किया जाता है। जिससे कि इसका तापमान 27–28 डिग्री सेल्सियस बना रहता है। लगभग 5–7 दिनों में दूसरी फसल 7 से 10 दिनों के बीच निकल जाती है। चार–पांच सप्ताहों के अंतर्गत तीन या चार फसलें उगती है। उसके पश्चात् इन बैग्स में खुम्भी उत्पन्न करने की क्षमता नष्ट हो जाती है। तब उन्हें और अपघटित किए बगैर कार्बनिक खाद के रूप में खेतों में इस्तेमाल किया जा सकता है तथा पशुओं के लिए यह एक अमूल्य चारा है। कवक जाल (स्पॉन) धींगरी किस्म के खुम्बी के लिए कवक जाल गेहूं, ज्वार, बाजरा आदि से बड़ी सरलता से तैयार किया जा सकता है। (फोटो) सबस्ट्रेट युक्त यानी कृषि अपशिष्टों से भरी पॉलीप्रोलिन बैग्स अथवा कांच की बोतलों को डेढ़ घंटे के लिए 15 पौंड प्रति वर्ग इंच दबाव पर विसंक्रमित किया जाता है तथा ठंड़ा होने दिया जाता है। विसंक्रमित बोतलों को ढींगरी खुम्बी के (प्लूरोटस साजर काजू) शुध्द जीवाणु समूह के साथ संचारित किया जाता है। तथा 10–15 दिनों के लिए 25 डिग्री सेल्सियस पर उष्मित किया जाता है। इस अवधि में सफेद कवक जाला अधः सतह पर फैल जाता है। खुम्बी उत्पादन व्यवसाय की सफलता के लिए शुध्द जीवाणु समूह युक्त कवक जाल होना जरूरी है। ढींगरी खुम्बी के दोषयुक्त कवक जाल आर्डर अनुसार राजकीय विश्वविद्यालय प्रयोगशालाओं और एंजेसियों द्वारा भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं।



सफेद कवक जाल का विकास



भूसे पर सफेद कवक जाल का विकास

कुछ आवश्यक सुझाव

ढींगरी उत्पादन के लिए कमरा स्वच्छ एवं हवादार होना चाहिए। ढींगरी के गट्ठों पर पानी देते समय इस बात का ध्यान रखें कि पानी की मात्रा ज्यादा भी न हो और इतनी कम भी न हो कि गट्ठों में सुखापन आ जाये। कमरे की नमी एवं आर्द्रता हमेशा नियंत्रित रहनी चाहिए।

फसल कटाई : तैयार फलकाय की फसल कटाई में उन्हें इस प्रकार मोडकर तोड़ना चाहिए जिससे खुम्बी के टूटे हूए टुकड़े स्ट्रॉबॉल्स पर न रह सकें तथा आसपास के खुम्बी को भी हानि न पहूंचे। फसल कटाई के पश्चात् तेज चाकू की सहायता से डंठल के कचरा लगे भाग हो काट देना चाहिए (फोटो)।

विपणन : ताजे खुम्बी को पॉलिथीन के छिद्रित थैलों में भरकर ढींगरी नाम से बाजार में बिक्री के लिए भेज दिया जाता है (फोटो)। हालांकि ढींगरी खुम्बी यह बटन खुम्बी से कम लोकप्रिय है पर पहले की अपेक्षा दो–चार वर्षों से ढींगरी खुम्बी बाजार में लोकप्रिय होती जा रही है। ज्यादा पैमाने में ढींगरी खुम्बी का उत्पादन लाने वाले को इसे बाजर में बेचने में कठिनाई होती है क्योंकि जनसामान्य अभी इस खुम्ब की किस्म से परिचित नहीं है। इस खुम्बी को लोकप्रिय बनाने की आवश्यकता है। खुम्बी उत्पादक अपने खुम्बी सुपर मार्केट, बडे सब्जी व फल विक्रेताओं, प्रोविजन स्टोर, डायटिशियन से संपर्क साधकर सीधे उपभोक्ताओं को यह बेच सकते है तथा उस लाभ को बचा सकते है जो सब्जी तथा फलों के एजेंट ले जाते हैं।

इस खुम्बी को धूप में या 50 डिग्री से 55 डिग्री सेल्सियस के यांत्रिक कक्ष (ब्यूदाकित्र) में सुखाया जा सकता है। सूखे हुए खुम्बी का बारीक चूरा बनाया जा सकता है तथा इसे सूप बनाने व अन्य भोजन सामग्री में इस्तेमाल किया जा सकता है। आर्थिक दृष्टिकोण से ढींगरी की खेती अच्छी आमदनी वाली है।

धैर्य दर्द से भरा है, किन्तु उसका फल मधुर होता है।

– रामकृष्ण परमहंस

रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय। तोडें से फिर ना जुड़ै, जुड़ै गाँठ पड़ी जाय।।

– रहीम

थोड़ी बहुत मुहब्बत से काम नहीं चलता ऐ दोस्त, ये वो मामला है जिसमें या सब कुछ या कुछ भी नहीं।

– फिराक गोरखपुरी

गुणवत्ता से भरपूर फल मौसम्बी के लाभ और मौसम्बी का अचार

डॉ. दीपा लाल, विषय विशेषज्ञ
डॉ. सुनील रोकड़े, पुर्व प्रमुख, केविके
श्रीमती जयश्री खोब्रागड़े, एसआरएफ
कृषि विज्ञान केन्द्र, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान,
पांजरी फार्म, वर्धा रोड, नागपुर

मौसम्बी के नाम से मशहूर मौसम्बी फल कई फायदेमंद पोषक तत्वों से भरपूर होता है। मौसम्बी आपके स्वास्थ्य को कई तरह से लाभ पहुंचाता है, जिसका श्रेय इसमें मौजूद पोषक तत्वों को दिया जा सकता है। यह दक्षिण पूर्व एशिया के सबसे लोकप्रिय फलों में से एक है। इन फलों का आकार गोल और त्वचा हरे रंग की होती है। पकने के बाद ये पीला हो जाता हैं। मौसम्बी का पेड़ आमतौर पर 5–7 साल बाद फल देना प्रारम्भ करता है। उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु उनके विकास के लिए उपयुक्त हैं और अधिकतम उपज लगभग 10–20 वर्षों में प्राप्त होती है।





मौसम्बी को आमतौर पर भूमध्यसागरीय मीठा नींबू, फारसी चूना और मीठा चूना के रूप में जाना जाता है। हिंदी में इसे मौसम्बी और मुसंबी, गुजराती में मौसम्बी, मलयालम में मधुरा नरंगा, तमिल में साथुकुड़ी और तेलुगु में बट्टायी पांडु के नाम से जाना जाता है। यह फल दिखने में नींबू जैसा होता है और इसका स्वाद मीठा होता है जिसकी तुलना संतरे से की जा सकती है। इसका जूस भारत और पाकिस्तान में बहुत प्रसिद्ध है। सिंट्रस परिवार से संबंधित होने के बावजूद, यह फल अम्लीय नहीं है। इसलिए, इस फल का सेवन ज्यादातर रस के रूप में किया जाता है न कि पूरे फल के रूप में क्योंकि इसका स्वाद हल्का हो सकता है। जुलाई से अगस्त और नवंबर से मार्च ऐसे महीने हैं जिनमें यह फल भारत में व्यापक रूप से उपलब्ध होता है।

मौसम्बी फल के लाभ

इस एक फल में लगभग 43 कैलोरी और 0.3 ग्राम वसा होती है। मौसम्बी 9.3 मिलीग्राम कार्बोहाइड्रेट और 0.8 ग्राम प्रोटीन प्रदान करता है।

1. पाचन में मदद करता है :

मौसम्बी पाचन में मदद करता है। इसमें फ्लेवोनोइड्स की एक उच्च सामग्री होती है जो पाचन रस, एसिड और पित्त के स्राव को बढ़ाकर पाचन तंत्र को उत्तेजित करती है। इसलिए अपच, अनियमित मल त्याग और अन्य गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल समस्याओं से पीड़ित लोगों को अक्सर मौसम्बी के रस की सलाह दी जाती है। इस प्रकार यह पेट द्वारा उत्पादित अम्लीय पाचक रसों को निष्क्रिय करके पाचन में सहायता करता है और उत्सर्जन प्रणाली से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालता है। इस फल में पाए जाने वाले यौगिक क्रमाकुंचन गति के लिए लाभकारी होते हैं। मौसम्बी दस्त, मतली और उल्टी को नियंत्रित करने में भी मदद करता है।

2. कब्ज से राहत दिलाता है :

मौसम्बी में मौजूद एसिड आंत्र पथ से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालता है। इसके अलावा फल में आहार फाइबर होता है जो कब्ज से पीड़ित लोगों के लिए उपचार के रूप में कार्य करने में सक्षम बनाता है।

3. स्कर्वी को रोकता है :

स्कर्वी विटामिन 'सी' की कमी से होने वाला रोग है। इस रोग में रक्तस्राव, मसूढ़ों में सूजन, बार–बार फ्लू और सर्दी, मुंह और जीभ में छाले और होंठों के कोनों में दरार आना शामिल है। मौसम्बी स्कर्वी को रोक सकते हैं। मौसम्बी के रस में शुद्ध पानी की कुछ बूंदें मिलाएं और मिश्रण में एक चुटकी काला नमक मिलाएं। इस मिश्रण को मसूड़ों से खून बहने से तुरंत राहत के लिए प्रभावित मसूड़ों पर लगाना चाहिए।

4. पेप्टिक अल्सर :

मौसम्बी में मौजूद फ्लेवोनोइड्स जैसे लिमोनिन ग्लूकोसाइड में एंटी–कार्सिनोजेनिक, एंटीऑक्सिडेंट, डिटॉक्सिफाइंग और एंटीबायोटिक गुण होते हैं जो मौखिक और पेप्टिक अल्सर को ठीक करने में बहुत प्रभावी होते हैं।

5. श्वसन संबंधी समस्याएं :

मौसम्बी के तेल के अर्क में एंटी–कंजेस्टिव गुण होते हैं जो साफ करते हैं और श्वसन संबंधी विभिन्न समस्याओं को दूर रखते हैं।

6. प्रतिरक्षा प्रणाली में सुधार करता है :

मौसम्बी जूस के नियमित सेवन से हृदय की संपूर्ण कार्यप्रणाली में सुधार होता है। इस प्रकार यह उचित रक्त परिसंचरण सुनिश्चित करता है और अधिक स्वस्थ प्रतिरक्षा प्रणाली में योगदान देता है। साथ ही, विटामिन 'सी' प्रतिरक्षा के स्तर को बढ़ाता है और सर्दी से बचाता है।

7. कैंसर रोधी गुण :

मौसम्बी में कैंसर रोधी गुण होते हैं। मौसम्बी में मौजूद लिमोनोइड विभिन्न प्रकार के कैंसर से लड़ने में मदद करते हैं। लिमोनोइड ग्लूकोज नामक एक चीनी अणु से जुड़े होते हैं, जो आसानी से पच जाते हैं।

8. हृदय रोग मे लाभ :

मौसम्बी विटामिन 'सी' से भरपूर होता है, जो प्रति फल 50 मिलीग्राम विटामिन 'सी' प्रदान करता है। विटामिन 'सी' हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने मे, खून की नलिकाओं में जमा खराब कॉलेस्ट्रोल को कम करने में और हृदय रोग में लाभदायक होता है। यह खाली पेट सेवन करने से पेट में जमा चर्बी कम करने में सहायक होता है।

ज्यादातर मौसम्बी के फल पकने के बाद ही उपयोग में लाये जाते है लेकिन कृषि विज्ञान केंद्र, केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान के उद्यानिकी विभाग में पहली बार एक नया प्रयोग किया गया जिसमे मौसम्बी के कच्चे फल का अचार बनाया गया।

मौसम्बी का अचार

अचार का अर्थ क्या है ?

अचार का अर्थ है फलों, सब्जियों या मशरूम से तैयार या अन्य खाद्य पौधों की सामग्री से तैयार किया जाना, जो कीट क्षति या कवक संक्रमण से मुक्त है, अकेले या संयोजन में नमक, एसिड, चीनी या तीनों में से किसी एक के संयोजन में संरक्षित है। अचार में प्याज, लहसुन, अदरक, चीनी गुड़, खाद्य वनस्पति तेल, हरी या लाल मिर्च, मसाले, मसाले के अर्क/तेल, नींबू का रस, सिरका/एसिटिक एसिड, सीट्रस एसिड का इस्तेमाल किया जा सकता है।

सामग्री :

चीनी	– 1 से 1.5 किलो
बड़े आकार का मोसम्बी	– 10
नमक	– 5 से 6 चम्मच
मेथी	– ½ चम्मच
जीरा	– 2 चम्मच
साबुत धनिया	– 4 चम्मच
लाल मिर्च पाउडर	– 1 बड़ा चम्मच
हल्दी पाउडर	– ½ छोटा चम्मच
सरसों के बीज	– ½ चम्मच
कश्मीरी लाल मिर्च पाउडर	– 3 टेबल स्पून
सूखी मिर्च	– 5

फल की तैयारी

मोसम्बी को धोकर थपथपा कर सूखा लीजिये और एक बड़े बर्तन में 5 कप पानी लें और उबाल लें। उबाल आने के बाद 10 मौसम्बी को उसमें गिरा दें। कवर करें और 10 मिनट के लिए आराम दें या जब तक मौसम्बी नरम न हो जाए।

अब पानी से मौसम्बी निकाल लें और सूखा लें। सुनिश्चित करें कि मौसम्बी में कोई नमी न हो। 8 टुकड़ों में काटें और एक तरफ रखें। अधिकांश फलों को छोटे टुकड़ों में काटा जाता है। नमक और चीनी मिलाने के बाद इसे एक सूखे बर्तन में रख दें।

तरीका :

मेथी को सूखा भून कर महीन चूर्ण बना लें। एक कड़ाही लें, उसमें 2 चमच का तेल डालें, गर्म होने पर सरसों, कटी हुई सूखी मिर्च डालें।

जब सरसों चटकने लगे तो गैस बंद कर दें। अब मेथी पाउडर, लाल मिर्च पाउडर, हल्दी पाउडर, जीरा पाउडर, धनिया पाउडर और हींग डालें। कटी हुई मौसम्बी डालें और अच्छी तरह मिलाएँ। कश्मीरी लाल मिर्च पाउडर डालें। अच्छी तरह से मिलाएं और सुनिश्चित करें कि सब कुछ अच्छी तरह से संयुक्त है।

अब तेल को गर्म करें और उसमें 1 टीस्पून सरसों और 1 टीस्पून हिंग डालें। तड़के को फूटने दें और तेल को पूरी तरह से ठंडा होने दें। एक बार जब तेल पूरी तरह से ठंडा हो जाए तो अचार के ऊपर डालें और अच्छी तरह मिलाएँ। मौसम्बी का आचार का आनंद लें या फ्रिज में स्टोर करें और 2 सप्ताह तक उपयोग करें।






1. विषय विशेषज्ञ (उद्यानिकी)
2. प्रधान वैज्ञानिक तथा अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र, भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर, महाराष्ट्र
3. वरीष्ठ शोध सहकारी (आर्या परियोजना)

कबिरा यह घर प्रेम का, खाला का घर नांहि, सीस उतारै हाथि करि, सौ पैसे मांहि।

– कबीर

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय, ढाई आखर प्रेम का पढ़ै सो पंडित होय।

– कबीर

इस अर्पण में कुछ और नहीं केवल उत्सर्ग छलकता है, मैं दे दूँ और फिर कुछ लूँ, इतना ही सरल झलकता है।

– जयशंकर प्रसाद

नयनों ने उर को कब देखा, हृदय न जाना दृग का लेखा, आग एक में और, दूसरा सागर ढुलकाता है। धुला यह वह निखरा आता है।

– महादेवी वर्मा

रति का क्रंदन सुन आँसू से तुमने ही तो दृग धोए थे।कालिदास सच–सच बतलाना रति रोई या तुम रोए थे।

– नागार्जुन

प्यार में गुजर गया जो पल वह पूरी एक सदी से कम नहीं है, जो विदा के क्षण नयन से छलका अश्रु वो नदी से कम नहीं।

– नीरज

खुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी वाकी धार। जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार।

– खुसरो

इश्क पर जोर नहीं, है ये वो आतिश गालिब, कि लगाए न लगे और बुझाए न बने।

– गालिब

टमाटर खाने के फायदे और टमाटर के मूल्य वर्धित पदार्थ

डॉ. दीपा लाल, विषय विशेषज्ञ
श्रीमती जयश्री खोब्रागड़े, एसआरएफ
डॉ सुनील रोकड़े, पुर्व प्रमुख, केविके
कृषि विज्ञान केन्द्र, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान,
पांजरी फार्म, वर्धा रोड, नागपुर

टमाटर अमेरिका का मूल निवासी फल है। इसका स्वाद थोड़ा खट्टा होने से खाने को बहुत बढ़िया स्वाद प्राप्त होता है अतः इसका हमारे देश के आहार में सलाद के रूप में तथा खाना बनाने में टमाटर का उपयोग विभिन्न व्यंजनों जैसे सब्जियों, सूप, सलाद, केचप में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। चाहे वह फ्रेंच फ्राइज़ हो, आलू के चिप्स हो या वेजी बर्गर, पिज़्ज़ा टोमैटो सॉस के बिना पूरा नहीं लगता। टमाटर की चटनी के बिना बच्चों को कोई भी नाश्ता पसंद नहीं आता।

टमाटर का पोषण मूल्य

टमाटर में आयरन, फास्फोरस, विटामिन 'ए' और विटामिन 'सी' अधिक मात्रा में पाया जाता है। टमाटर में लाइकोपीन नाम का पदार्थ होता है ।

टमाटर में बहुत सारे पोषक तत्व पाए जाते हैं जो हमारी सेहत के लिए फायदेमंद हो सकते हैं और इसे कई बीमारियों का जोखिम कम करने के लिए जाना जाता है। नियमित रूप से टमाटर का सेवन करने वाले लोगों को अलग–अलग तरीकों से फायदा मिल सकता है।

टमाटर के सेवन से प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत बनती है और, एंटीऑक्सिडेंट्स शामिल करता है जो कैंसर से लडते हैं। हड्डियां मजबूत बनाता है और ऑस्टियोपोरोसिस से लड़ता है, पाचन अच्छा बनाता है, रक्तचाप नियंत्रित करने में मदद करता है, त्वचा और बालों को बेहतर बनाता है, खराब कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करता है हालाँकि, किसी भी दूसरे आहार की तरह टमाटर को भी उचित मात्रा में और एक संतुलित आहार के हिस्से के रूप में ही ग्रहण किया जाना चाहिए।

यू.एस.डी.ए. के अनुसार, 100 ग्राम कच्चे टमाटर में निम्न शामिल हैं (अन्य पोषक तत्वों के अलावा) : पानी : 94.52 ग्राम, ऊर्जा : 18 किलो कैलोरी, प्रोटीन : 0.88, कुल लिपिड (वसा) : 0.2 ग्राम, कार्बोहाइड्रेट : 3.89 ग्राम, शुगर (कुल) : 2.63 ग्राम, फाइबर (कुल) : 1.2 ग्राम, कैल्शियम : 1.0 मिग्रा, मैगनीशियम : 11 मिग्रा, पोटैशियम : 237 मिग्रा, सोडियम 5 मिग्रा, आयरन : 0.27 मिग्रा फॉस्फोरस : 24 मिग्रा, विटामिन E (अल्फा–टोकोफेरॉल): 0.54 मिग्रा, विटामिन C (कुल एस्कॉर्बिक एसिड) : 13.7 मिग्रा, विटामिन B–6 : 0.08 मिग्रा, राइबोफ्लेविन : 0.019 मिग्रा

टमाटर में पोटैशियम, विटामिन C, कॉम्प्लेक्स – बी के विटामिन और कोलीन जैसे कई पदार्थ पाए जाते हैं जो हृदय के लिए फायदेमंद होते हैं। अध्ययनों से साबित हुआ है कि सोडियम के सेवन में कमी के साथ पोटैशियम का सेवन बढ़ाने पर हमारे हृदय का स्वास्थ्य अच्छा हो सकता है। खास तौर पर टमाटर में मिलने वाले पोटैशियम और विटामिन B का सेवन करने से रक्तचाप और कोलेस्ट्रॉल भी कम हो सकता है।

टमाटर के स्वास्थ्य लाभ

- उच्च रक्तचाप, उच्च कोलेस्ट्रॉल, हृदय रोग, मधुमेह से पीड़ित लोगों को अपने आहार में टमाटर को शामिल करना चाहिए।
- वजन कम करने के लिए अपने आहार में नियमित रूप से टमाटर का सेवन करें। टमाटर खाने से पेट भरा हुआ महसूस होता है, वजन कम करने में मदद मिलती है क्योंकि इनमें कैलोरी कम होती है।
- टमाटर विटामिन 'ए' से भरपूर होने के कारण दृष्टि विकारों के लिए भी फायदेमंद होते हैं।
- एनीमिया यानी खून की कमी से पीड़ित मरीजों को रोजाना 2 टमाटर नियमित रूप से खाने चाहिए। इससे रक्त में हेमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ जाती है।
- कब्ज की समस्या के लिए टमाटर का नियमित सेवन करना चाहिए।
- पके टमाटर का रस बच्चों को पिलाने से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है।
- टमाटर मधुमेह रोगियों हृदय रोगियों के लिए अच्छा माना जाता है। टमाटर में लाइकोपीन नाम का पदार्थ होता है जो कैंसर समेत कई अन्य बीमारियों से बचाता है। वैसे तो टमाटर सेहत के लिए फायदेमंद होता है लेकिन किडनी स्टोन, गठिया, एसिडिटी से पीड़ित मरीजों को टमाटर खाने से बचना चाहिए।

भारत चीन के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा टमाटर उत्पादक देश है। नेशनल हॉर्टिकल्चर रिसर्च एंड डेवलपमेंट फाउंडेशन के आंकड़ों के मुताबिक भारत में एक साल में करीब 7.

79 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में करीब 1 करोड़ 975 लाख टन टमाटर उगाए जाते हैं। भारत में हर साल औसतन 25.05 टन प्रति हेक्टेयर टमाटर की फसल काटी जाती है। इसका 25 प्रतिशत कच्चे रूप में यानि सलाद के रूप में और खाना पकाने में भी प्रयोग किया जाता है। चूंकि टमाटर एक जल्दी खराब होने वाली सब्जी है। उसका इस्तेमाल जल्दी से जल्दी किया जाना चाहिये। लेकिन ऐसा संभव नहीं होता। क्योंकि हर गांव में उत्पादित सारे कच्चे टमाटर का विपणन होना संभव नही होता। इसके कारण टमाटर के कुल उत्पादन का 10–12 प्रतिशत हर साल बर्बाद हो जाता है। इससे किसानों को लाखों रुपए का आर्थिक नुकसान होता है। इससे बचने के लिए अगर टमाटर का प्रसंस्करण कर उसका रुपांतरण सॉस, केचप, प्यूरी, पाउडर और अन्य मूल्य वर्धित सामग्री में तब्दील करके बेचा जाये तो किसानों को अधिक वित्तीय लाभ मिलता है। उदाहरण के लिए बाजार में एक किलो टमाटर 20 रुपये प्रति किलो की दर से बेचा जाता है इस हिसाब से चार किलो टमाटर का मूल्य 80 रुपये होता है और इससे एक किलो मूल्य वर्धित उत्पाद सॉस या केचप, सूप, में बदल दिया जाता है, तो यह 200 रुपये प्रति किलो मिलता है जिसका मतलब आर्थिक लाभ दोगुना है। अतः टमाटर कच्चे बेचने के बजाय अगर उसका मूल्य वर्धित सामग्री में रुपांतरण करके बेचे ताकि किसानों को अधिक वित्तीय लाभ मिले। इससे एक ओर किसी कारण वश जिस कच्चे टमाटर का विपणन नहीं हो पाया उसका न्यायोचित इस्तेमाल होगा और बर्बादी नहीं होगी और आर्थिक नुकसान नहीं होगा बल्कि मूल्य वर्धित सामग्री बेचने से किसानों को अधिक वित्तीय लाभ मिलेगा।

टमाटर से सॉस या केचप, सूप, प्यूरी, जैसे मूल्यवर्धित उत्पाद निम्नलिखित तरीकों से बनाए जा सकते हैं।

टमाटर सॉस के लिए सामग्री

लाल सख्त टमाटर	:	आधा किलो
प्याज	:	मध्यम आकार – 1
लहसुन	:	7–8 लौंग
सेब का सिरका	:	½ कप
दालचीनी पाउडर	:	दो से तीन चुटकी
कलमीर पुड़	:	दो से तीन चुटकी
नमक	:	½ छोटा चम्मच
काली मिर्च	:	1 छोटा चम्मच
जीरा	:	1 छोटा चम्मच
लौंग	:	7–8 लौंग
इलायची	:	7–8
दालचीनी	:	2 से 3 इंच
चीनी	:	3 चम्मच

विधि :

1. टमाटर को धोकर पतला पतला काट लीजिये, प्याज को भी पतला काट लें। लहसुन की कलियों को छीलकर काट लें। इन तीनों चीजों को कुकर में डालकर थोड़ा उबाल आने दें। (पानी न डालें।)
2. ढक्कन बंद करके मध्यम आंच पर दो सीटी आने तक पकाएं। ठंडा होने पर ही ढक्कन खोलें।
3. पका हुआ मिश्रण पानी को छोड़ देगा। इस मिश्रण को मिक्सर के बचे हुए पानी (आधा किलो की रेसिपी के लिए चार भाग) के साथ थोड़ा–थोड़ा करके डालें और बारीक पेस्ट बना लें।
4. छलनी में डालिये और चमचे से चला कर छान लीजिये, छना हुआ पेस्ट सॉस से पतला होता है। टमाटर के पेस्ट में आधा चम्मच नमक, दो या तीन चुटकी दालचीनी पाउडर और काली मिर्च पाउडर, ½ कप सेब का सिरका डालकर ऊपर दिए गए मसाले मिलाएं।
5. अब सफेद रंग का एक सूती रुमाल के कपड़े में जीरा, काली मिर्च, लौंग और दालचीनी के टुकड़े डालकर परचुंडी बना लें।
6. आप इसमें दो टेबल स्पून कद्दूकस किया हुआ गुड़ या दो टेबल स्पून चीनी डाल सकते हैं, इसे तेज आंच पर रखें और उबलने दें, आधा मिनिट तक चलाते हुए उबलने दें, फिर आंच को कम कर दें और धीमी आँच पर सॉस के गाढ़ा होने तक पकाएं। उबालने के बाद इसमें लगभग 10 से 15 मिनट का समय लगता है।
7. फिर गैस बंद कर दें और इसे ठंडा होने दें। ठंडा होने के बाद इसे बोतल में भर लें। लंबे समय तक शैल्फ जीवन के लिए सॉस को फ्रिज में स्टोर करें।

टमाटर का सूप

टमाटर सूप के लिए सामग्री : टमाटर आधा किलो, 1 बड़ा प्याज, लहसुन 7–8 लौंग, पांच से छह काली मिर्च, दालचीनी चार टुकड़े, अदरक 1 इंच, जीरा एक चम्मच, नमक, चीनी, नारियल आधा कटोरी, कॉर्नफ्लावर 2 चम्मच।

टमाटर सूप बनाने की विधी

1. सॉस की तरह ही टमाटर, प्याज के टुकड़े, लहसुन, काली मिर्च, दालचीनी, अदरक, जीरा को पानी के साथ मिलाकर पकाना चाहिए। इससे सूप का स्वाद और बढ़ जाता है
2. फिर काली मिर्च और दालचीनी निकाल लें। इसलिए सूप ज्यादा तीखा नहीं होता। अलग–अलग मसाले न डालें क्योंकि काली मिर्च, अदरक और दालचीनी तीखे होते हैं जिससे सूप का स्वाद बिगड सकता है।
3. पके टमाटर को मिक्सर या पूरन मशीन से निकाल लें ताकि

महिन मिश्रण प्राप्त हो। नारियल का दूध लें और इससे मिला लें। ज्यादा गाढ़ा लगे तो पानी डालें। नमक और चीनी डालें। इससे सूप का स्वाद और बढ़ जाता है।

4. एक कटोरी पानी में दो चम्मच कॉर्नफ्लावर का आटा डालकर मिलाएं इससे सूप गाढा बनता है और सूप को ग्रहण करते समय विशिष्ट अनुभव आता है। फिर इस मिश्रण को पांच मिनट तक अच्छी तरह उबाल लें।

5. ठंडा होने के बाद आप चाहें तो एक बाउल में तली हुई दो–चार ब्रेड के टुकड़े और आधा चम्मच मक्खन डाल दें जिससे सूप का स्वाद और बढ़ जाता है ।





टमाटर सॉस बनाते समय ग्रामीण युवावों के साथ कृषि विज्ञान केंद्र, नागपुर

हम में ही थी न कोई बात, याद न तुमको आ सके
तुमने हमें भुला दिया, हम न तुम्हे भुला सके...।

– हफ़ीज जालंधरी

किसी से मेरी मंजिल का पता पाया नहीं जाता
जहाँ मै हूँ फरिश्तों से वहाँ जाया नहीं जाता।

– मखमूर देहलवी

जो लोग जान बूझ के नादान बन गए
मेरा ख्याल है कि वो इन्सान बन गए...।

– अदम

रोग पैदा करले कोई जिन्दगी के वास्ते, सिर्फ सेहत के सहारे जिन्दगी नहीं कटती।

– फिराक

स्वभाव ही मनुष्य के जीवन का स्वर्ग या नरक निर्धारित करता है।

– डी. बारिया

परिश्रम की चाबी ही किस्मत का व्दार खोलती है।

– चाणक्य

अजीबो गरीब और अद्‌भुत रेलगाड़ी

डॉ. सुनील नीलकंठ रोकडे, पुर्व प्रमुख
कृषि विज्ञान केन्द्र, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान,
पांजरी फार्म, वर्धा रोड, नागपुर

वह सन् 1989 के दिन थें। मैं उन दिनों भारतीय कृषि सेवा में एक प्रोबेशनर प्रशिक्षणार्थी के रूप में राजस्थान के जयपुर शहर से 80 किलोमीटर दूर मालपुरा गांव के पास स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तहत कार्यरत केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर में विषय प्रशिक्षण ले रहा था। उस दौरान मेरी धर्मपत्नी भी मेरे साथ थी।

उस जमाने में वहां से कही जाने हेतु आवागमन के सिर्फ दो ही साधन थे। एक राजस्थान रोडवेज की बस और दुसरी एक मीटर गेज रेलगाड़ी थी जो अविकानगर से कुछ किलोमीटर दूर टोडा रायसिंग नामक स्टेशन से चलकर सवेरे 6 बजे अविकानगर पहुंचती थी और वह करीब चार घंटो का सफर तय कर सवेरे करीब नौ बजे जयपुर स्टेशन पर पहुंचती थी। शाम को 5 बजे वही रेलगाड़ी जयपुर स्टेशन से चलकर करीब चार घंटो के सफर पश्चात रात नौ बजे अविकानगर पहुंचती थी। इस रेलगाड़ी मे सिर्फ चार डिब्बे हुआ करते थे। बीच के डिब्बे पर चाक से चल टिकट घर लिखा होता था और उसमें एक टिकट कलेक्टर बैठा होता था और उसके पास उस जमाने में रेल्वे स्टेशन के टिकट–घर जैसी होती थी ठीक वैसी ही दो लकड़ी की अलमारिया होती थी। उस अलमारी मे कई छोटे–छोटे खाने होते थे और उसमे पुराने जमाने की तरह कार्डबोर्ड से बने टिकट मिलते थे।

उस रेलगाड़ी के कायदे के अनुसार हर यात्री को पहले उस डिब्बे में जाकर गार्ड उर्फ टिकट कलेक्टर से टिकट खरीदना पड़ता था और फिर अगले स्टेशन पर उतरकर किसी दुसरे डिब्बे में जाकर बैठना पड़ता था। इस गाड़ी का रूट कूछ ऐसा था की वह गाँवो के बीच से न गुजरकर हर गाँव के बाहर–बाहर चलती थी। अर्थात हर गाँव का स्टेशन गाँव के बाहर था हमने इसका कारण पूछा तो लोगो ने बताया की ये रेल गाड़ी शुरू होने से पहले इस इलाके में निजी बसे चलती थी और वे गाँव के अंदर जाकर लोगों को बिठाकर ले जाते। इन बसों के मालिक धन्ना सेठ थे और उनको इस धंधे से लाखो का फायदा होता था। जब इस रेल का सर्वे शुरू हुआ तो सब बसों के मालिक इकट्ठा हुए और उन्होंने सोचा की अगर ये रेल शुरू हुई तो हमारा लाखों का धन्धा चौपट हो जाएंगा। तो उन्होंने सबने मिलकर बड़ी रकम इकठ्ठा की और सर्वे करने वाले लोगों को वह मोटी रक्कम पकड़ाकर बोले की साहब ऐसी रिपोर्ट दीजिये की रेल तो शुरू हो लेकिन वो सब गाँवों के बाहर बाहर से गुजरे और उस ट्रेन से कोई सफर ना करें। बस फिर क्या? सर्वे करने वाले लोगों ने वैसा ही किया।

नतीजा यही हुआ की रेल का रूट कुछ ऐसा बना की रेल तो शुरू हुई लेकिन वो सब गाँवों के बाहर बाहर से गुजरती थी और लोगों को अपने गाँव से दूर स्थित रेल्वे स्टेशन पर आना पड़ता और भारी असुविधा होती थी। अतः सब गाँवों के बाहर–बाहर से गुजरने वाली इस गाड़ी से बहुत कम यात्री सफर करते थे। कई यात्री बिना टिकट ही सफर करते थे। मैने मेरे समुची जिंदगी में इतना अजीबो गरीब और अद्‌भुत दृश्य नहीं देखा की स्टेशन मास्टर और टिकट कलेक्टर लोगों से हाथ जोड़कर टिकट खरीदने की बिनती करते थे। लेकिन वहाँ के लोग टस से मस नहीं होते थे और उनका कहा कतई नहीं मानते थे। अतः यह गाडी घाटे में चलती थी। आखिर में कुछ बरसों के बाद तंग आकर रेल्वे ने यह ट्रेन बंद कर दी।

यह बात मुझे तब पता चली जब मैं सन 1994 में किसी गोष्ठी में भाग लेने हेतु अविकानगर गया था। रात को खाना खाने के बाद टॉर्च लेकर उस स्टेशन पर पहुंच गया तो मैंने पाया की वहां अंधेरा छाया हुया था और वहा से वह रेल्वे ट्रेक ही गायब था। मुझे देख एक चौकीदार मेरे पास आया और उसने मुझसे पूछा कि साहब, आप क्या ढूंढ रहे हो? मैंने उससे पूछा की यहाँ एक मीटर गेज रेल ट्रेक हुआ करता था और उसपर से 1989 में एक रेलगाड़ी चला करती थी, तो उसने मुझे बताया कि, साहब, तंग आकर रेल्वे विभाग ने वो रेलगाड़ी बंद कर दी है और फिर वे मीटर गेज रेल ट्रेक भी निकालकर ले गये। उसका कहना सुनकर मुझे मायूसी हुई।

खैर, उस रेलगाड़ी से सफर करने का एक अद्‌भुत अनुभव था। जब हम पहली बार उस ट्रेन में बैठे तो अजीब नजारा था। उस रेलगाड़ी में कदम रखते तो एक अजीब सी गंध थी क्योंकि उसमें आसपास नजर दौड़ाये तो कुछ लोग लकड़ी, घास के गठ्ठर, कुछ लोग उंटनी, भेड़, बकरी के दूध के डिब्बे लेकर बैठे थे। जब हम पहली बार उस रेलगाड़ी में बैठे तो देखा की कुछ लोग भेड़ बकरी भी साथ में लेकर चल रहे थे। कई लोग बीड़ी पी रहे थे और रेलगाड़ी के डिब्बे को गॅस चेंबर में तबदील कर दिया

था। उस रेलगाड़ी के सफर के बाद अगर फेफड़े निकाल कर डॉक्टरी जांच करवाते तो लोग कहते की ये सीमेंट की थैलीयां है। हमने लोगो की और देखा और रुमाल से नाक बंद कर ली तो वे लोग हमारी और अचंभे से देखने लगे उनके चेहरो पर कुछ ऐसे भाव थे जैसे हम कोई विदेशी है।

खैर, रेलगाड़ी चली और आगे बढ़ी कुछ देर बाद अगला स्टेशन आया तो देखा की काफी औरते स्टेशन पर इकठ्ठा थी कुछ मर्द भी थे लेकिन उनमें से सिर्फ कुछ ही मर्द गाड़ी में चढ़े लेकिन औरते नहीं चढ़ी। मैने देखा की वो गाड़ी के इन्जन से पानी भर रही थी। हमारे लिये ये बहुत ही अजीबो गरीब बात थी और वो दृश्य अचंभित कर देनेवाला और बहुत ही अद्‌भुत था क्योंकि हमने रेल के भाफ के इन्जन में पानी भरते हुए देखा था लेकीन गाड़ी के इन्जन से किसी को पानी भरते हुए कभी नही देखा था। लोगो से पूछने पर पता चला कि, उस इलाके में पानी की भारी किल्लत थी। अतः वे लोग रोजाना गाड़ी से पानी भरते थे। जब लोगो ने हमें ये बताया की वे ये पानी पीने के लिये उपयोग में लाते है तो हमे और भी आश्चर्य हुआ और आत्मग्लानि भी हुई की आजादी के इतनें बरसो बाद भी हम जो पानी नहाने के लिये भी उपयोग में लाते नहीं है कुछ लोग बरसों से ऐसा मट मैला पानी पीने के लिये उपयोग में लाते है।

इस रेलगाड़ी में खान–पान की कोई व्यवस्था नहीं थी। यात्री अपने साथ प्रचुर मात्रा में खाना और पानी लेकर ही चलते थे। हां बीच वाले कुछ स्टेशन पर कुछ लोग कचौड़ी और पकोड़े बेच रहे थे। राजस्थान में एक खासियत है कि, कोई भी व्यक्ति खाने के लिए बैठता है तो पहले आजू–बाजू में जो भी व्यक्ति बैठे होते है उन्हे "जिमों सा", ऐसा कह कर खाने के लिए आमंत्रित करता है। सो रेल के सफर में लोग पड़ोसी यात्रियों को खाने के लिए आमंत्रित करते थे।

यह रेलगाड़ी जब किसी गाँव के स्टेशन के पास आती दिखाई देती तो कुछ लोग जो देर से आते थे और स्टेशन से कुछ दूर होते थे वो जोर से दौड़ते हुए हाथो से ठहरने का इशारा करते हुए चिल्लाते हुए नजदीक आते थे और महान आश्चर्य की बात ये थी की रेलगाड़ी का ड्राइवर उन्हें देख कर रुक जाता और अगर रेलगाड़ी चल भी पड़ी हो तो भी ब्रेक लगाकर ट्रेन को रोक देता और उन्हे ट्रेन में बैठने के बाद ही ट्रेन चलाता। क्या करता? इस रेलगाड़ी में यात्री पहले ही कम होते थे तो उन्हें न बिठाकर और कम यात्री होते और रेल को आमदनी कम मिलती तो ट्रेन बंद हो जाती। ऐसा समूचे भारत मे शायद ही किसी ने सुना हो और शायद ही कोई व्यक्ति ऐसी अद्‌भुत रेलगाड़ी में बैठा हो। जब यह रेलगाड़ी किसी गाँव के स्टेशन पर रुकती तो जो लोग स्टेशन पर मौजूद होते थे वो रेलगाड़ी में बैठ जाते थे।

एक बार हम पति पत्नी अविकानगर से सवेरे की रेलगाड़ी पकड़कर जयपुर गए थे। फिर दिनभर घूमकर खरीददारी कर शाम को जयपुर स्टेशन पर पहुँच कर इस रेलगाड़ी का बेसब्री से इंतेजार कर रहे थे। वो जाड़े के दिन थे तो शाम जल्दी ढल चुकी थी। अंधेरा छाने लगा था। रेलगाड़ी शाम को पाँच बजे जयपुर स्टेशन से छूटती थी। लेकिन उस दिन जिस प्लेटफॉर्म से वो चलती थी उसपर नहीं आई। हम बहुत बेचैन थे क्योंकि अविकानगर जाने के लिए वो एकमात्र रेलगाड़ी थी। मैंने बगल के एक चायवाले से पूछा, भैया वो मालपुरा जानेवाली रेल गाड़ी इसी प्लेटफॉर्म से चलती है ना? इस पर उसने कहा की, हाँ, साहब वो गाड़ी इसी प्लेटफॉर्म से चलती है। लेकिन पता नहीं क्याँ? आज अभी तक आयी नहीं ...तभी उसकी और हमारी नजर दूसरे प्लेटफॉर्म से छूटने वाली दूसरी रेल गाड़ी की और पड़ी ...हे भगवान! वो गाड़ी छुट चुकी थी! हमारे मन में खयाल आया की, कहीं वो गाड़ी ये तो नहीं जिसका हम इंतजार कर रहे थे? अब वक्त कम था। हमारी बेचैन का बांध टूट चुका था। हम बहुत बेचैन थे। तो वापस उसी चायवाले से पूछा, भैया मालपुरा जानेवाली रेलगाड़ी वो तो नहीं जो सामने वाले छुट चुकी है? उसने वापस देखा और वो जोर से चिल्लाया, "अरे साहब, वही है आपकी रेलगाड़ी" !

अब हमारे हाथ पांव फूल गये। क्योंकी वो रेलगाड़ी रफ्तार पकड़ चुकी थी और वो प्लेटफॉर्म दूर था। हमारे पास इतना वक्त भी नहीं था की ओवर ब्रिज क्रॉस कर उस ट्रेन मे चढ़ सके... अब क्या करें? हम मन ही मन में भगवान से प्रार्थना कर रहे थे की इस ट्रेन को किसी तरह से रोक दीजिये... हम सोच ही रहे थे तभी सहसा उस चायवाले ने जोर–जोर से चिल्लाना शुरू किया और उस रेलगाड़ी की और हवा मे हाथ हिलाते हुए उस ट्रेन के ड्राइवर को जोर से चिल्लाकर कहा, ओ..... ड्राइवर शाब, ये यात्री यहा रह गये ना..... हम दोनों ने भी उसी प्रकार हवा मे हाथ हिलाते हुए उस ट्रेन के ड्राइवर को जोर से पुकारा, रोको..., रेलगाड़ी रोको... हमें परेशान देख हमारे प्लेटफॉर्म पर उपस्थित अन्य लोग भी चिल्ला चिल्ला कर उस रेलगाड़ी के ड्राइवर को जोर से पुकारने लगे और भगवान ने शायद हमारी प्रार्थना सुन ली और महान आश्चर्य की बात हुई वो रेलगाड़ी प्लेटफॉर्म पार कर चुकी थी फिर भी रेलगाड़ी के ड्राइवर ने वो शोर देखकर जोर से ब्रेक लगाकर रेलगाड़ी रोकी और हमे उधर आने का इशारा किया... हम दोनो दौड़ते हुए उस प्लेटफॉर्म पर गये और किसी तरह हांफते हुए रेलगाड़ी में चढ़ गये, देखते क्या है ? तो रेलगाड़ी में एखाद ही यात्री था. हमने गार्ड से टिकट खरीदे और बैठ गये आज भी वो वाकया याद आता है और हंसी छूट जाती है। मैनें मेरी समुची जिंदगी में ऐसी अजीबो गरीब और अद्‌भुत रेलगाड़ी कही और नहीं देखी।

मेरी मन की भावनायें

श्रीमती निता काटे, पूर्व मुख्य तकनीकी अधिकारी
फसल सुधार विभाग
भाकृअनुप – केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर (महाराष्ट्र)

2022 साल आ गया। मन में मैंने सोच लिया था 2023 साल में निवृत्त होना है। अब एक ही साल बाकी है। मन कुछ खुश भी हुआ, उदास भी हुआ। उम्र के 25 साल में मैं इस कार्यालय में लगी। तैतीस साल मैंने इस कार्यालय में गुजारे। उम्र के अनुसार मुझे निवृत्त होना ही है।

क्या नहीं दिया इस कपास संस्थान ने मुझे! मुझे एक कपास परिवार मिला। पिछे मुड़कर देखती थी की मेरे लिए कपास की फसल नयी थी, जानकारी भी बहुत नहीं थी। मुझे कपास परिवार में काम करने वाले वैज्ञानिक–गण, तकनीकी–गण, खेत में काम करने वाले लोगों ने सब सिखाया, मार्गदर्शन दिया। कैसे भूलूँ उन लोगों को? मैं सदा उनकी ऋणी रहुंगी।

कपास परिवार ने मुझे महत्वपूर्ण मित्र परिवार दिया जिन्होंने मुझे सुख–दुख में साथ दिया। मुझे लोगों की पहचान करना सिखाया, मुझे संभाल लिया, हिम्मत दी। उन लोगों को कैसे में छोड़कर जाउंगी जो मुझे रोज मिलते है, वो लोग अब रोजाना नहीं मिलेंगे। मेरी आँखे वो विचार करने से डबडबाने लगती है। मेरे कभी वरिष्ठ लोगों से सहयोगी लोगों से झगड़े भी होते थे। कभी मेरे तरफ से कभी उनके तरफ से, पर क्षमा (sorry) एक शब्द ऐसा है की सब–कुछ परिस्थिती सौम्य, सामान्य कर देता है। कोरोना महामारी के पूर्व जो लोग मिलते थे उनमें से दो–तीन लोग अचानक से कोरोना में चले गये। उनकी यादे अभी भी आती है। कुछ सहेलियाँ संस्थान छोड़कर अलग जगह नौकरी करने के लिए गयी, कुछ निवृत्त हो गयी पर अभी भी हम मिलते है, फोन पे बाते होती रहती है तब मन बहुत खुश होता है।

हमारा संस्थान एक नैसर्गिक वातावरण में है। यहां नहीं है प्रदुषण, यहा है शुद्ध हवा ये सब आनंद देने वाला है। यह शुद्ध वातावरण शहर में कभी नहीं मिलेगा। मेरी बैठने की जगह भी ऐसी है की निसर्ग के हर रूप को देखने को मिलता है। मैंने साल के तिनों ऋतुओं का आनंद लिया। हर साल उसका बदलता रूप देखा। तरह–तरह के पंछी मुझे देखने को मिले। मेरी गिलहरी से दोस्ती हो गयी। खाना खाने से पहले उसे खाना देकर ही मै खाना खाती हूँ। अब उसकी इतनी आदत हो गयी की एक बजे मैं भी उसका इंतजार करने लगी। ग्रीष्म ऋतु में मैं पंछीयों के लिए पानी रखती थी। जब पंछी पानी पीने के लिए आते थे तो मुझे अलग ही आनंद मिलता था। अभी कुछ साल पहले हिरन, मोर, नीलगाय भी दिखने लगी। तैतीस साल में मैने संस्थान का रूप बदलते हुए देखा। कूछ लोग निवृत्त हो गये, कुछ नये लोग आने लगे। सबकी मेहनत से संस्थान ने आकाश छु लिया।

अब मैं इस पड़ाव में आ गयी की निवृत्त होने के बाद मुझे रोज की दिनचर्या बदलनी पड़ेगी। अब मैं मेरे परिवार को पुरा वक्त दे पाऊँगी। रोजाना दिन का महत्वपूर्ण समय मैंने इस कार्यालय में गुजारे। अपनी बच्चियों के बचपन के कुछ महत्वपूर्ण क्षण मैने खोयें। अब नानी बनकर वो क्षणों का आनंद मैं फिरसे ले पाऊँगी। मुझे अब घड़ी देखकर भागना नहीं पड़ेगा। पर घड़ी भी एक ऐसी चिज है वो अपने जीवन को अनुशासन मे लाती है।

वक्त और उमर के साथ शरीर भी थकने लगा। अब पहले जैसे भागदौड़ नहीं होती। अभी लगता है की निवृत्त होना चाहिए और आगे के पड़ाव के लिए सिद्ध होना चाहिए। ईश्वर से मैं प्रार्थना करती हूं की मुझे सब कुछ सहन करने की शक्ती दे। मैं केंद्रिय कपास अनुसंधान संस्थान की सदा ऋणी रहुंगी। उसने मुझे जीवन के अनमोल क्षण दिये, सहेलियाँ, मित्र परिवार दिया।

जीवन संघर्ष में वही सफल होते हैं, जिन्हें माता–पिता ने शांत रहने और धैर्य रखने की शिक्षा दी हो।

– भर्तृहरि

सुगंध के बिना पुष्प, तृप्ति के बिना प्राप्ति, ध्येय के बिना कर्म व प्रसन्नता के बिना जीवन व्यर्थ है।

– जयशंकर प्रसाद

केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान हमारा है

करता कपास पर बहुत
शोध–अनुसंधान सारा है
गर्व से कहो सब ये,
केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान हमारा है ।।1।।

देश के हृदयस्थल नागपुर नगरी में
वर्धा रोड पर स्थित
सीआयसीआर के नाम से है ये
जन–जन में सुपरिचित ।।2।।

मुख्यालय है इसका जो नागपुर
उत्तर में है सिरसा और दक्षिण में कोयंबतूर
फसल सुधार, उत्पादन एवं संरक्षण
अध्ययन शाखाए इसकी प्रमुख है तीन ।।3।।

बनाए उन्नत किस्में,
मिले अधिकतम पैदावार
प्रबंधन नितीयां करे मुक्त
कीट, रोग और खरपतवार ।।4।।

जलवायु परिवर्तन परिप्रेक्ष्य में काम करे ऐसा
विकसित किया कपास का उन्नत तंत्रज्ञान
अधिक उपज, लागत के खर्चे में कमी
सुखी और समृद्ध होवे हमारा किसान ।।5।।

प्रक्षेत्र भेंट, हर समस्या का तुरंत मिले समाधान
वैज्ञानिकों के शोध प्रावधान पर हमेशा रहते है किसान
क्या बताऊँ, क्या ना बताऊँ, कितनी सारी है उपलब्धीयां
समेकीत प्रयत्नों से राष्ट्र स्तर पर संस्थान ने नाम रोशन किया ।।6।।

गर्व ही नही सिर्फ, नाझ है हमें
काम करने का मिला सौभाग्य ऐसे संस्थान में
इस का मान सम्मान बढ़े ऐसा काम करे ये कर्तव्य हमारा है
गर्व से कहो केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान हमारा है ।।7।।

– डॉ. बाबासाहेब फंड
भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

आजादी का जश्न

स्वतंत्रता की आरती गाने, आयी हमारी हिंदी है।
घर–घर झुमर, रंगोली और गुंजती शहनाई है
स्वतंत्रता की आरती गाने आयी हमारी हिंदी है।

डाल–डाल पर फूल खिले हैं, दशों दिशाएं अत्तर है
आज हमें आजादी पाके साल हुए 75 है
स्वतंत्रता की आरती गाने, आयी हमारी हिंदी है

अमृत घट हैं भरें, सारे जहाँ में महोत्सव सजें
नाचों झुमो, आओ गाओ, हर घर आज दिवाली है
स्वतंत्रता की आरती गाने आयी हमारी हिंदी है

जिस संघर्ष से जीती हमने लड़ाई है,
उस पथ पर चल कर मिली हमें आजादी है
स्वतंत्रता की आरती गाने आयी हमारी हिंदी है

याद कर बलिदान उन वीरों का रूह सबकी काँप उट्ठी है
होकर एक फिर से आज हमने बांधी अपनी मुट्ठी है
स्वतंत्रता की आरती गाने आयी हमारी हिंदी है

अमृत वर्ष, अमृत घटीका, अमृत महोत्सव की अमृत अपनी वाणी है,
प्रगती करनी है हमें अपने कर्तव्य पथ पर, और लिखनी नयी कहानी है
स्वतंत्रता की आरती गाने आयी हमारी हिंदी है

खुली हवाएँ, खुली सोच है और ना कोई पाबंदी है
हँसकर भारत माँ की गोद में हिंदी हमारी समाई है
स्वतंत्रता की आरती गाने आयी हमारी हिंदी है

घर घर झुमर, रंगोली और गुंज उठी शहनाई है
स्वतंत्रा की आरती गाने आयी हमारी हिंदी है।

– श्रीमती रचना देशमुख
भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

कितना बड़ा हो गया है तु

वो तेरी पहली किलकारी सुनकर, रूप तेरा चांद सा देखकर,
पहली बार तुझे गले लगाना, जैसे पानी में पानी मिल जाना,
देख तेरा भोला सा चेहरा आ गये खुशी के आँसू
देखो तो आज कितना बड़ा हो गया हैं तू।।

वो नन्हे से हाथ, गाल रूई से भी कोमल
वो चमकती आंखे, जैसे दिन में तारे आए निकल,
नींद में मुस्कुराना, जैसा सूरज कि पहली किरण
सब कुछ मिल गया मुझे, अब और क्या मैं माँगू
देखो तो कितना बड़ा हो गया है तू।।

छोटे छोटे कपड़ों में लगता है गुड्डा खिलौनों का,
घुटनों के बल रेंगता, हर चीज को छुता, निहारता,
पहली बार जब तू हुआ खड़ा, क्षण वो था बहुत बड़ा
दो कदम तुने बढ़ाये, जैसे पंछी ने पर फैलाये, घड़ी वो मै भूलना पाँऊ
देखो तो कितना बड़ा हो गया है तू।।

सुना मैने मुख से जब तेरे पहली बार मां ये शब्द,
लगा जैसे तू बोलता रहे और मैं हो जाऊं हतप्रभ,
आज करता है तू कितनी बांते, प्रश्नों में तेरे कट जाती
कोई मुझे ले चले तो क्यों ना तेरे बचपन में चली जाऊँ
देखो तो आज कितना बड़ा हो गया है तू
अब तो तेरे लिए लोरी भी ना गा पाऊँ।।

– श्रीमती चैताली रोडगे
भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

संसार में न तो कोई हमारा शत्रु है न ही कोई मित्र। उनके प्रति हमारे विचार मित्र और शत्रु का अंतर करते हैं।
– चाणक्य

दिल में कभी बुरे विचार मत आने दो, वह अपना असर दिखाए बिना नहीं रहते। **– महात्मा गांधी**

मनुष्य की वाणी से उसके गुण और अवगुण जाने जा सकते हैं। **– शेख सादी**

घिर घिर आये बदरवा कारे

घिर घिर आये बदरवा कारे
शोख पवन वा सोर करें
घिर घिर आये बदरवा कारे
शोख पवन वा सोर करें

कड़के दामिनी आसमान में कारे
मोरा मन कहे, अब के आ री बरखा मोरे द्वारे
गरजत बरसत आये बरखा के धारे
भिगाकर गई मोरा तन मन, सावन की ठंडी फुहांरे

देखकर ये नजारे मोरा मन भी नाचे मोर सा बावरे
जिधर देखो उधर छाई है बहारें, जिधर देखो उधर छाई है बहारें
न जा री ए बरखा मेरी नगरिया से, मोरा दिल पुकारे
ऐसे मे ए सजन, तुझे ढूंढे मोरे नयन हे सांवरे

-डॉ. सुनिल रोकड़े
भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

माटी के लाल

भोर भये भुआंगण मे,
माथे माटी तिलक लगाये,
जो भोर से संध्या तक
भुमाता की सेवा कर अन्न उगाये
हम माटी के लाल है

जो जन के लिए अन्न उत्पन्न कर
खुद भुखे रह, लोगों को अन्न खिलाये
इसलिए हम अन्नदेवता कहलाये
हम माटी के लाल है

जो बीज बनकर, अपनी मेहनत से
बीज को पौधा बनाये
जो इस भुमाता से, सफेद सोना उगाये
हम माटी के लाल है

माटी से रिश्ता हमारा, माटी से ही हमारा नाम है
माटी से हमारा काम और एक दिन मिलना माटी में
हम माटी के लाल है, जिससे ये धरती खूशहाल है
हम माटी के लाल ह, हम माटी के लाल है

- डॉ. मयुर कुमार मेश्राम
भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

तलाश

चिलचिलाती गर्मी की तपन भी मैं हूं।
खुर्द सर्द हवाओं की चुभन भी मैं हूं
आतार भी मैं, इत्र भी मैं।
रूह को खुरोचता जख्म भी मैं
गिर के उठने का सबब भी मैं
और हस के ढेह जाने का जस्बा भी मैं।
गैरों के नुमाइशो में राह भटकना भी मेरा।
सौ खताओं के बावजूद खुद पर एतराना भी मेरा
दुनिया के हसीन रंगों में खोई भी मैं
उन्ही रंगों से हैरान हो रोई भी मैं
बेपनाह बेहद दिवानगी भी मेरी
रंजीशों से भरी सादगी भी मेरी
हर कतरे के साथ तब्दील होती रही हूँ मैं
जिद्दी बुजुर्ग खयालों में खोती रही भी मैं
खुद ही किए जा रही हूं खुद ही की तलाश
तंग धूप में जैसे खिले जा रहा कोई पलाश

- श्रीमती पूजा दिनेश सिंह ठाकूर
भा. कृ. अनु. प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

जो विनम्र है वही विश्व विजयी है। **- चाणक्य**

संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से प्राप्त होता है। **- प्रेमचंद**

कष्ट सहने पर अनुभव होता है। **- प्रेमचंद**

जो मन की पीड़ा को स्पष्ट रूप से नहीं कह सकता, उसी को क्रोध आता है। **- रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

प्रजनन वैज्ञानिक की दरखास्त

ये कपास के चमन... जरा ठहरो,
हमारी आह सुनो... पौधो को खिलने दो,
हमें एक मौका दो... जरा दम लो, हमारा कहना मानो।

चले जाना... जरा ठहरो ...,
ये कपास के चमन ... कलीयों को बहरने दो,
ये कपास के फुल की कलियों... कलियाही बनके रहो... फुल बनके मत मुरझाओ।

चले जाना... जरा ठहरो...,
हमारा दम निकलता है... तुम्हे पकड़ने के लिए,
ये मंजर देख कर जाना... नजारा देखना, परागकन के मिलन का।

चले जाना... जरा ठहरो...,
ये कलियो अभी–अभी तो खिली हो... रहो मोमबत्ती की तरह बनकर,
जरा रुको मौसम भी सुहाना है... परागकन को अपनी ओर आकर्षित करो।

चले जाना... जरा ठहरो...,
ये कलियों ऽ ऽ ऽ हमें विविध पुष्प रेणू के मिलन करने का अवसर दो,
जो कपास की नई–नई किस्म पैदा करने में मदद करेगी।

चले जाना... जरा ठहरो...,
किसानों को कपास की नई किस्म मिलेगी... कपास तंतु की गुणवत्ता बढेगी,
शून्य शाखाएं वाली किस्म की पैदाइश होगी... हमारे काम का सगुन मिलेगा ,

चले जाना... जरा ठहरो...,
अभी तो हाले दिल तुमको मैं निगाहों से देखना चाहता हूँ,
कपास के पौधे एच.डी.पी.एस. में लगाएंगे... कपास की फसल दुगनी बनाएंगे।

चले जाना... जरा ठहरो...,
आपका प्यार सदा साथ रहेगा... रेशम की तरह कपास की नई किस्म पैदा होगी,
किसान खुशियाली मनाएगा... आमदनी बढ़ेगी, कपास की खेती भारत की शान बनेगी,
लेकिन कलियौ ऽ ऽ ऽ जरा ठहरो... हमें डिंबग्रंथी और पुष्प रेनू का मिलन करने दो।

– डॉ. दिलीप पाटील
प्रधान वैज्ञानिक (वनस्पति प्रजनन)
भा. कृ. अनु. प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

आदित्य एल–१

मिशन में मिशन, आदित्य एल –1 की हो मिशन
फिरसे एक पन्ना खोला हो भारत ने
अगला कदम भी, कुछ हो कम नहीं
आखिर तुम्हारे भी नसीब हो खुल गये
माता धरती मिलने चली हो सुरज चाचा से
आदित्य एल –1 लगा बढने हो, धरती कि तरफ से
दो सीतम्बर 2023, बन गया हो शुभ दिन
सुरु हुआ हो सूरज का अध्ययन
ये भावुकता से जुडा भावुकता का पल हो
चांद से मोहोब्बत क्यूँ ? सुरज तुम भी गुस्सा थूक दो
सूर्य नमस्कार करते है,
आदित्य एल – 1 आप पर नजर रखतें है
नमन गवडा पंचमुखी गिरीजा पार्बती
हर ऽ ऽ ऽ बोला हर ऽ ऽ ऽ हर ऽ ऽ ऽ महादेव

डॉ. दिलीप पाटील
प्रधान वैज्ञानिक (वनस्पति प्रजनन)
भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

कपास

धरती माँ का विशेष फल कपास
मिट्टी की गोद में छोटे–छोटे अंकुर
झूलते खिलते पीले फूलों की मुस्कान
पुराना हो नया जमाना, कपास है सफेद सोना
बुआई से कटाई तक लगातार मजदूरी
खेत से मिल तक लगातार सुखद सफर
ओटाई, कताई, बुनाई कपास के खूबसूरत कदम
छोटे, मध्यम, लम्बे रेशे देश की पहचान
उन्नत संकर किस्में कपास वैज्ञानिक की खोज़
नकदी फसल लाखों लोगों की जिंदगी
कपास उगाएँ, पीढ़ियों को मजबूत बनाएं।

– श्रीमती के. सुभश्री
भा. कृ. अनु. प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, कोयंबटूर

चंद्रयान-३

मिशन में मिशन, चंद्रयान की हो मिशन
जय... हो चंद्रयान–3, जय हो...
तपस्या रंग लाई हो चार साल के बाद
भारत कि हो शान और बाण
ये शुभ दिन 23 अगस्त 2023
जो कभी किसी ने सोचा ही नही था
दृश्य कौन भुलेगा, पल ही अमर था
सरहना कैसे करू, ए इतिहास है प्रबल, शक्ती का
परिणाम है अपनी जगह, शक्ती का
लक्ष और संस्कार है सशक्त शक्ती का
अब इंडिया इज ऑन मून
लैंडर विक्रम ने पैर जमाया चांद पर
रोव्हर प्रज्ञान का पराक्रम भी कोई कम नहीं
दौडता फोटो खिंचने चांद के सतह पर
निभा रहा हू फर्ज, सोने की बारी आ गई है अब
चौदावे दिन जागूंगा, दौडुंगा फिर से, फोटो खिचुंगा
चांद के वातावरण की, तुम्हे जानकारी भेजुंगा
नमन गवडा पंचमुखी गिरीजा पार्बती
हर ऽ ऽ ऽ बोला हर ऽ ऽ ऽ हर ऽ ऽ ऽ महादेव

डॉ. दिलीप पाटील
प्रधान वैज्ञानिक (वनस्पति प्रजनन)
भा. कृ. अनु. प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

क्रोध में व्यक्ति सच्चाई नहीं कहता, वह तब सिर्फ दूसरे का दिल दुखाना चाहता है। - प्रेमचंद

कुलीन व सज्जन व्यक्ति क्रोध आने पर भी मर्यादा पूर्ण वचन कहता है। जैसे गन्ना निचोड़े जाने पर भी मधुरता ही उगलता है। - अज्ञात

गुस्से का बेहतरीन इलाज खामोशी है। - स्वामी विवेकानंद

मित्र के तीन लक्षण है – अहित से हटाना, हित में लगाना और हर तरह की मुसीबत में साथ निभाना। - बुद्धचरित

डर लगता है

बार बार संवरने में भी डर लगता है,
सजधज कर बिखरने में भी डर लगता है।

क्या जाने वहां क्या कश्मकश चल रही हो,
उस दिल में उतरने में भी डर लगता है।

ऐसा लगता है, कहीं बेरंग न हो जाये,
तस्वीर में रंग भरने में भी डर लगता है।

क्या जाने कौन सा इल्जाम लगा दे कोई,
उस गली से गुजरने में भी डर लगता है।

वो क्या सोचेंगे इसलिए किसी के लिए,
कुछ भी अच्छा करने में भी डर लगता है।

– **श्रीमती माधुरी राऊलकर** (गज़लकारा)
रामनगर, नागपुर

हर लम्हे को

खुशबू को गुलाबों में न कैद कर,
आंखों को ख्वाबों में न कैद कर।

दोस्ती, रिश्ते, प्यार के मायने समझ,
उन्हे सिर्फ आदाबों में न कैद कर।

दुनिया को पढ़ना क्या कम बड़ी बात,
खुद को तू किताबों में न कैद कर।

जब खुल के जीना सीख लिया है तो,
हर लम्हे को हिसाबों में न कैद कर।

गजलों को खुला आसमान चाहिये,
यू सवाल जवाबों में न कैद कर।

– **श्रीमती माधुरी राऊलकर** (गज़लकारा)
रामनगर, नागपुर

महल

जिन्दगी ने इतने छल दिए,
खुशी के मायने बदल दिए।

घुट के रह गई जिन्दगी,
रहने को ऐसे महल दिए।

उन्हें नये खिलौने क्या मिले,
झूमकर खुशी से वो चल दिए।

हर किसी को गमगीन लम्हे,
भुलाने को भी कुछ पल दिए।

चेहरे ने ताजगी खो दी,
वो नजर फेर के चल दिए।

– **श्रीमती माधुरी राऊलकर** (गज़लकारा)
रामनगर, नागपुर

रिश्तों के दर्पण

घर की अनबन, अपनी जगह है,
दहलीज, आंगन, अपनी जगह है।

खिलौनों से न बहलाओं उसे,
प्यासा बचपन, अपनी जगह है।

कोशिश करना उसे भरने की,
अपना दामन अपनी जगह है।

कौन रोक सका है उड़ान को,
जमीं का बन्धन, अपनी जगह है।

हम जोडें कितने, तोडे कितने,
रिश्तों के दर्पण, अपनी जगह है।

कौन किससे खफा हो जाता है,
हर उलझन, अपनी जगह है।

कही सुनहरी धूप का मौसम,
आंख का सावन, अपनी जगह हे।

– **श्रीमती माधुरी राऊलकर** (गज़लकारा)
रामनगर, नागपुर

हिंदी सप्ताह रिपोर्ट
हिंदी सप्ताह : उद्घाटन समारोह रिपोर्ट-2020
दिनांक : 14-21 सितंबर, 2020

नागपुर, वर्धा रोड स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर में बड़े ही उत्साह पूर्ण वातावरण में 'हिंदी सप्ताह (दिनांक : 14 – 21 सितंबर, 2020) समारोह' का विधिवत् उद्घाटन दिनांक : 14 सितम्बर, 2020 को डॉ. ब्लेज डिसूजा, प्रभारी निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर के शुभहस्ते दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।





कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने इस सुअवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से हार्दिक स्वागत करते हुए उन्हें 'हिंदी सप्ताह (दिनांक : 14–21 सितंबर, 2020) समारोह' के अंतर्गत आयोजित किए जाने वाली विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं (हिंदी निबंध प्रतियोगिता, चित्र आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता, शब्दानुवाद प्रतियोगिता, एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता) की जानकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को देते हुए उनसे यह आग्रह किया कि वे इन विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में अधिक–से–अधिक की संख्या में भाग लेकर इस आयोजन को सफल बनाएँ ।





इस कार्यक्रम की अध्यक्षता का पदभार संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सह–सभापति डॉ. ब्लेज डिसूजा, प्रभारी निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने संभाला और साथ ही इस अवसर पर डॉ. नंदिनी गोकटे, विभागप्रमुख, फसल संरक्षण विभाग, श्री. अ. अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.), भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान सादर मंचासीन थे।





इस अवसर पर मंचासीन प्रमुख वक्ता के रूप में सभा को संबोधित करते हूए डॉ. नंदिनी गोकटे ने कहा कि हिंदी एक बहुत ही सरल एवं सुबोध भाषा है और वह देश के बड़े भू–भाग में बोली जाती है। हिंदी को भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है और इस स्थिति में हमारा नैतिक उत्तरदायित्व हो जाता है कि हम राष्ट्र हित में अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा (हिंदी) का अधिक–से–अधिक उपयोग कर इसका मान बढ़ाएं।





अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. ब्लेज डिसूजा ने संस्थान में राजभाषा(हिंदी) के बहुमुखी विकास हेतु उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपने प्रशासनिक कार्यों के अतिरिक्त वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में भी हिंदी का अधिक–से अधिक उपयोग करने का अनुरोध किया, क्योंकि हिंदी इस देश के जनसंपर्क की मुख्य भाषा है।

हिंदी सप्ताह उद्घाटन समारोह का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने किया और आभार श्री अ. अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना।

जब तक शरीर स्वस्थ है, इन्द्रियों की शक्ति क्षीण नहीं हुई है तथा बुढ़ापा नहीं आया है तब तक समझदार को अपने हित साध लेना चाहिए।

– भर्तृहरि

हिंदी सप्ताह : समापन समारोह रिपोर्ट - 2020
दिनांक : 24 सितंबर, 2020

नागपुर, वर्धा रोड स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर में बड़े ही उत्साह पूर्ण वातावरण में 'हिंदी सप्ताह : समापन समारोह' का आयोजन दिनांक : 24 सितम्बर, 2020 को किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता का पदभार संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने संभाला और साथ ही इस अवसर पर डॉ. ब्लेज डिसूजा, विभाग प्रमुख, फसल उत्पादन विभाग, डॉ. सिद्धार्थ वासनिक, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी कृषि विज्ञान केंद्र, श्री अ. अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर प्रमुख वक्ता के रूप में सादर मंचासीन थे।



सर्वप्रथम डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने अपने स्वागत भाषण में अध्यक्ष महोदय एवं इस अवसर पर सभागार में उपस्थित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए हिंदी सप्ताह समारोह के अंतर्गत आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं एवं संस्थान की विभिन्न हिंदी गतिविधियों से उन्हें अवगत कराया।

डॉ. विजय नामदेव वाघमारे ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा की हिंदी हमारे लिए केवल एक भाषा ही नहीं अपितु राष्ट्रीय अस्मिता की प्रतीक है जिसे राष्ट्र हित में मजबूत करना हम प्रत्येक भारतीय नागरिकों का कर्तव्य है। अतः इस दृष्टिकोण से राष्ट्रीय हित में अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा (हिंदी) का अधिक–से–अधिक उपयोग करना हमारा संवैधानिक उत्तरदायित्व है।





मुझे इस बात की खुशी है की संस्थान को राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने हेतु पिछले दो वर्षों से लगातार परिषद का प्रतिष्ठित राजर्षी टंडन राजभाषा पुरस्कार (प्रथम) प्राप्त हुआ जो की संस्थान के हिंदी अनुभाग के लिए ही नहीं अपितु संस्थान के लिए गौरव की बात हैं।

तदोपरांत इस समारोह के कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर के शुभहस्ते संस्थान में हिंदी सप्ताह समारोह –2020 के अंतर्गत आयोजित हिंदी संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिस्पर्धी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नकद पुरस्कार वितरित किए गए, जिसका विवरण निम्नानुसार है :

क्र.	विजेता का नाम	पुरस्कार स्थान
I	**हिंदी निबंध प्रतियोगिता – 'भारतीय कृषि दशा और दिशा'**	
1.	डॉ. पूजा वर्मा	प्रथम
2.	श्री जयभीम सुदाम कांबे	द्वितीय
3.	डॉ. रचना पाण्डे	तृतीय
4.	श्री सुजीत एच कुंभारे	प्रोत्साहन
5.	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम





6.	श्री एजाज अहमद	द्वितीय
7.	श्री कुणाल गायकवाड	तृतीय
8.	श्री सुनील एस कोडापे	प्रोत्साहन
II	**चित्र आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता**	
9.	श्री जयभीम सुदाम कांबे	प्रथम
10.	डॉ. रचना पाण्डे	द्वितीय
11.	श्री शीतल कुमार शर्मा	तृतीय
12.	डॉ. पूजा वर्मा	प्रोत्साहन
13.	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम
14.	डॉ. गौतम कुमार मजूमदार	द्वितीय
15.	श्री परेश भोयर	द्वितीय
16.	डॉ. बी. भार्गवी	तृतीय
17.	श्री सुनील एस कोडापे	तृतीय
18.	श्री कुणाल गायकवाड	प्रोत्साहन

III शब्दानुवाद प्रतियोगिता (अंग्रेजी से हिंदी में)

19.	डॉ. पूजा वर्मा	प्रथम
20.	श्री शीतल कुमार शर्मा	द्वितीय





21.	डॉ. रचना पाण्डे	तृतीय
22.	श्री जयभीम सुदाम कांबे	
23.	श्री सुशील मावले	प्रोत्साहन
24.	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम
25.	श्री राहुल सिंह	द्वितीय
26.	श्री कुणाल गायकवाड	तृतीय
27.	श्री एजाज अहमद	प्रोत्साहन
28.	डॉ. एनी देबोरा	प्रोत्साहन
29.	डॉ. जिम्मी वैद्य	प्रोत्साहन
30.	डॉ. बि. भार्गवि	प्रोत्साहन
31.	श्री सौरभ पाटिल	प्रोत्साहन

IV सामान्य ज्ञान/हिंदी बहुविकल्पी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता 'दो वर्गों में'

32.	डॉ. रचना पाण्डे	प्रथम
33.	डॉ. पूजा वर्मा	द्वितीय
34.	श्री जयभीम सुदाम कांबे	तृतीय
35.	श्री शीतल कुमार शर्मा	प्रोत्साहन
36.	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम
37.	डॉ. नीलकंठ हिरेमनि	द्वितीय
38.	श्री कुणाल गायकवाड	तृतीय
39.	श्री दिनेशकुमार माहुले	प्रोत्साहन
40.	श्री अक्षय किशोर कांबले	प्रोत्साहन



इस कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने किया और आभार श्री अ.अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने किया।

दुनिया की वस्तुओं में सुख की तलाश व्यर्थ है। आनंद का खजाना तो आपके अंदर ही है।

– स्वामी रामतीर्थ

भूल करना मनुष्य का स्वभाव है, की गई भूल को स्वीकार करना एवं उसे फिर न करने का प्रयास करना वीर एवं शूर होने का प्रतीक है।

– महात्मा गांधी

रत्नों से भरा रहने पर भी समुद्र मद में चूर नहीं होता, किंतु एक– आध मोती पा लेने से ही लोभी मदमस्त हो जाता है।

– अज्ञात

कृत्रिम प्रेम बहुत दिनों तक चल नहीं पाता। स्वाभाविक प्रेम की नकल नहीं हो सकती

– स्वामी रामतीर्थ

त्याग का आदर्श महान है और वही जगत में कुछ कर सकता है, जिसमें त्याग की मात्रा अधिक हो।

– महावीर स्वामी

हिंदी सप्ताह : उद्घाटन समारोह रिपोर्ट-2021
दिनांक : 07-14 सितंबर, 2021

नागपुर, वर्धा रोड स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर में बड़े ही उत्साह पूर्ण वातावरण में 'हिंदी सप्ताह (दिनांक : 07–14 सितंबर, 2021) समारोह' का विधिवत् उद्घाटन दिनांक : 07 सितम्बर, 2021 को डॉ. ब्लेज डिसूजा, प्रभारी निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर के शुभहस्ते दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।





(डॉ. ब्लेज डिसूजा, कार्यक्रमाध्यक्ष एवं डॉ. सुनील रोकड़े, प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी सप्ताह का विधिवत् उद्घाटन करते हुए।)

कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने इस सुअवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से हार्दिक स्वागत करते हुए उन्हें 'हिंदी सप्ताह (दिनांक : 14–21 सितंबर, 2020) समारोह' के अंतर्गत आयोजित किए जाने वाली विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं (हिंदी निबंध प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, चित्र आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता, शब्दानुवाद प्रतियोगिता एवं हिंदी शुद्ध लेखन प्रतियोगिता) की जानकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को देते हुए उनसे यह आग्रह किया कि वे इन विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में अधिक–से–अधिक की संख्या में भाग लेकर इस आयोजन को सफल बनाएँ ।





(संस्थान में हिंदी सप्ताह समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिता का परिदृश्य)

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता का पदभार डॉ. ब्लेज डिसूजा, प्रभारी निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने संभाला और साथ ही इस अवसर पर राजभाषा कार्यान्वय समिति के सह–सभापति डॉ. सुनील रोकडे, प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा), भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर मंचासीन प्रमुख वक्ता के रूप में सभा को संबोधित करते हुए डॉ. सुनील रोकड़े ने कहा कि हिंदी एक बहुत ही सरल एवं सुबोध भाषा है और वह देश के बड़े भू–भाग में बोली जाती है। हिंदी को भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है और इस

स्थिति में हमारा नैतिक उत्तरदायित्व हो जाता है कि हम राष्ट्र हित में अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा (हिंदी) का अधिक–से–अधिक उपयोग कर इसका मान बढ़ाएं।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ. ब्लेज डिसूजा ने संस्थान में राजभाषा(हिंदी) के बहुमुखी विकास हेतु उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपने प्रशासनिक कार्यों के अतिरिक्त वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में भी हिंदी का अधिक–से अधिक उपयोग करने का अनुरोध किया, क्योंकि हिंदी इस देश के जनसंपर्क की मुख्य भाषा है।





(हिंदी सप्ताह उद्घाटन समारोह का परिदृश्य)

हिंदी सप्ताह उद्घाटन समारोह का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने किया और आभार डॉ. पूजा वर्मा, वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना।

ब्रह्मांड अपनी सृष्टि स्वयं करता है। स्वयं विघटित होता है। स्वयं अभिव्यक्त भी होता है।

– स्वामी विवेकानंद

यदि विचारों को सजाकर मधुर ढंग से व्यक्त करने वाला प्राप्त हो तो संसार शीघ्र उसके आदेशों को सुनेगा।

– तिरूवल्लुर

जो बुद्धिमान है उसे सभी प्रकार के बल प्राप्त हैं। वह सभी प्रतिकूल परिस्थितियों का मुकाबला सहजता से करते हुए उन पर विजय प्राप्त कर लेता है।

– चाणक्य

पढ़ना तो बहुत जानते हैं, पर क्या पढ़ना है, यह कोई नहीं जानता।

– प्रेमचंद

स्मृति पीछे नजर डालती है, आशा आगे की ओर।

– अज्ञात

व्यक्ति को जरूरत से ज्यादा सरल व ईमानदार नहीं होना चाहिए। सीधे तने के पेड़ सबसे पहले काटे जाते हैं।

– चाणक्य

स्त्री पुरूष की सहचरी है जो किसी भी दृष्टि से उससे कम नहीं है।

– महात्मा गांधी

हिंदी सप्ताह : समापन समारोह रिपोर्ट-2021
दिनांक : 14 सितंबर, 2021

नागपुर, वर्धा रोड स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर में बड़े ही उत्साह पूर्ण वातावरण में 'हिंदी सप्ताह : समापन समारोह' का आयोजन दिनांक : 14 सितम्बर, 2021 को किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता का पदभार संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने संभाला और साथ ही इस अवसर पर डॉ. नंदिनी गोकटे नरखेडकर, विभाग प्रमुख, फसल संरक्षण विभाग, डॉ. सुनील रोकड़े, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, श्री अ.अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर प्रमुख वक्ता के रूप में सादर मंचासीन थे।



(डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा), हिंदी सप्ताह समापन समारोह का संचालन करते हुए)

डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने अपने स्वागत भाषण में अध्यक्ष महोदय एवं इस अवसर पर सभागार में उपस्थित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए हिंदी सप्ताह समारोह के अंतर्गत आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं एवं संस्थान की विभिन्न हिंदी गतिविधियों से सभा को अवगत कराया। साथ ही मुझे इस बात की खुशी है कि संस्थान को राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने हेतु तीन बारे लगातार परिषद का प्रतिष्ठित राजर्षी टंडन राजभाषा पुरस्कार (प्रथम) प्राप्त हुआ जो की संस्थान के हिंदी अनुभाग के लिए ही नहीं अपितु संस्थान के लिए गौरव की बात हैं।

साथ ही इस अवसर पर डॉ. सुनील रोकड़े ने अपने संबोधन में हिंदी को राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने वाली सरल, सुबोध एवं जनसंपर्क मुख्य भाषा बतलाते हुए माननीय कैलाश चौधरी, कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार के प्रेरणादायी हिंदी संदेश को सभा के समक्ष पढ़कर सुनाया। इसी क्रम में डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने माननीय त्रिलोचन महापात्र, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक, भारतीय कृषि परिषद, नई दिल्ली से प्राप्त प्रेरणादायी हिंदी संदेश को सभा के समक्ष पढ़कर सुनाया। तदउपरांत डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने संस्थान की राजभाषा हिंदी संबंधित विभिन्न गतिविधियों एवं उपलब्धियो का विस्तृत विवरण सभा के समक्ष प्रस्तुत किया।





(डॉ. सुनील रोकड़े, प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, नागपुर एवं डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक सभा के समक्ष हिंदी संदेश पढ़ते हुए)

श्री अ.अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए कहां की देश के स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी का बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सही अर्थो में देखा जाये तो हिंदी राष्ट्रीय एकता एवं चेतना को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली बड़ी ही सशक्त भाषा है।



(श्री अ.अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी सभा को संबोधित करते हुए)



(डॉ. (श्रीमती) नंदिनी गोकटे नरखेडकर, विभाग प्रमुख, फसल संरक्षण विभाग सभा को संबोधित करते हुए)

डॉ. (श्रीमती) नंदिनी गोकटे नरखेडकर, विभाग प्रमुख, फसल संरक्षण विभाग ने प्रमुख वक्ता के रूप में सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी से राष्ट्रीय एकता को बल मिलता ही है और साथ ही भाषाविज्ञान के दृष्टिकोण से हिंदी में ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न संकायों को अभिव्यक्ती प्रदान करने का पूर्णरूपेन सामर्थ्य है। अतः राष्ट्रीय हित में हमें इसे अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में अपनाना होगा।

तदोपरांत इस समारोह के कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. वाय. जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर एवं मंचासीन मान्यवरों के शुभहस्ते संस्थान में हिंदी सप्ताह समारोह –2021 के अंतर्गत आयोजित हिंदी संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिस्पर्धी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नकद पुरस्कार वितरित किए गए, जिसका विवरण निम्नानुसार है : –

क्र.	विजेता का नाम	पुरस्कार स्थान
	हिंदी निबंध प्रतियोगिता - 'भारतीय कृषि दशा और दिशा' (हिंदी भाषी वर्ग)	
1.	डॉ. सुनील निलकंठ रोकड़े	प्रथम
2.	डॉ. रचना पाण्डे	द्वितीय
3.	डॉ. पूजा वर्मा	तृतीय
	हिंदी निबंध प्रतियोगिता - 'भारतीय कृषि दशा और दिशा' (हिंदीतर भाषी वर्ग)	
4.	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम
5.	श्री जयभिम कांबे	द्वितीय
6.	श्री कृष्णा गजघाटे	तृतीय
	सामान्य ज्ञान/हिंदी बहुविकल्पी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता 'दो वर्गों में' (हिंदी भाषी वर्ग)	
7.	डॉ. सुनिल निलकंठ रोकड़े	प्रथम
8.	डॉ. पूजा वर्मा	द्वितीय
9.	डॉ. रचना पाण्डे	द्वितीय
10.	श्री होमराज रत्नाकर मुन्दाफले	द्वितीय
11.	श्री प्रफुल मारगाये	तृतीय
12.	श्री शीतल कुमार शर्मा	तृतीय
13.	श्री विजय एम. वाघमारे	तृतीय
14.	श्री राकेश तिवारी	तृतीय
15.	जयश्री खोब्रागडे	सांत्वना
16.	श्री कृष्णा गजघाटे	सांत्वना
17.	डॉ. दिपा लाल	सांत्वना
	सामान्य ज्ञान/हिंदी बहुविकल्पी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता 'दो वर्गों में' (हिंदीतर भाषी वर्ग)	
18.	श्रीमती रमा गजानन अय्यर	प्रथम
19.	डॉ. निलकंठ हिरेमनी	द्वितीय

20.	श्री चंद्रशेखर आर. मुन्दाफले	द्वितीय
21.	श्री कुणाल गायकवाड	तृतीय
22.	श्रीमती पूजा भास्करराव घोंगे	तृतीय
23.	श्रीमती वृषाली देशमुख	तृतीय
24.	डॉ जिम्मी वैद्य	तृतीय
25.	श्री जयभिम कांबे	तृतीय
26.	श्री परेश गंगाधरराव भोयर	सांत्वना
27.	श्रीमती मिथिला मेश्राम	सांत्वना
28.	श्रीमती रचना देशमुख	सांत्वना
29.	कपिल भास्करराव नंदेश्वर	सांत्वना
30.	सौरभ किशोर पाटिल	सांत्वना
	चित्र आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता (हिंदी भाषी वर्ग)	
31.	डॉ. सुनील निलकंठ रोकड़े	प्रथम
32.	डॉ. रचना पाण्डे	द्वितीय
33.	डॉ. पूजा वर्मा	तृतीय
34.	श्री शीतल कुमार शर्मा	सांत्वना
	चित्र आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी वर्ग)	
35.	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम
36.	डॉ नीलकंठ हिरेमणी	द्वितीय
37.	श्रीमती रचना देशमुख	द्वितीय
38.	डॉ. सविता संतोष	तृतीय
39.	श्रीमती जयश्री खाब्रागडे	तृतीय
40.	श्री जयभिम सुदाम कांबे	तृतीय
41.	श्री कृष्णा शेषराव गजघाटे	सांत्वना
42.	श्री सौरभ किशोर पाटील	सांत्वना
43.	श्री कुणाल गायकवाड	सांत्वना
	शब्दानुवाद प्रतियोगिता - अंग्रेजी से हिंदी में (हिंदी भाषी वर्ग)	
44	डॉ. सुनील निलकंठ रोकड़े	प्रथम
45	डॉ. रचना पाण्डे	द्वितीय
46	डॉ. पूजा वर्मा	तृतीय
47	श्री शीतल कुमार शर्मा	सांत्वना
	शब्दानुवाद प्रतियोगिता - अंग्रेजी से हिंदी में (हिंदीतर भाषी वर्ग)	
48	डॉ नीलकंठ हिरेमणी	प्रथम
49	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम
50	श्रीमती रचना देशमुख	द्वितीय
51	श्री प्रवीण अंबादे	द्वितीय
52	श्री कुणाल गायकवाड	तृतीय
53	श्री जयभिम कांबे	तृतीय
54	डॉ. सविता संतोष	तृतीय
55	श्री कृष्णा गजघाटे	सांत्वना

56	श्रीमती जयश्री खोब्रागडे	सांत्वना
57	श्री सौरभ किशोर पाटील	सांत्वना
	हिंदी शुध्दलेखन प्रतियोगिता - अंग्रेजी से हिंदी में (हिंदी भाषी वर्ग)	
58	डॉ. सुनील निलकंठ रोकड़े	प्रथम
59	डॉ. पूजा वर्मा	द्वितीय
60	डॉ. रचना पाण्डे	द्वितीय
61	श्री शीतल कुमार शर्मा	तृतीय
62	डॉ. दिपा लाल	तृतीय
63	श्री जयभिम कांबे	तृतीय
64	श्री राहुल प्रभाकर सिंग	सांत्वना
	हिंदी शुध्दलेखन प्रतियोगिता - अंग्रेजी से हिंदी में (हिंदीतर भाषी वर्ग)	
65	श्रीमती रमा गजानन अय्यर	प्रथम
66	डॉ नीलकंठ हिरेमणी	द्वितीय
67	श्रीमती वृषाली देशमुख	द्वितीय
68	श्रीमती मिथिला मेश्राम	तृतीय
69	डॉ. सविता संतोष	तृतीय
70	श्री कुणाल गायकवाड	सांत्वना
71	श्रीमती पूजा घोंगे	सांत्वना
72	डॉ. जिम्मी वैद्य	सांत्वना
73	श्रीमती रोशनी उईके	हिंदी सहकार्य हेतु



(डॉ. वाय. जी. प्रसाद विजेता अधिकारी एवं कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए)





(हिंदी सप्ताह पुरस्कार समारोह का परिदृश्य)

डॉ. वाय.जी. प्रसाद ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि हिंदी से राष्ट्रीय एकता को बल मिलता है। हिंदी हमारे लिए केवल एक भाषा ही नहीं अपितु राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक है जिसे राष्ट्र हित में मजबूत करना हम प्रत्येक भारतीय नागरिक का कर्तव्य है। अतः इस दृष्टिकोण से राष्ट्रीय हित में अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा (हिंदी) का अधिक–से–अधिक उपयोग करना हमारा संवैधानिक उत्तरदायित्व है।





(डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनुप.–केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर अध्यक्षीय संबोधन करते हुए)



(डॉ. पूजा वर्मा, वैज्ञानिक आभार प्रदर्शन करते हुए।)

इस कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने किया और आभार डॉ. पूजा वर्मा, वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने किया।

हिंदी सप्ताह : उद्घाटन समारोह रिपोर्ट-2022
दिनांक : 07-14 सितंबर, 2022

नागपुर, वर्धा रोड स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर में बड़े ही उत्साह पूर्ण वातावरण में 'हिंदी सप्ताह (दिनांक : 07 – 14 सितंबर, 2022) समारोह' का विधिवत् उद्घाटन दिनांक : 07 सितम्बर, 2022 को डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर के शुभहस्ते दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।




(डॉ. वाय.जी. प्रसाद, कार्यक्रमाध्यक्ष एवं डॉ. एस.एन. तिवारी (मुख्य अतिथि) दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी सप्ताह का विधिवत् उद्घाटन करते हुए।)

कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने इस सुअवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से हार्दिक स्वागत करते हुए उन्हें 'हिंदी सप्ताह (दिनांक : 07–14 सितंबर, 2022) समारोह' के अंतर्गत आयोजित किए जाने वाली विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं (हिंदी गीत गायन, चित्र आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता, हिंदी शुद्ध लेखन प्रतियोगिता, शब्दानुवाद प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान/हिंदी बहुविकल्पी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता एवं हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता) की जानकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को देते हुए उनसे यह आग्रह किया कि वे इन विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में अधिक–से–अधिक की संख्या में भाग लेकर इस आयोजन को सफल बनाएँ ।





(डॉ. वाय.जी. प्रसाद, कार्यक्रमाध्यक्ष एवं डॉ. एस.एन. तिवारी (मुख्य अतिथि) सभा को संबोधित करते हुए।)





(संस्थान में हिंदी सप्ताह समारोह के दौरान आयोजित हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता में सहभागी श्री जयभिम कांबे एवं श्रीमती रचना देशमुख)

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता का पदभार डॉ. वाय. जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने संभाला और मुख्य अतिथि के रूप में डॉ एस. एन. तिवारी, सेवानिवृत्त प्रोफेसर एवं पूर्व निदेशक(अनुसंधान), गोविंद वल्लभ पंत कृषि एवं प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय एवं गणमान्य उपस्थिति के रूप में डॉ ब्लेज डिसूजा, विभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन विभाग, डॉ. नंदिनी गोकटे नरखेड़कर, विभागाध्यक्ष, फसल संरक्षण विभाग, डॉ. सुनील रोकडे, प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा), भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर प्रमुख रूप से मंचासीन थें।



(हिंदी सप्ताह उद्घाटन समारोह के अवसर पर अध्यक्षीय संबोधन करते हुए डॉ. वाय. जी. प्रसाद)

डॉ. वाय. जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने अपने स्वागत संबोधन में संस्थान की ओर से मुख्य अतिथि के रूप में सादर आमंत्रित डॉ. एस. एन. तिवारी, सेवानिवृत्त प्रोफेसर एवं पूर्व निदेशक(अनुसंधान), गोविंद वल्लभ पंत कृषि एवं प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय एवं मंचासीन महानुभवों तथा सभागार में उपस्थित समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कहा की हिंदी से राष्ट्रीय एकता को बल मिलता है और संवैधानिक रूप से इस राजभाषा का दर्जा प्राप्त होने के कारणवश हमारा यह नैतिक उत्तरदायित्व बन पड़ता है कि इसे हम अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में अपनाकर इसका मान बढ़ायें।

डॉ. एस. एन. तिवारी, सेवानिवृत्त प्रोफेसर एवं पूर्व निदेशक (अनुसंधान), गोविंद वल्लभ पंत कृषि एवं प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महोदय अपने मुख्य संबोधन में सभागार में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी हमारे लिए राष्ट्रीय अस्मिता का





(डॉ. एस.एन. तिवारी (मुख्य अतिथि) का स्वागत करती हुई डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं हिंदी सप्ताह समारोह के अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए डॉ. तिवारी)

प्रतिक है और भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हिंदी एक बहुत ही सरल–सुबोध एवं सशक्त भाषा है। अतः इस देश के स्वतंत्र एवं राष्ट्रवादी नागरिक होने के नाते हमारा यह नैतिक उत्तरदायित्व है की हम इसे ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में इसका उपयोग कर देश की इस राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाएं, ताकि इससे राष्ट्रीय विकास को गति मिलें।

डॉ. नंदिनी गोकटे नरखेड़कर, विभागाध्यक्ष, फसल संरक्षण विभाग ने इस अवसर पर मंचासीन प्रमुख वक्ता के रूप में सभा को संबोधित करते हुए कहा कि आज यह समय की आवश्यक्ता है कि राष्ट्रीय विकास को गति प्रदान करने के उद्देश्य से हमें अपने–अपने कार्य क्षेत्र में हिंदी को आगे बढ़ाना होगा, ताकि देश का बहुमुखी विकास देश की भाषा में हो सकें।

डॉ. सुनील रोकड़े, प्रभारी, कृषि विज्ञान केंद्र, नागपुर ने इस अवसर पर मंचासीन प्रमुख वक्ता के रूप में सभा को संबोधित करते हुए कहा कि देश के अधिकांश किसानों की भाषा हिंदी है। अतः इस दृष्टिकोण से हम वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारियों का यह उत्तरदायित्व बन पड़ता है कि हम अपने कृषि क्षेत्र के ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में हिंदी को अपनाकर देश के विकास को गति प्रदान करें।

हिंदी सप्ताह उद्घाटन समारोह के अवसर पर 'हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता' का आयोजन बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में किया गया। इस प्रतियोगिता का आयोजन डॉ. ब्लेज डिसूजा, विभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन विभाग कि अध्यक्षता में किया गया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में डॉ. नंदिनी गोकटे नरखेड़कर, विभागाध्यक्ष, फसल संरक्षण विभाग, डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं श्रीमती रसिका कुलकणी, सहायक प्रशासनिक अधिकारी का समावेश था। इस प्रतियोगिता का परिणाम निम्नानुसार है :

<u>हिंदीतर भाषी वर्ग</u> –
प्रथम : डॉ. जी बालासुब्रमणी, प्रधान वैज्ञानिक
द्वितीय : श्रीमती रमा अय्यर, निजी सचिव

<u>हिंदी भाषी वर्ग</u> –
प्रथम : श्रीमती पुष्पा महल्ले, कुशल कार्मिक
द्वितीय : श्री जयभिम कांबे, तकनिशियन
तृतीय : श्रीमती रचना देशमुख, तकनीकी अधिकारी



(हिंदी सप्ताह : उद्घाटन समारोह के दौरान प्रमुख वक्ता के रूप में सभा को संबोधित करते हुए डॉ. ब्लेज डिसूजा, डॉ. नंदिनी गोकटे नरखेडकर एवं सुनिल रोकडे)

डॉ. ब्लेज डिसूजा, विभागाध्यक्ष, फसल उत्पादन विभाग ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में संस्थान में राजभाषा(हिंदी) के बहुमुखी विकास हेतु उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपने प्रशासनिक कार्यों के अतिरिक्त वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में भी हिंदी का अधिक–से अधिक उपयोग करने का अनुरोध किया, क्योंकि हिंदी इस देश के जनसंपर्क की मुख्य भाषा है और हिंदी हम में राष्ट्रीय सद्भावना एवं एकता का निर्माण करती है।

हिंदी सप्ताह उद्घाटन समारोह का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने किया और आभार डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प. –केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना।

कृषि में खरपतवार हटाना उतना ही आवश्यक है जितनी की बुआई जरूरी है।

– महात्मा गांधी

हिंदी सप्ताह : समापन समारोह रिपोर्ट-2022
दिनांक : 14 सितंबर, 2022

नागपुर, वर्धा रोड स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर में बड़े ही उत्साह पूर्ण वातावरण में 'हिंदी सप्ताह : समापन समारोह' का आयोजन दिनांक : 14 सितम्बर, 2022 को किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता का पदभार संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने संभाला और साथ ही इस अवसर पर डॉ. सुनील रोकड़े, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, श्री अ. अं. गोस्वामी, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर प्रमुख वक्ता के रूप में सादर मंचासीन थे।



(डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा), हिंदी सप्ताह : समापन समारोह का संचालन करते हुए)

डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने अपने स्वागत भाषण में अध्यक्ष महोदय एवं इस अवसर पर सभागार में उपस्थित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए हिंदी सप्ताह समारोह के अंतर्गत आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं एवं संस्थान की विभिन्न हिंदी गतिविधियों से सभा को अवगत कराया। साथ ही इस अवसर पर श्री अ अं गोस्वामी, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने अपने संबोधन में हिंदी को राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने वाली सरल, सुबोध एवं जनसंपर्क के लिए मुख्य भाषा बतलाते हुए कहां की देश के स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी का बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सही अर्थो में देखा जाएं तो हिंदी राष्ट्रीय एकता एवं चेतना को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली बड़ी ही सशक्त भाषा है। अतः राष्ट्रीय हित में हमें इसे अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में अपनाना होगा।

तदोपरांत इस समारोह के कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. वाय. जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर एवं मंचासीन मान्यवरों के शुभहस्ते संस्थान में हिंदी सप्ताह समारोह–2022 के अंतर्गत आयोजित हिंदी संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिस्पर्धी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नकद पुरस्कार वितरित किए गए, जिसका विवरण निम्नानुसार है : –

क्र.	विजेता का नाम	पुरस्कार स्थान
	हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता (हिंदी भाषी वर्ग)	
1.	श्रीमती पुष्पा महल्ले	प्रथम
2.	श्री जयभीम सुदाम कांबे	द्वितीय

3.	श्रीमती रचना देशमुख	तृतीय
	हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी वर्ग)	
4.	डॉ. जी. बालासुब्रमणी	प्रथम
5.	श्रीमती रमा अय्यर	द्वितीय
	चित्र आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता (हिंदी भाषी वर्ग)	
6.	डॉ रचना पाण्डे	प्रथम
7.	डॉ. पूजा वर्मा	द्वितीय
8.	डॉ. दिपा लाल	द्वितीय
9.	श्री शीतल कुमार शर्मा	तृतीय
10.	श्री अब्दुल वसीम	सांत्वना
11.	श्री सौरभ पाटिल	सांत्वना
	चित्र आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी वर्ग)	
12.	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम
13.	डॉ. बाबासाहेब फंड	प्रथम
14.	डॉ. निलकंठ हिरेमणि	द्वितीय
15.	डॉ. सूनिल रोकडे	द्वितीय
16.	श्री जयभिम कांबे	तृतीय
17.	डॉ जिम्मी वैद्य	तृतीय
18.	श्रीमती रचना देशमुख	तृतीय
19.	श्रीमती जयश्री खोब्रागडे	सांत्वना
20.	श्री होमराज मुंडाफले	सांत्वना
21.	डॉ शैलेश गावंडे	सांत्वना
22.	मिथिला मेश्राम	सांत्वना
23.	डॉ वृषाली देशमुख	सांत्वना
24.	श्री कुणाल गायकवाड	सांत्वना
	हिंदी शुध्द लेखन प्रतियोगिता (हिंदी भाषी वर्ग)	
25.	डॉ. रचना पाण्डे	प्रथम
26.	डॉ. पूजा वर्मा	प्रथम
27.	डॉ दिपा लाल	द्वितीय
28.	श्रीमती सुनिता चौहान	द्वितीय
29.	श्री शीतल कुमार शर्मा	द्वितीय
30.	श्रीमती पूजा ठाकूर	तृतीय
31.	श्री जयभिम कांबे	तृतीय
32.	श्रीमती जयश्री खोब्रागडे	सांत्वना
33.	श्री सौरभ पाटिल	सांत्वना
34.	श्री अब्दुल वसीम	सांत्वना
	हिंदी शुध्द लेखन प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी वर्ग)	
35.	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम
36.	डॉ. सूनिल रोकडे	प्रथम
37.	डॉ. बाबासाहेब फंड	प्रथम
38.	डॉ. निलकंठ हिरेमणि	द्वितीय
39.	श्रीमती रचना देशमुख	द्वितीय
40.	श्री होमराज मुंडाफले	द्वितीय
41.	डॉ जिम्मी वैद्य	तृतीय

42.	डॉ. वृषाली देशमुख	तृतीय
43.	डॉ. शैलेश गावंडे	सांत्वना
44.	श्री परेश भोयर	सांत्वना
45.	श्रीमती मिथिला मेश्राम	सांत्वना
46.	श्री कुणाल गायकवाड	सांत्वना
	शब्दानुवाद प्रतियोगिता (अंग्रेजी से हिंदी में) (हिंदी भाषी वर्ग)	
47.	डॉ. रचना पाण्डे	प्रथम
48.	डॉ. पूजा वर्मा	प्रथम
49.	श्रीमती पूजा ठाकूर	द्वितीय
50.	श्री कुणाल गायकवाड	द्वितीय
51.	श्री शीतल कुमार शर्मा	तृतीय
52.	श्री अब्दुल वसीम	तृतीय
53.	श्री मयुर मेश्राम	सांत्वना
54.	सुश्री ज्ञानेश्वरी मेश्राम	सांत्वना
	शब्दानुवाद प्रतियोगिता (अंग्रेजी से हिंदी में) (हिंदीतर भाषी वर्ग)	
55.	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम
56.	डॉ निलकंठ हिरेमणी	प्रथम
57.	डॉ सुनिल रोकडे	प्रथम
58.	डॉ प्रभुलिंगा टी.	द्वितीय
59.	डॉ बाबासाहेब फंड	द्वितीय
60.	श्री प्रवीण अंबादे	द्वितीय
61.	श्री होमराज मुंडाफले	तृतीय
62.	श्रीमती मिथिला मेश्राम	तृतीय
63.	श्री कृष्णा गजघाटे	सांत्वना
64.	श्री सौरभ पाटिल	सांत्वना
65.	श्री आर एम रामटेके	सांत्वना
	सामान्य ज्ञान/हिंदी बहुविकल्पी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (हिंदी भाषी वर्ग)	
66.	डॉ पूजा वर्मा	प्रथम
67.	डॉ रचना पाण्डे	द्वितीय
68.	श्री शीतल कुमार शर्मा	द्वितीय
69.	श्री कुणाल गायकवाड	तृतीय
70.	श्री अब्दुल वसीम	तृतीय
71.	श्रीमती पूजा ठाकूर	सांत्वना
	सामान्य ज्ञान/हिंदी बहुविकल्पी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी वर्ग)	
72.	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम
73.	डॉ. निलकंठ हिरेमणि	द्वितीय
74.	डॉ. प्रभुलिंगा टी.	तृतीय
75.	डॉ. बाबासाहेब फंड	तृतीय
76.	श्री प्रफुल मारगाये	तृतीय
77.	श्री अक्षय कांबले	तृतीय
78.	श्री मयुर कुमार मेश्राम	सांत्वना
79.	श्री कृष्णा गजघाटे	सांत्वना
80.	श्री आर एम रामटेके	सांत्वना
81.	श्री सौरभ पाटिल	सांत्वना

82.	श्री प्रविण अंबादे	सांत्वना
83.	श्री परेश भोयर	सांत्वना
	हिंदी निबंध प्रतियोगिता - किसानों की आय दोगुनी करने हेतु उपाय (हिंदी भाषी वर्ग)	
84.	डॉ रचना पाण्डे	प्रथम
85.	डॉ पूजा वर्मा	प्रथम
86.	डॉ दीपा लाल	द्वितीय
87.	श्री रोहित कटियार	द्वितीय
88.	सुश्री ज्ञानेश्वरी मेश्राम	द्वितीय
89.	श्री अब्दुल वसीम	तृतीय
	हिंदी निबंध प्रतियोगिता - किसानों की आय दोगुनी करने हेतु उपाय (हिंदीतर भाषी वर्ग)	
90.	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम
91.	डॉ सूनिल रोकडे	प्रथम
92.	सुश्री वैष्णवी अय्यर	द्वितीय
93.	डॉ बाबासाहेब फंड	द्वितीय
94.	डॉ वृषाली देशमुख	द्वितीय
95.	श्रीमती रचना देशमुख	तृतीय
96.	श्री जयभिम कांबे	तृतीय
97.	श्रीमती पूजा घोंगे	सांत्वना
	हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता (हिंदी भाषी वर्ग)	
98.	श्रीमती पूजा ठाकूर	प्रथम
99.	श्री शीतल कुमार शर्मा	द्वितीय
100.	डॉ दीपा लाल	तृतीय
101.	श्रीमती सुनीता चौहान	सांत्वना
102.	श्री मयुर कुमार मेश्राम	सांत्वना
	हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता (हिंदीतर भाषी वर्ग)	
103.	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम
104.	श्री जयभिम कांबे	प्रथम
105.	डॉ बबासाहेब फंड	द्वितीय
106.	श्रीमती रचना देशमुख	द्वितीय
107.	डॉ सुनील रोकडे	तृतीय
108.	श्रीमती चैताली रोडगे	तृतीय
109.	श्री भुमेश्वर फंदे	सांत्वना
110.	श्रीमती जयश्री खोब्रागडे	सांत्वना
111	श्रीमती रोशनी उईके	हिंदी प्रबंधन कार्य हेतु







(डॉ. वाय. जी. प्रसाद विजेता अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए)

डॉ. वाय. जी. प्रसाद ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि हिंदी से राष्ट्रीय एकता को बल मिलता ही है और साथ ही भाषाविज्ञान के दृष्टिकोण से हिंदी में ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न संकायों को अभिव्यक्ती प्रदान करने का पूर्णरूपेन सामर्थ्य है। अतः राष्ट्रीय हित में हमें इसे अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में अपनाना होगा। हिंदी हमारे लिए केवल एक भाषा ही नहीं अपितु राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक है जिसे राष्ट्र हित में मजबूत करना हम प्रत्येक भारतीय नागरिकों का कर्तव्य है। अतः इस दृष्टिकोण से राष्ट्रीय हित में अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा (हिंदी) का अधिक–से–अधिक उपयोग करना हमारा संवैधानिक उत्तरदायित्व है।

इस कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने किया एवं आभार डॉ. सूनिल रोकडे, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना।

शिक्षा का उद्देश्य हमारी अन्तर्दृष्टी को परिपक्व, दृष्टिकोण को व्यापक और विचारधारा को अर्थपूर्ण बनाना है।

– डॉ. एस. राधाकृष्णन

हमें अपनी सभी प्रादेशिक कार्यवाहियाँ अपनी–अपनी प्रांतीय भाषाओं में चलानी चाहिए तथा हमारी राष्ट्रीय कार्यवाहियों की भाषा हिंदी होनी चाहिए।

– महात्मा गांधी

पाँच वर्ष तक पुत्र को प्यार करें, दस वर्ष तक पुत्र को अच्छे मार्ग पर चलाने के लिए दण्डित कर सकते हो, लेकिन सोलह वर्ष के बाद पुत्र को मित्र की भांति स्वीकार कर लो।

– चाणक्य

भारतीय भाषा ही राष्ट्रभाषा हो सकती है, कोई विदेशी भाषा नहीं।

– हिदायतुल्ला खाँ

कोई भाषा ऐसी हो, जिसे सब बोल सकें, जो एक कड़ी की तरह सबको मिला–जुला कर रख सके। इसलिए हिंदी को बढ़ाबा देना सबका काम है।

– इंदिरा गांधी

घर के आँगन में जैसे तुलसी दल या सुहागन के माथे पर बिंदी। देवता के मुकुट पर जैसे फूल, वैसे ही भारत के भाल पर हिंदी।

– गोविन्द प्रसाद श्रीवास्तव

हिंदी सप्ताह : उद्घाटन समारोह रिपोर्ट-2023
दिनांक : 14-22 सितंबर, 2023

नागपुर, वर्धा रोड स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर में बड़े ही उत्साह पूर्ण वातावरण में 'हिंदी सप्ताह (दिनांक : 14–22 सितंबर, 2023) समारोह' का विधिवत् उद्घाटन दिनांक : 14 सितम्बर, 2023 को डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर के शुभहस्ते दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।





(डॉ. वाय.जी. प्रसाद, कार्यक्रमाध्यक्ष महोदय दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी सप्ताह का विधिवत् उद्घाटन एवं उद्घाटन भाषण करते हुए।)

कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने इस सुअवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से हार्दिक स्वागत करते हुए उन्हें 'हिंदी सप्ताह (दिनांक : 14–22 सितंबर, 2023) समारोह' के अंतर्गत आयोजित किए जाने वाली विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं (हिंदी गीत गायन, चित्र आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता, हिंदी शुद्ध लेखन प्रतियोगिता, शब्दानुवाद प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान/हिंदी बहुविकल्पी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता एवं हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता) की जानकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को देते हुए उनसे यह आग्रह किया कि वे इन विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में अधिक–से–अधिक की संख्या में भाग लेकर इस आयोजन को सफल बनाएँ ।







(डॉ. वाय.जी. प्रसाद, डॉ. बालासुब्रमणि एवं डॉ. गणेश बेहेरे हिंदी सप्ताह समारोह के सुअवसर पर सभा को संबोधित करते हुए)









(डॉ. अर्जुन तायडे, डॉ. एम. वेणुगोपालन, श्री अ.अं. गोस्वामी एवं श्री संजय कुमार सिंह हिंदी सप्ताह समारोह के सुअवसर पर सभा को संबोधित करते हुए)

साथ ही इस अवसर पर मंचासिन महानुभवों द्वारा संस्थान में राजभाषा हिंदी के सक्रिय प्रचार–प्रचार हेतु सभा को संबोधित किया गया संस्थान के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री अ.अं. गोस्वामी ने परिषद से प्राप्त सचिव डेयर एवं महानिदेशक महोदय का हिंदी संदेश पढ़कर सुनाया। श्री संजय कुमार सिंह वित्त एवं लेखा अधिकारी ने अपने संबोधन में कहा कि अपने दैनिक कार्यालयिन कार्यों में हिंदी का उपयोग करना हमारा यह नैतिक उत्तरदायित्व है। डॉ. एम. वेणुगोपालन, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी पीएमई ने इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी हम में आपसी भाई–चारे को बढ़ाती है। डॉ. बालासुब्रमणि, विभागप्रमुख, फसल सुधार विभाग ने सभा को संबोधित करते हुए बताया कि हिंदी इस देश की जनसंपर्क की मुख्य भाषा है। डॉ. अर्जुन तायडे, विभागप्रमुख, फसल उत्पादन विभाग ने इस अवसर पर कहा कि हिंदी इस देश के किसानों एवं आमजनों की लोकप्रिय भाषा है। डॉ. गणेश बेहेरे, विभागप्रमुख, फसल संरक्षण विभाग ने इस अवसर पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी इस देश की संवैधानिक रूप से राजभाषा है। अतः हमें अपने कार्यालयिन कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक उपयोग करना हमारा यह नैतिक उत्तरदायित्व हो जाता है।

डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने अपने अध्यक्षिय संबोधन में सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी हमारे लिए राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतिक है। अतः इस दृष्टिकोण से हिंदी को बढ़ावा देकर हमें राष्ट्रीय विकास को गति प्रदान करना होगा।



(संस्थान में आयोजित हिंदी सप्ताह : उद्घाटन समारोह का परिदृश्य)

कार्यक्रम का संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने किया एवं सभा का आभार श्रीमती रमा अय्यर, निजी सचिव ने किया।

हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता :



(संस्थान में आयोजित हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता का परिदृश्य)

हिंदी सप्ताह : उद्घाटन समारोह के पश्चात संस्थान में हिंदी सप्ताह समारोह के अंतर्गत हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के अधिकांश अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लेकर इस आयोजन को सफल बनाया। इस प्रतियोगिता का परिणाम निम्नानुसार है : 1. श्री विठ्ठल पात्रिकर (प्रथम) 2. श्री प्रदिप धाकडे (द्वितीय), 3. श्रीमती पुष्पा महल्ले एवं श्रीमती पूजा घोंगे (तृतीय), 4. श्री जयभिम कांबे, श्री ई. रघु एवं श्री प्रविण अंबादे (सांत्वना) हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल की भूमिका का निर्वाह इंजि. गौतम मजूमदार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं श्रीमती स्वाती दिक्षित, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने किया। इस गीत गायन प्रतियोगिता का संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने किया।

भाषा विचार का परिधान है। – **डॉ. जॉनसन**

मातृभाषा का अनादर, माँ के अनादर के बराबर है। – **महात्मा गांधी**

हिंदी सप्ताह : समापन समारोह रिपोर्ट -2023
दिनांक : 22 सितंबर, 2023

नागपुर, वर्धा रोड स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर में बड़े ही उत्साह पूर्ण वातावरण में 'हिंदी सप्ताह : समापन समारोह' का आयोजन दिनांक : 22 सितम्बर, 2023 को किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता का पदभार संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने संभाला और साथ ही इस अवसर पर डॉ. गणेश बेहेरे, विभागप्रमुख, फसल संरक्षण विभाग, डॉ. अर्जुन तायडे, विभाग प्रमुख, फसल उत्पादन विभाग, डॉ बालासुब्रमणि, विभागप्रमुख, फसल सुधार विभाग एवं डॉ. आर. के.सिंह, प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर प्रमुख वक्ता के रूप में सादर मंचासीन थे।



(डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक महोदय हिंदी सप्ताह : समापन समारोह के सुअवसर पर सभा को संबोधित करते हुए)

डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने अपने स्वागत भाषण में अध्यक्ष महोदय एवं इस अवसर पर सभागार में उपस्थित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए हिंदी सप्ताह समारोह के अंतर्गत आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं एवं संस्थान की विभिन्न हिंदी गतिविधियों से सभा को अवगत कराया।





(डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक हिंदी सप्ताह समापन समारोह का संचालन करते हुए)



(हिंदी सप्ताह : पुरस्कार वितरण समारोह –2023 का परिदृश्य)

तदोपरांत इस समारोह के कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर एवं मंचासीन मान्यवरों के शुभहस्ते संस्थान में हिंदी सप्ताह समारोह –2023 के अंतर्गत आयोजित हिंदी संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिस्पर्धी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नकद पुरस्कार वितरित किए गए, जिसका विवरण निम्नानुसार है :

क्र.	विजेता का नाम	पुरस्कार
	हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता	
1	श्री विठ्ठल पात्रिकर	प्रथम
2	श्री प्रदिप धाकड़े	द्वितीय
3	श्रीमती पुष्पा महल्ले	तृतीय
4	श्रीमती पूजा घोंगे	तृतीय
5	श्री जयभिम कांबे	सांत्वना

6	डॉ. ई. रघु	सांत्वना
7	श्री प्रविण अंबादे	सांत्वना
	चित्र आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता (हिंदी भाषी वर्ग)	
8	डॉ. दिपा लाल	प्रथम
9	डॉ. रचना पाण्डे	प्रथम
10	डॉ. सुनिल एस. महाजन	द्वितीय
11	श्री रोहित कटियार	द्वितीय
12	श्री शितल कुमार शर्मा	द्वितीय
13	श्रीमती पूजा घोंगे	तृतीय
14	डॉ. वृषाली देशमुख	तृतीय
15	श्रीमती सुनिता चौहान	सांत्वना
16	श्री अजय सिरसाम	सांत्वना
17	श्री अब्दुल वसिम	सांत्वना
	हिंदीतर भाषी वर्ग	
18	श्रीमती रमा गजानन अय्यर	प्रथम
19	डॉ. सुनिल निलकंठ रोकडे	प्रथम
20	श्रीमती रचना देशमुख	द्वितीय
21	श्री जयभिम कांबे	द्वितीय
22	श्रीमती मिथिला मेश्राम	तृतीय
23	श्री परेश भोयर	तृतीय
24	श्री कृष्णा शेषराव गजघाटे	तृतीय
25	श्री होमराज मुन्दाफले	सांत्वना
26	श्री कुणाल गायकवाड	सांत्वना
27	डॉ. जिम्मी वैद्य	सांत्वना
	हिंदी शुध्द लेखन प्रतियोगिता (हिंदी भाषी वर्ग)	
28	डॉ. रचना पाण्डे	प्रथम
29	श्री रोहित कटियार	प्रथम
30	श्रीमती पूजा ठाकूर	द्वितीय
31	श्रीमती सुनिता चौहान	तृतीय
32	डॉ. दिपा लाल	तृतीय
33	श्री शितल कुमार शर्मा	तृतीय
34	श्री जयभिम कांबे	सांत्वना
35	सुश्री प्रियंका यादव	सांत्वना
	हिंदीतर भाषी वर्ग	
36	श्रीमती रमा गजानन अय्यर	प्रथम
37	डॉ. सुनिल निलकंठ रोकडे	प्रथम
38	डॉ. सुनिल एस. महाजन	द्वितीय
39	श्रीमती मिथिला मेश्राम	द्वितीय
40	श्री होमराज मुन्दाफले	द्वितीय
41	श्रीमती रचना देशमुख	तृतीय
42	डॉ. वृषाली देशमुख	तृतीय

43	डॉ. जिम्मी वैद्य	तृतीय
44	श्री कुणाल गायकवाड	सांत्वना
45	श्रीमती पूजा घोंगे	सांत्वना
46	श्री अतुल लेंडे	सांत्वना
47	श्री परेश भोयर	सांत्वना
	शब्दानुवाद प्रतियोगिता (अंग्रेजी से हिंदी में) (हिंदी भाषी वर्ग)	
48	डॉ. रचना पाण्डे	प्रथम
49	श्री कुणाल गायकवाड	प्रथम
50	डॉ. दिपा लाल	द्वितीय
51	श्री रत्नदिप रामटेके	द्वितीय
52	श्री रोहित कटियार	तृतीय
53	श्री शीतल कुमार शर्मा	सांत्वना
	हिंदीतर भाषी वर्ग	
54	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम
55	डॉ. निलकंठ हिरेमणी	द्वितीय
56	डॉ. बाबासाहेब फंड	द्वितीय
57	डॉ. सुनिल रोकडे	तृतीय
58	श्रीमती मिथिला मेश्राम	तृतीय
59	डॉ. दिपक नगराले	तृतीय
60	श्रीमती रचना देशमुख	सांत्वना
61	श्री होमराज मुन्दाफले	सांत्वना
	सामान्य ज्ञान/हिंदी बहुविकल्पी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (हिंदी भाषी वर्ग)	
62	श्री दिनेश कुमार माहुले	प्रथम
63	श्री चंद्रशेखर मुन्दाफले	प्रथम
64	श्री कुणाल गायकवाड	द्वितीय
65	श्री रत्नदिप रामटेके	द्वितीय
66	श्रीमती पूजा घोंगे	तृतीय
67	डॉ. रचना पाण्डे	तृतीय
68	श्री अजय नाना सिरसाम	सांत्वना
69	डॉ. दिपा लाल	सांत्वना
70	श्री रोहित कटियार	सांत्वना
	हिंदीतर भाषी वर्ग	
71	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम
72	डॉ. दिपक नगराले	द्वितीय
73	श्री विजय वाघमारे	द्वितीय
74	श्री होमराज मुन्दाफले	तृतीय
75	श्री अक्षय अनिल बाराहाते	तृतीय
76	श्री मयुर कुमार मेश्राम	सांत्वना
77	डॉ. निलकंठ हिरेमणि	सांत्वना
78	श्री प्रविण अंबादे	सांत्वना
79	श्री भुमेश्वर फंदे	सांत्वना

80	डॉ. बाबासाहेब फंड	सांत्वना
	हिंदी निबंध प्रतियोगिता-हिंदी का प्रचार-प्रसार क्यों और कैसे (हिंदी भाषी वर्ग)	
81	डॉ. रचना पाण्डे	प्रथम
82	श्रीमती पूजा घोंगे	द्वितीय
83	डॉ. दीपा लाल	द्वितीय
84	श्री जयभिम कांबे	तृतीय
85	सुश्री निकिता सरोदे	तृतीय
86	श्री शीतल कुमार शर्मा	सांत्वना
87	श्री कुणाल गायकवाड़	सांत्वना
88	सुश्री प्रियंका यादव	सांत्वना
	हिंदीतर भाषी वर्ग	
89	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम
90	डॉ. सूनिल रोकडे	प्रथम
91	श्रीमती रचना देशमुख	द्वितीय
92	डॉ. वृषाली देशमुख	द्वितीय
93	श्री होमराज मुन्दाफले	तृतीय
94	श्री रत्नदिप रामटेके	तृतीय
95	श्री अतुल रामकृष्ण लेंडे	सांत्वना
96	श्रीमती मिथिला मेश्राम	सांत्वना
97	श्री प्रविण अंबादे	सांत्वना
98	श्री मयुर कुमार मेश्राम	सांत्वना
99	श्रीमती जयश्री खोब्रागडे	सांत्वना
	हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता (हिंदी भाषी वर्ग)	
100	श्री जयभीम कांबे	प्रथम
101	श्री शितल कुमार शर्मा	द्वितीय
102	डॉ. दिपा लाल	तृतीय
103	श्रीमती पूजा ठाकूर	सांत्वना
	हिंदीतर भाषी वर्ग	
104	श्रीमती रमा अय्यर	प्रथम
105	श्री परेश भोयर	द्वितीय
106	डॉ. सुनिल रोकड़े	तृतीय
107	श्री मयुर मेश्राम	सांत्वना
108	श्री अतूल लेंडे	सांत्वना
109	श्रीमती रोशनी उईके	हिंदी प्रबंधन कार्य हेतु

डॉ. वाय.जी. प्रसाद ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि हिंदी हमारे लिए केवल एक भाषा ही नहीं अपितु राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक है, जिससे राष्ट्रीय एकता को बल मिलता है। भाषाविज्ञान के दृष्टिकोण से हिंदी में ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न संकायों को अभिव्यक्ति प्रदान करने का पूर्णरूपेन सामर्थ्य है। अतः राष्ट्रीय हित में हमें इसे अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में अपनाना होगा। अतः इस दृष्टिकोण से राष्ट्रीय हित में अपने कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा (हिंदी) का अधिक–से–अधिक उपयोग करना हमारा संवैधानिक उत्तरदायित्व है।

इस कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं श्री जयभिम कांबे, तकनिशियन ने किया एवं सभा का आभार डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प. –केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना।

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबत्तूर में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा समारोह का संक्षिप्त रिपोर्ट

भा.कृ.अनु.प–केन्द्रीय कपास अमुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबत्तूर में दि.14.9.2023 को हिन्दी पखवाड़ा समारोह–2023 का उद्घाटन समारोह डॉ. अ. हि. प्रकाश, अध्यक्ष, भा.कृ.अनु.प–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, (कपास सुधार), कोयंबत्तूर की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। श्रीमती के. सुभश्री, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी अधिकारी (हिंदी प्रकोष्ठ) ने सभा में उपस्थित वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक और कुशल सहायक कर्मचारियों का स्वागत करते हुए हिंदी दिवस समारोह के महत्व, इसकी महिमा और गौरव के संबंध में उल्लिखित किया ।

डॉ. एस. मणिक्कम, प्रधान वैज्ञानिक एवं सह–सभापति, हिंदी समिति ने अपनी विशेष भाषण में राजभाषा के रूप में हिंदी के महत्व का विशेष उल्लेख किया। वर्ष 1949 के दौरान, भारत के संविधान द्वारा सर्वसम्मति हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया था और इस गौरवान्वित क्षण को सम्मान करते हुए, विशेष रूप से प्रचार प्रसार के लिए भारत सरकार के सभी कार्यालयों और संस्थानों में प्रति वर्ष 14, सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। अपने संबोधन में डॉ. एस. माणिक्कम ने यह भी कहा कि अपनी मातृभाषा के साथ क्षेत्रीय भाषाओं और हिंदी भाषा को भी बढ़ावा देना हमारा कर्तव्य है क्योंकि हिंदी भारत देश के सभी राज्यों को जोड़ने वाली भाषा है ।

डॉ. अ.हि. प्रकाश, अध्यक्ष, भा.कृ.अनु.प–के.क.अनु.सं., क्षेत्रीय केन्द्र, (कपास सुधार), कोयंबत्तूर ने अपनी अध्यक्षीय भाषण में मातृभाषा तथा क्षेत्रीय भाषाओं के साथ–साथ राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए प्रत्येक वर्ष सितंबर 14 को हिन्दी दिवस मनाने की विशिष्टता का उल्लेख किया। हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के रूप में "क" "ख" "ग" क्षेत्रों में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के बीच पत्र–व्यवहार अधिकतम करना होगा। माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा इस केन्द्र के राजभाषा कार्यान्वयन पर किया गया निरीक्षण की दृष्टि से वर्ष 2008 में आयोजित प्रथम निरीक्षण की तिथि से वर्ष 2017 में आयोजित हिंदी निरीक्षण की तिथि तक भा.कृ.अनु.प–के.क.अनु.सं., क्षे. के. कोयंबत्तूर में कर्मचारियों के हिंदी प्रवीणता के प्रतिशत में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। वैज्ञानिकों और कर्मचारियों का हिंदी प्रशिक्षण केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि संस्थान की प्रगति के लिए इसका अच्छी तरह से उपयोग और ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। हमें केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के वर्ग में "ग" क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद हिन्दी गतिविधियों पर निरंतर प्रयास करना होगा।

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान वैज्ञानिक एवं कर्मचारियों के लिए



हिन्दी में स्मरण शक्ति (वस्तुओं की पहचानकर हिन्दी में लिखना), अनुच्छेद आधारित प्रश्नोत्तर, हिन्दी– अंग्रेजी शब्दों का मिलान एवं कुशल सहायक कर्मचारियों के लिए हस्तलेखन आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। सभी कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में सक्रिय रुप से भाग लिया।





हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह, भा.कृ.अनु.प–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबत्तूर में दि. 20.10.2023 को आयोजित किया गया। डॉ. अ.हि. प्रकाश, अध्यक्ष, भा.कृ.अनु.प–के.क.अनु.सं., क्षेत्रीय केन्द्र (कपास सुधार), ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री. वी. गोपीनाथ, वरिष्ठ निदेशक, वैज्ञानिक एफ. एवं अध्यक्ष, भारतीय मानक ब्यूरो, कोयंबत्तूर ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में समारोह की शोभा बढ़ाईं। डॉ. अ.हि. प्रकाश, अध्यक्ष, भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., क्षे.केन्द्र (कपास सुधार), कोयंबत्तूर ने मुख्य अतिथि का अभिनंदन किया।

मुख्य अतिथि श्री. वी. गोपीनाथ, वरिष्ठ निदेशक एवं वैज्ञानिक एफ. एवं अध्यक्ष, भारतीय मानक ब्यूरो, कोयंबत्तूर ने अपनी मुख्य अतिथि संबोधन में हिंदी सप्ताह समारोह के महत्व और हमारे संविधान और राजभाषा अधिनियम एवं नियम के अनुसार सरकारी कामकाज में हिंदी की भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने विभिन्न कार्यक्रम के आयोजन में सक्रिय भागीदारी के लिए सभी कर्मचारियों को बधाई दीं। उन्होंने अपनी प्रसन्नता व्यक्त की भा.कृ.अनु.प–के.क.अनु.सं., क्षेत्रीय केन्द्र, कोयंबत्तूर में राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने और पूरे उत्साह के साथ हिंदी पखवाड़ा समारोह आयोजित करने के अच्छे प्रयास किए जा रहे हैं।





डॉ. अ.हि. प्रकाश, अध्यक्ष, भा.कृ.अनु.प.–कें.क.अनु.सं., क्षेत्रीय केन्द्र (कपास सुधार), कोयंबत्तूर ने सभी कर्मचारियों को हिन्दी पखवाड़ा समारोह में उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए बधाई दीं।

मुख्य अतिथि द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार तथा सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये गये। हिन्दी को बढ़ावा देने की उद्देश्य में सभी वैज्ञानिक एवं कर्मचारियों को हिन्दी सीखने के व्याकरण किताबें दी गईं।

समापन समारोह श्रीमती के. सुभश्री के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ संपन्न हुआ ।

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर द्वारा 'प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग' के कार्मिकों हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 08 जनवरी, 2020) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट

कोयंबटूर। भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. अ.हि. प्रकाश, प्रमुख, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर की अध्यक्षता में तथा अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा) एवं श्री अ.अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की मुख्य उपस्थिती में केंद्र में प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला का संचालन केंद्र की श्रीमती के. एस. सुभश्री, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी ने किया और इस हिंदी कार्यशाला में प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग के लगभग 28 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सहभागी होकर इस आयोजन को सफल बनाया।

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में केंद्र की श्रीमती के.एस. सुभश्री ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. अ.हि. प्रकाश एवं इस कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारीयों का हार्दिक स्वागत करते हुए अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू एवं श्री अ.अं. गोस्वामी के व्यक्ति परिचय से सभा को अवगत कराया।

अपने उद्घाटीय संबोधन में डॉ. अ.हि. प्रकाश ने इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी इस देश के जनसम्पर्क की मुख्य भाषा है और संवैधानिक रूप से इसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। अतः इस दृष्टिकोण से हमारा यह संवैधानिक उत्तरदायित्व हो जाता है कि इसे हम अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में अपनाकर राष्ट्र विकास को गति प्रदान करें।

हिंदी कार्यशाला के प्रथम व्याख्यान सत्र के अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने सभा को 'राजभाषा नीति' की जानकारी देते हुए कहा कि भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। अतः इस स्थिति में हमारा नैतिक उत्तरदायित्व बन पड़ता है की हम अपने दैनिक कार्यालीन कार्यो में इसका अधिक से अधिक उपयोग करे तत्पश्चात श्री अ.अं. गोस्वामी ने अपने समीक्षात्मक सम्बोधन में सभा से यह अनुरोध किया की भारत सरकार ने राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए अपनी ओर से सद्भावना, प्रेरणा प्रोत्साहन के माध्यम से हर संभव प्रयास किया है और इस स्थिति में हमारा यह नैतिक उत्तरदायित्व हो जाता है कि हम अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक से प्रयोग करें।

हिंदी कार्यशाला के द्वितीय व्याख्यान सत्र के अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने बड़े ही रोचक एवं मनोरंजक तरीके से 'राजभाषा कार्यान्वयन की कठिनाईयां एवं समाधान' विषय पर प्रकाश डाला, तत्पश्चात श्री अ.अं. गोस्वामी ने अपने सम्बोधन में हिंदी की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों यह अनुरोध किया की राष्ट्र विकास को गति प्रदान करने हेतु अपने कार्यालयिन कार्यो में हिंदी को अपनाएं।

इस कार्यशाला के अंतिम चरण में सहभागी प्रतिक्रिया स्वरूप अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए श्रीमती के.एस. सुभश्री ने कहा कि यह कार्यशाला अपने लक्ष्य को हासिल करने मे पूर्णरुपेन सफल रही हैं। साथ ही अतिथि वक्ता के मार्गदर्शन से कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों/कर्मचारियों को अच्छी जानकारी मिली है जिससे निसंदेह उन्हें अपना दैनिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने हेतु बढ़ावा मिलेगा। कार्यक्रम के अंतिम बिन्दु पर इस कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों/कर्मचारियों का आभार केंद्र की प्रभारी अधिकारी (हिंदी) श्रीमती के. एस. सुभश्री ने माना।

मुझे विश्वास है कि एक दिन आएगा जब हिंदी विश्व की सांस्कृतिक भाषा होगी।

– सुमित्रनंदन पंत

एक राष्ट्रीय अस्मिता और राष्ट्रीय चरित्र का विकास भाषा के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा होता है।

– अज्ञेय

हिंदी राष्ट्र की आत्मा है।

–महात्मा गांधी

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'प्रशासनिक संवर्ग' के कर्मिकों हेतु आयोजित एक दिवसीय (दिनांक : 30 जून, 2020) 'हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट।

नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. विजय नामदेव वाघमारे, निदेशक, भा.कृ.अनु.प. –केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में एवं अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) तथा सादर मंचासीन श्री अ.अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी एवं श्री रजनीकांत चतुर्वेदी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी की गणमान्य उपस्थिती में संस्थान में प्रशासनिक संवर्ग के कार्मिकों हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया।





सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. विजय नामदेव वाघमारे एवं इस कार्यशाला के अतिथि वक्ता श्री अ. अं. गोस्वामी एवं श्री रजनी कांत चतुर्वेदी तथा कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारीयों का हार्दिक स्वागत करते हुए कार्यशाला के मुख्य उद्देश पर प्रकाश डाला।





हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए डॉ. विजय नामदेव वाघमारे ने कहां कि आज की यह हिंदी कार्यशाला बड़े ही समसामायिक विषय "कोविड–19 महामारी सतर्कता एवं अनुपालन" पर आयोजित की जा रही है। आज इस महामारी से पूरा विश्व प्रभावित हैं। इस महामारी से बचने के लिए हमें कई सावधानियां बरतनी होगी और साथ ही साथ इस महामारी से लड़ने के लिए हमें अपने शरीर की प्रतिरोगात्मक शक्ति को बढ़ाना होगा।

हिंदी कार्यशाला के मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने इस अवसर पर सभा संबोधित करते हुए बताया कि हमारा देश वर्तमान समय में कोरोना महामारी से जुझ रहा है और इस स्थिति में हमें अपना कार्यालयीन कार्य करना है तथा हमे अपने आपको बचाना भी हैं। इस संदर्भ में उन्होंने बताया कि हमे भारत सरकार

द्वारा जारी किए गये दिशानिर्देशों का अनुपालन करना आरोग्य सेतु ऍप को अवश्य अपने मोबाईल मे डाउनलोड करना है तथा ब्लूटूथ व लोकेशन को हमेशा ऑन रखना है, हाथ को साबून से बार–बार धोना है तथा हाथों को सेनेटाइज भी करते रहना है और सर्वोपरि सोशल डिस्टंसिंग का पालन करना है।

हिंदी कार्यशाला के द्वितीय सत्र में प्रमुख वक्ता के रूप में श्री अ.अं. गोस्वामी एवं श्री रजनीकांत चुतुर्वेदी ने कोविड–19 महामारी के विषय में वैज्ञानिक एवं तकनीकी दृष्टिकोण से प्रकाश डालते हुए कहां कि आज हम एक अदृश्य वायरस से लड़ रहे है। आज इस महामारी के संक्रमण से बचने के लिए हमें अपने आपको कई तरह कि सावधानी बरतते हुए खुद को बचाना होगा।

इस हिंदी कार्यशाला का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, ने किया और आभार श्री रजनीकांत चतुर्वेदी ने माना।

कोई भाषा ऐसी हो, जिसे सब बोल सकें, जो एक कड़ी की तरह सबको मिला–जुला कर रख सके। इसलिए हिंदी को बढ़ावा देना सबका काम है।

–इंदिरा गांधी

हिंदी सीखे बिना भारतीयों के दिल तक नहीं पहुँचा जा सकता।

–डॉ. लोथर लुत्से

देश का सब से बड़े भूभाग में बोली जाने वाली हिंदी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है।

– सुभाȣ चन्द्र बोस

हिंदी जब तक शिक्षा का माध्यम नहीं बनती, उसमें मौलिक वैज्ञानिक साहित्य की वृद्धि संभव नहीं।

– निहालकरण सेठी

हिंदी के बिना भारत की राष्ट्रीयता की बात करना व्यर्थ है।

– डॉ. वी.वी.गिरी

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

हिंदी से किसी भी भारतीय भाषा को भय नहीं है, यह सब की सहोदरी है

– महादेवी वर्मा

भारत की एकता चाहने वालों को हिंदी अपनानी ही पड़ेगी।

– जे वेंकट रामन

राष्ट्रीय मेल और राजनीतिक एकता के लिए सारे देश में हिंदी और नागरी का प्रचार आवश्यक है।

– लाला लाजपतराय

राष्ट्र को राष्ट्रध्वज की तरह राष्ट्रभाषा की आवश्यकता है, और ये स्थान हिंदी को प्राप्त है।

– अनन्त गोपाल शेवड़े

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग' के कर्मिकों हेतु आयोजित एक दिवसीय (दिनांक : 12 सितम्बर, 2020) 'हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट

नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. सिद्धार्थ वासनिक, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, कृषि विज्ञान केंद्र, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में एवं अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा) की मुख्य उपस्थिती में संस्थान में प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों हेतु 'सही पोषण : देश रोशन' विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला/व्याख्यान सत्र का आयोजन किया गया।





सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. सिद्धार्थ वासनिक एवं इस कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारीयों का हार्दिक स्वागत करते हुए इस कार्यशाला/व्याख्यान के मुख्य उद्देश पर प्रकाश डाला।

हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए डॉ. सिद्धार्थ वासनिक ने कहां कि आज देश कृषि संबंधित विभिन्न समस्याओं से जूझ रहा हैं। देश की 125 करोड़ जनता को दो वक्त की रोटी उपलब्ध कराने का भार भारतीय कृषि पर निरंतर बढ़ता जा रहा है और देश की जनता को अच्छे पोषक–तत्वों वाला आहार प्रदान करने की जिम्मेदारी कृषि क्षेत्र पर ही निर्भर हैं जो कि कृषि वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य हैं।

हिंदी कार्यशाला के मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने इस अवसर पर पॉवर पॉईंट प्रस्तुतिकरण के माध्यम से उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को यह बताया कि अच्छे पोषणयुक्त आहार से कैसे हम स्वस्थ एवं निरोगी रहकर अपने शरीर की प्रतिरोगात्मक शक्ति को बढ़ा सकते हैं।

इस हिंदी कार्यशाला/व्याख्यान सत्र का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, ने किया।



भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा ''सतर्क भारत, समृध्द भारत'' विषय पर आयोजित एक दिवसीय (दिनांक : 27 अक्टूबर, 2020) हिंदी कार्यशाला/व्याख्यान सत्र रिपोर्ट





नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में एवं डॉ. नंदिनी गोकटे नरखेडकर, विभाग प्रमुख, फसल संरक्षण विभाग, श्री अ.अं. गोस्वामी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी तथा अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) की गणमान्य उपस्थिती में संस्थान में "सतर्क भारत, समृद्ध भारत" विषय पर एक दिवसीय (दिनांक : 27, अक्टूबर, 2020) हिंदी कार्यशाला/व्याख्यान सत्र का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया।

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. वाय.जी. प्रसाद तथा गणमान्य उपस्थिति के रूप में डॉ. नंदिनी गोकटे नरखेडकर, श्री अ.अं. गोस्वामी तथा कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कार्यशाला के मुख्य उद्देश पर प्रकाश डाला।





हिंदी कार्यशाला के मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए कहा कि हमारा देश भ्रष्टाचार जैसी गंभीर समस्या से जूझ रहा है और जिसके परिणामस्वरूप देश की प्रगति एवं विकास में बाधा उत्पन्न हो रही हैं। अतः एक राष्ट्रवादी नागरिक होने के नाते हमारा यह नैतिक

हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए डॉ. वाय.जी. प्रसाद ने कहां कि आज की यह हिंदी कार्यशाला बड़े ही समसामायिक विषय "सतर्क भारत, समृद्ध भारत" पर आयोजित की जा रही है। आज भ्रष्टाचार को मिटाना हमारे लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। अतः हमें अपने कार्य प्रणाली में पूर्णरूपेन इमानदारी एवं पारदर्शिता के साथ कार्य करते हुए देश के विकास को गति प्रदान करना है।

इस सुअवसर पर कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. वाय.जी. प्रसाद के शुभहस्ते संस्थान द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'श्वेत स्वर्णिमा 2019–20' का लोकार्पण किया गया। तदउपरांत 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह – 2020' के उद्घाटन सत्र में सहभागी समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को डॉ. महेंद्र कुमार साहू द्वारा हिंदी में तथा श्री अ.अं. गोस्वामी द्वारा अंग्रेजी में सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा दिलवाई गई।



उत्तरदायित्व बन पड़ता हैं कि हम अपनी कार्यशैली एवं कार्य व्यवहार में इमानदारी एवं पारदर्शिता को अपनाकर देश के विकास को गति प्रदान करें। इस हिंदी कार्यशाला का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने किया ।

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'प्रशासनिक एवं तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 30 मार्च, 2021) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट ।

नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. वाय. जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में एवं अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) तथा सादर मंचासीन श्री रजनीकांत चतुर्वेदी, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी की गणमान्य उपस्थिति में संस्थान में प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों हेतु "कोविड–19 महामारी सतर्कता एवं अनुपालन" विषय पर दिनांक : 30 मार्च, 2021 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया।



डॉ. वाय.जी. प्रसाद की अध्यक्षता में आयोजित हिंदी कार्यशाला का परिदृश्य

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. वाय.जी. प्रसाद एवं इस कार्यशाला के अतिथि वक्ता श्री रजनी कांत चतुर्वेदी तथा कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कार्यशाला के मुख्य उद्देश पर प्रकाश डाला।

हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए डॉ. वाय.जी. प्रसाद ने कहा कि आज की यह हिंदी कार्यशाला बड़े ही समसामायिक विषय "कोविड–19 महामारी सतर्कता एवं अनुपालन" पर आयोजित की जा रही है। आज इस माहमारी से पूरा विश्व प्रभावित हैं। इस महामारी से बचने के लिए हमें कई सावधानियां बरतनी होगी और साथ ही साथ इस महामारी से लड़ने के लिए हमें अपने शरीर की प्रतिरोगात्मक शक्ति को बढ़ाना होगा।

हिंदी कार्यशाला के मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने इस अवसर पर सभा संबोधित करते हुए बताया कि हमारा देश वर्तमान समय में कोरोना महामारी से जुझ रहा है और इस स्थिति में हमें अपना कार्यालयीन कार्य करना है तथा हमें अपने आपको बचाना भी हैं। इस संदर्भ में उन्होंने बताया कि हमें भारत सरकार द्वारा जारी किए गए दिशानिर्देशों का अनुपालन करना, आरोग्य सेतु ऍप को अवश्य अपने मोबाईल में डाउनलोड करना है तथा ब्लूटूथ व लोकेशन को हमेशा ऑन रखना है, हाथ को साबुन से बार–बार धोना है तथा हाथों को सेनेटाइज भी करते रहना है और सर्वोपरि सोशल डिस्टेंसिंग का हमें पालन करना है।

हिंदी कार्यशाला के द्वितीय सत्र में प्रमुख वक्ता के रूप में श्री रजनीकांत चुतुर्वेदी ने कोविड–19 महामारी के विषय में वैज्ञानिक एवं तकनीकी दृष्टिकोण से प्रकाश डालते हुए कहा की आज हम एक अदृश्य वायरस से लड़ रहे है। आज इस महामारी के संक्रमण से बचने के लिए हमें अपने आप को कई तरह की सावधानी बरतते हुए समाज एवं देश को गति प्रदान करना है।

इस हिंदी कार्यशाला का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, ने किया और आभार श्री रजनीकांत चतुर्वेदी ने माना।

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'प्रशासनिक एवं तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 26 जून, 2021) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट।

नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में एवं अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) तथा सादर मंचासीन श्री अ.अं. गोस्मावी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी की गणमान्य उपस्थिति में संस्थान में प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों हेतु "योग मिटाएं रोग" विषय पर दिनांक : 26 जून, 2021 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का सफलता पूर्वक आयोजन निदेशक महोदय के समिति कक्ष में किया गया।





डॉ. वाय.जी. प्रसाद की अध्यक्षता में आयोजित हिंदी कार्यशाला का परिदृश्य

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. वाय.जी. प्रसाद एवं इस कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कार्यशाला के मुख्य उदेश पर प्रकाश डाला।



डॉ. वाय.जी. प्रसाद कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए

हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए डॉ. वाय.जी. प्रसाद ने कहा कि आज की यह हिंदी कार्यशाला बड़े ही समसामायिक विषय "योग मिटाएं रोग" पर आयोजित की जा रही है। आज हम कोरोना जैसी महामारी से अपना बचाव करने हेतु नियमित रूप से योगाभ्यास एवं प्राणायाम कर अपने शरीर की प्रतिरोगात्मक शक्ति को बढ़ा सकते है।

हिंदी कार्यशाला के मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने इस अवसर पर सभा संबोधित करते हुए योग की पृष्ठ भूमि पर प्रकाश डालते हुए योग के उद्भव एवं विकास के क्रम से सभा को अवगत कराया। कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों को उन्होंने यह बताया कि योग के माध्यम से हम कैसे अपने तन–मन को सुरक्षित कर सकते हैं और कैसे हम विभिन्न योगासनों के माध्यम से विभिन्न प्रकार की व्याधियों/बिमारियों से अपना बचाव कर अपने शरीर की प्रतिरोगात्मक शक्ति को बढ़ा सकतें है।



हिंदी कार्यशाला को संबोधित करते हुए अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू

इस हिंदी कार्यशाला का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने किया और आभार डॉ. पूजा वर्मा, वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–केंद्रिय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना।

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'प्रशासनिक एवं वैज्ञानिक/तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 08 सितंबर, 2021) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट।

नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में संस्थान की राजभाषा कार्यान्वय समिति के सह–सभापति डॉ. सुनील रोकड़े, प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में दिनांक : 8 सितंबर, 2021 को सेमिनार हॉल में प्रशासनिक एवं वैज्ञानिक/तकनीकी संवर्ग हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा), डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं डॉ. पूजा वर्मा, वैज्ञानिक प्रमुख रूप से उपस्थिति थे।



(डॉ. सुनील रोकड़े, प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, नागपुर की अध्यक्षता में आयोजित हिंदी कार्यशाला का परिदृश्य)

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. सुनील रोकड़े एवं इस कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कार्यशाला के मुख्य उद्देश पर प्रकाश डाला।

हिंदी कार्यशाला के प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. सुनील रोकड़े ने कहा कि भारत एक कृषि प्रधान देश है और इस देश के आम जनों एवं किसानों की भाषा हिंदी है। अतः हमारा यह नैतिक उत्तरदायित्व बन पड़ता है कि हम अपने कृषि ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में हो रही प्रगति से किसानों को हिंदी में अवगत कराएं। भाषा–विज्ञान की दृष्टि से हिंदी एक बहुत ही सरल सुबोध एवं तकनीकी ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न संकायों को सशक्त रूप से अभिव्यक्ति प्रदान करने में एक सशक्त भाषा है। साथ ही उन्होंने अपने संबोधन में सभा को यह बताया कि कैसे हम वैज्ञानिक/तकनीकी लेखन कार्यों में हिंदी का उपयोग बड़ी सरलता के साथ कर सकते है।

हिंदी कार्यशाला के विचार–विमर्श सत्र में डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. पूजा वर्मा, वैज्ञानिक एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) ने भी इस अवसर पर हिंदी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए सभा को संबोधित किया।



(डॉ. सुनील रोकड़े, प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, नागपुर कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए)



(हिंदी कार्यशाला को संबोधित करते हुए अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी)

इस हिंदी कार्यशाला का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने किया और आभार डॉ. पूजा वर्मा, वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना।

हिंदी जानदार भाषा है, वह जितनी बढ़ेगी, उतना अधिक लाभ होगा। **–पं. जवाहरलाल नेहरू**

जो मनुष्य लोगों के व्यवहार से ऊब कर क्षण प्रतिक्षण अपने विचार बदलते रहते हैं, वे दुर्बल हैं, उनमें आत्मबल नहीं है। **–सुभाषचन्द्र बोस**

भारत की अखण्डता और व्यतिव बनाए रखने के लिए हिंदी का प्रचार अत्यन्त आवश्यक है। **–महाकवि शंकर कुरूप**

विद्वता अच्छे दिनों में आभूषण, विपत्ति में सहायक और बुढ़ापे में संचित धन है। **–हितोपदेश**

भारत : फलउत्पादक राज्य

अंगूर	:	महाराष्ट्र, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, तामिलनाडु, कर्नाटक।
सेब	:	हिमाचल प्रदेश, कश्मीर घाटी, असम।
संतर	:	हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, कश्मीर, महाराष्ट्र, प. बंगाल, असम, मध्य प्रदेश।
आम	:	उत्तर प्रदेश, पंजाब, प. बंगाल, बिहार, ओडिशा, तामिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, गुजरात।
लीची	:	उत्तर प्रदेश, पंजाब, बिहार, उत्तराखंड।
अनार	:	पंजाब, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, तामिलनाडु।
केला	:	गुजरात, महाराष्ट्र, तामिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश असम, बिहार, प.बंगाल।
अमरूद	:	उत्तर प्रदेश, बिहार, आन्ध्र प्रदेश, गुजरात।
अनन्नास	:	असम, प. बंगाल, गुजरात, तामिलनाडु, कर्नाटक।
अंजीर	:	राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब।
काजू	:	केरल, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, गोवा, ओडिसा।

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'प्रशासनिक एवं वैज्ञानिक/तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 30 दिसंबर, 2021) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट।

नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में दिनांक : 30 दिसंबर, 2021 को संस्थान के 'प्रशिक्षण कक्ष' में "किसानों की आय दोगुनी करने हेतु उपाय" विषय पर वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारी संवर्ग के कार्मिकों हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। इस अवसर पर अतिथि वक्ता के रूप में डॉ. सुनील रोकड़े, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, के.वी.के, नागपुर, डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा.) एवं श्री अ.अं. गोस्मावी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी सादर मंचासीन थे। अपने स्वागत भाषण में डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. वाय.जी. प्रसाद एवं इस कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कार्यशाला के मुख्य उद्देश पर प्रकाश डाला।



कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. वाय.जी. प्रसाद दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए।

हिंदी कार्यशाला के कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. वाय. जी. प्रसाद, निदेशक द्वारा हिंदी कार्यशाला का विधिवत् उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर अपने उद्घाटन भाषण में सभा को संबोधित करते हुए डॉ. वाय.जी. प्रसाद ने कहां की भारत एक कृषि प्रधान देश होने के बावजूद हमारे अन्नदाता की आर्थिक स्थिति उतनी अच्छी नहीं है। इसके कई मुख्य कारण हैं – मानसून पर निर्भरता, खेती का पारंपारिक तौर–तरिका, आधुनिक कृषि अनुसंधानों के संबंध में किसानों को पर्याप्त जानकारी ना होना, वित्तीय संसाधनों, कृषि भंडारों एवं किसानों को उसकी उपज का समर्थन मूल्य ना मिल पाने से किसानों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में कोई समाधान कारक सुधार नहीं हो पा रहा है। अतः आज हमारे अन्नदाता किसान भाईयों की



डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक अपने उद्घाटन भाषण में कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए।

आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में कैसा सुधार हो इस संबंध में आज की हिंदी कार्यशाला का विषय बहुत ही महत्वपूर्ण एवं प्रासांगिक है कि कैसे हमारे किसान भाई वैकल्पिक कृषि करते हुए अपनी आय को दोगुनी कर सकते है।





डॉ. सुनिल रोकड़े, प्रमुख वक्ता के रूप में कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों / कर्मचारियों को संबोधित करते हुए।

हिंदी कार्यशाला के मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. सुनील रोकड़े ने इस अवसर पर अपने बहुत ही सशक्त एवं ज्ञानवर्धक पॉवर पॉईंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से यह बताया की कैसे हमारे किसान भाई अपनी मुख्य फसल के साथ वैकल्पिक रूप से कृषि–पशु पालन, मत्स पालन, मधुमक्खी पालन, पुष्प उत्पादन, रेशम के किड़ों का पालन करते हुए तथा एक नई संकल्पना 'एग्रोटूरिज्म' को बढ़ावा देते हुए अपनी आय को दोगुनी कर अपनी आर्थिक एवं समाजिक स्थिति में सुधार ला सकते है।

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. सुनील रोकड़े एवं इस कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कार्यशाला के मुख्य उद्देश पर प्रकाश डाला।

हिंदी कार्यशाला के प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. सुनील रोकड़े ने कहा कि भारत एक कृषि प्रधान देश है और इस देश के आम जनों एवं किसानों की भाषा हिंदी है। अतः हमारा यह नैतिक उत्तरदायित्व बन पड़ता है कि हम अपने कृषि ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में हो रही प्रगति से किसानों को हिंदी में अवगत कराएं। भाषा–विज्ञान की दृष्टि से हिंदी एक बहुत ही सरल सुबोध एवं तकनीकी ज्ञान–विज्ञान की विभिन्न संकायों को सशक्त रूप से अभिव्यक्ति प्रदान करने में एक सशक्त भाषा है। साथ ही उन्होंने अपने संबोधन में सभा को यह बताया कि कैसे हम वैज्ञानिक/तकनीकी लेखन कार्यों में हिंदी का उपयोग बड़ी सरलता के साथ कर सकते है।

हिंदी कार्यशाला के विचार–विमर्श सत्र में डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. पूजा वर्मा, वैज्ञानिक एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) ने भी इस अवसर पर हिंदी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए सभा को संबोधित किया।

<u>भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के प्रमुख लक्ष्य</u>

कृषि, कृषि–वानिकी, पशुपालन, मछली पालन, गृह विज्ञान और संबंधित विज्ञानों में शिक्षा, अनुसंधान और उसके अनुप्रयोग के लिए योजना बनाना, क्रियान्वयन करना, सहायता देना, बढ़ावा देना और समन्वय करना।

कृषि, पशुपालन, मछली पालन, गृह विज्ञान और संबंधित विज्ञानों पर आधारित अपने प्रकाशनों और सूचना प्रणाली के द्वारा मूल्यांकन और सामान्य सूचना का प्रचार–प्रसार करना तथा पौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम तैयार करना और बढ़ावा देना।

कृषि, कृषि–वानिकी, पशुपालन, मछली पालन, गृह विज्ञान और संबंधित विज्ञानों में शिक्षा, अनुसंधान, प्रशिक्षण और सूचनाओं के प्रचार–प्रसार हेतु परामर्श सेवाएं देना, क्रियान्वयन करना और बढ़ावा देना।

कृषि, कटाई के बाद की प्रौद्योगिकी और ग्रामीण विकास के व्यापक क्षेत्रों की समस्याओं पर ध्यान देना और इसके लिए अन्य संस्थाओं जैसे भारतीय समाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद्, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र और विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर साँझा कार्यक्रम तैयार करना।

परिषद् के लक्ष्यों को पाने के लिए आवश्यक अन्य कदम उठाना...।

यह सच है कि कोई भी देश अपनी मातृभाषा के द्वारा ही आगे बढ़ सकता है। हम दूसरी भाषा सीख सकते हैं लेकिन विचार इसमें पैदा नहीं होते। नये विचार केवल अपनी मातृभाषा के द्वारा ही निकल सकते है। हम चाहते है कि जल्दी से जल्दी भारत के सभी लोग अगर हिन्दी न बोल सकें तो कम से कम समझ सकें

इन्दिरा गांधी

अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिये ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता समझता है।

महात्मा गांधी

भारतीय भाषाएं नदिया हैं और हिंदी महानदी। हिंदी देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाने वाली भाषा है। हमें इस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करना चाहिए। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि हिन्दी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हम सभी भारतवासियों का यह अनिवार्य कर्तव्य है कि हम हिंदी को अपनी भाषा के रूप में अपनाएं।

डॉ. भीमराव आम्बेडकर

करे प्रेम निज देश से, भाषा अपनी होय।
हिंदी मन से बोलिए, समझ सके हर कोय।।

डॉ. धन प्रकाश

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'प्रशासनिक एवं वैज्ञानिक/तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 11 मार्च, 2022) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट।

नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में संस्थान की राजभाषा कार्यान्वय समिति के सह–सभापति डॉ. सुनील रोकड़े, प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में दिनांक : 11 मार्च, 2022 को सेमिनार हॉल में प्रशासनिक एवं वैज्ञानिक/तकनीकी संवर्ग हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा), डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं डॉ. पूजा वर्मा, वैज्ञानिक प्रमुख रूप से उपस्थित थे।



(डॉ.सुनील रोकड़े, प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, नागपुर कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए)



(हिंदी कार्यशाला को संबोधित करते हुए अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी)

इस हिंदी कार्यशाला का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने किया और आभार डॉ. पूजा वर्मा, वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना।

रस रस सूख सरित सर पानी। ममता त्याग करहिं जिमि ग्यानी।
जानि सरद रितु खंजन आए। पाइ समय जिमि सुत सुहाए।।

भावार्थ : नदी और तालाबों का जल धीरे–धीरे सूख रहा है। जैसे ज्ञानी(विवेकी) पुरूष ममता का त्याग करते हैं। शरद ऋतु जानकर खंजन पक्षी आ गए। जैसे समय पाकर सुंदर सुकृत आ सकते हैं। (पुण्य प्रकट हो जाते हैं।)

– स्त्रोत : रामचरितमानस

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा प्रशासनिक एवं तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 24 मई, 2022) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट।

नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में एवं अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा) तथा सादर मंचासीन श्री अ.अं. गोस्मावी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी की गणमान्य उपस्थिति में संस्थान में प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों हेतु "योग मिटाएं रोग" विषय पर दिनांक : 24 मई, 2022 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का सफलता पूर्वक आयोजन निदेशक महोदय के समिति कक्ष में किया गया।

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. वाय.जी. प्रसाद एवं इस कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कार्यशाला के मुख्य उद्देश पर प्रकाश डाला।

हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए डॉ. वाय.जी. प्रसाद ने कहा कि आज की यह हिंदी कार्यशाला बड़े ही समसामायिक विषय "योग मिटाएं रोग" पर आयोजित की जा रही है। आज हमें कोरोना जैसी महामारी से अपना बचाव करने हेतु हमें नियमित रूप से योगाभ्यास एवं प्राणायाम कर हम अपने शरीर की प्रतिरोगात्मक शक्ति को बढ़ा सकते है।

हिंदी कार्यशाला के मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने इस अवसर पर सभा संबोधित करते हुए योग की पृष्ठ भूमि पर प्रकाश डालते हुए योग के उद्भव एवं विकास के क्रम से सभा को अवगत कराया। कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों को उन्होंने यह बताया कि योग के माध्यम से हम कैसे अपने तन–मन को सुरक्षित कर सकते हैं और कैसे हम विभिन्न योगासनों के माध्यम से विभिन्न प्रकार की व्याधियों/बिमारियों से अपना बचाव कर अपने शरीर की प्रतिरोगात्मक शक्ति को बढ़ा सकतें है।

इस हिंदी कार्यशाला का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने किया और आभार डॉ. पूजा वर्मा, वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–केंद्रिय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना।

क्या आप जानते है ?

- भारत दुनिया के बारह मैगा जैव–विविधता संपन्न देशों में से है। देश का वन्यजीव पूर्वोत्तर भारत के सदाबहार वनों से लेकर राजस्थान के मरूस्थल तक और हिमालय के हरे–भरे जंगलों से लेकर पश्चिमी घाटों तक फैला हुआ है। देश में स्तनपायी की 350, पक्षियों की 1224, रेंगने वाले जन्तुओं की 408, उभयचरों की 197, मछलियों की 2546, कीटों की 57548 और पौधों की 46286 प्रजातियां है जो कि विश्व की जीव–विविधता का 8 प्रतिशत है।
- धरती का लगभग तीन–चौथाई भाग (75 प्रतिशत) जल क्षेत्र के अंतर्गत है और इसका लगभग 97 प्रतिशत भाग समुद्री जल का और मात्र 3 प्रतिशत मीठे जल का है। मीठे जल का 75 प्रतिशत भाग बर्फ के रूप में जमा हुआ है और तथा 23 प्रतिशत जल जमीन की सतह के अंदर है। इस तरह लगभग 98 प्रतिशत उपलब्ध मीठा जल मनुष्य के साधारण उपयोग से परे है और मात्र 2 प्रतिशत जल ही हमारी नदी और झीलों में संग्रहीत है।
- भारत दुनिया में दूध का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। यहां हर साल 7.43 करोड़ लीटर दूध उत्पादन होता है लेकिन प्रति व्यक्ति दूध की दैनिक उपलब्धता सिर्फ 206 ग्राम प्रति दिन है।
- भारत की आबादी दुनिया की कुल आबादी का 16 प्रतिशत है जबकि दुनिया के कुल भू–भाग का केवल 2.45 प्रतिशत और जल संसाधनों का केवल 4 प्रतिशत हमारे पास है। ऐसी स्थिति में देश में पेय जल की समस्या उत्पन्न होना स्वाभाविक है। आजादी के समय भारत में पानी की प्रति व्यक्ति वार्षिक उपलब्धता 5000 घन मीटर थी जो कि इस समय घटकर 2000 घन मीटर वार्षिक रह गयी है। देश में वर्षा का वार्षिक औसत 1100 मिलीमीटर है जो यों तो बहुत अच्छा आंकड़ा है लेकिन जहां तक बारिश का सवाल है अलग–अलग स्थानों पर इसकी वास्तविक मात्रा में भारी अंतर पाया जाता है।

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी अधिकारी संवर्ग' हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 13 सितंबर, 2022) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट।

नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में एवं अतिथि वक्ता डॉ. जी. बालासुब्रमणी, प्रधान वैज्ञानिक, फसल सुधार विभाग तथा सादर मंचासीन कार्यशाला समन्वयक डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) की गणमान्य उपस्थिति में वैज्ञानिक तथा तकनीकी संवर्ग के अधिकारियों हेतु 'हमारा जीवन और जिंदगी सारा दिमाग का खेल है' विषय पर संस्थान के प्रशिक्षण हॉल में दिनांक 13 सितंबर, 2022 को किया गया।



(हिंदी कार्यशाला का संचालन करते हुए डॉ. महेंद्र कुमार साहू एवं इस अवसर पर मंचासीन (बाएं से दाएं) डॉ. रचना पाण्डे, डॉ. वाय.जी. प्रसाद एवं डॉ जी. बालासुब्रमणी)

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर तथा इस कार्यशाला के प्रमुख अतिथि वक्ता डॉ. जी. बालासुब्रमणी, प्रधान वैज्ञानिक, फसल सुधार विभाग, डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं कार्यशाला में सहभागी समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कार्यशाला के मुख्य उद्देश पर प्रकाश डाला।



(डॉ. जी. बालासुब्रमणी, प्रमुख वक्ता के रूप में हिंदी कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए)

हिंदी कार्यशाला के मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. जी. बालासुब्रमणी ने इस कार्यशाला के विषय 'हमारा जीवन और जिंदगी सारा दिमाग का खेल है' पर बड़े ही रोचक एवं मनोरंजक ढंग से प्रकाश डालते हुए कहां की आज की इस भाग–दौड की जिंदगी में मनुष्य की मानसिक स्थिति निरंतर तनावग्रस्त होती जा रही है। जिसका उसके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। अतः इस स्थिति से उभरने के लिए हमें कैसे बगैर किसी मानसिक तनाव के, हमें अपने कार्यों को अंजाम देना है। यह सब हमारे दिमाग का खेल है। इस संबंध में डॉ. जी. बालासुब्रमणी ने दैनिक जिवन के अनेक एवं मनोरंजक उदाहरण देते हुए अपने विषय को बड़े ही स्पष्ट रूप से इस सभा में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को समझाया।

कार्यशाला की मुख्य समन्वयक डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने प्रमुख वक्ता डॉ. जी. बालासुब्रमणी की बातों का समर्थन करते हुए सभा को यह बताया की आज मानसिक तनाव के कारण मनुष्य अनेक व्याधियों से ग्रस्त है। अतः हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु हमारा शारिरीक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ्य रहना बहुत जरूरी है।

इस हिंदी कार्यशाला का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने किया और आभार डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–केंद्रिय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना।

- **प्रकृति का हम जितना अधिक दोहन करते हैं, हमारे विकल्प उतने ही सीमित होते चले जाते हैं। एक स्थिति ऐसी आती है जब हमारे पास सिर्फ एक विकल्प बचता है, और वह होता है किसी तरह अपने अस्तित्व को बचाए रखना।**
  – मॉरिस के. उडाल

- **वैज्ञानिक और मानवतावाद की विचारधाराओं के बीच कोई प्रतिस्पर्धा नहीं है बल्कि वे दोनों एक दूसरे के पूरक हैं और दोनों ही अंततः अनिवार्य हैं।**
  – रॉबर्ट सी. बुड

- **कृषि में खरपतवार हटाना उतना ही आवश्यक है जितनी कि बुआई जरूरी है।**
  – महात्मा गांधी

- **जो लोग देखने के इच्छुक हैं उनके लिए पर्याप्त प्रकाश है और जो इसके विपरीत इच्छा रखते हैं उनके लिए अंधकार है।**
  – ब्लेस पास्कल

- **दुःख सबको माँजता है,**
  चाहे स्वयं सबको मुक्ति देना वह न जाने,
  किन्तु जिसको माँजता है;
  उन्हें यह सीख देता है कि सबको मुक्त रखे।
  – अज्ञेय

  कोटि–कोटि कंठों की भाषा,
  जनगण की मुखरित अभिलाषा,
  हिंदी है पहचान हमारी,
  हिंदी हम सबकी परिभाषा
  – डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 30 दिसंबर, 2022) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट

नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. जी. बालासुब्रमणी, प्रभारी निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में एवं अतिथि वक्ता डॉ. बाबासाहेब फंड, वरिष्ठ वैज्ञानिक, फसल संरक्षण विभाग तथा सादर मंचासीन डॉ. सुनील रोकड़े, प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, नागपुर श्री अ.अं. गोस्वामी, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा.) की गणमान्य उपस्थिति में संस्थान में कार्यरत समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु 'संतुष्ट रहना सीखे : यह जीवन वास्तव में बहुत सुंदर है' विषय पर संस्थान के प्रशिक्षण हॉल में दिनांक 30 दिसंबर, 2022 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।





(डॉ जी. बालासुब्रमणी, प्रभारी निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर संस्थान में आयोजित हिंदी कार्यशाला का दीप प्रज्ज्वलित कर विधिवत् उद्घाटन करते हुए एवं इस हिंदी कार्यशाला के प्रमुख अतिथि वक्ता डॉ. बाबासाहेब फंड, वरिष्ठ वैज्ञानिक, फसल संरक्षण विभाग का शॉल–श्रीफल देकर सम्मान करते हुए)

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. जी. बालासुब्रमणी, प्रभारी निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर तथा इस कार्यशाला के प्रमुख अतिथि वक्ता डॉ. बाबासाहेब फंड, वरिष्ठ वैज्ञानिक, फसल संरक्षण विभाग, मंचासीन महानुभवों एवं कार्यशाला में सहभागी समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कार्यशाला के मुख्य उद्देश पर प्रकाश डाला।



(डॉ. जी. बालासुब्रमणी, प्रभारी निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर अपने उद्घाटन संबोधन में हिंदी कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए)

हिंदी कार्यशाला के मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. बाबासाहेब फंड ने इस कार्यशाला के विषय 'संतुष्ट रहना सीखे : यह जीवन वास्तव में बहुत सुंदर है' पर बड़े ही रोचक एवं मनोरंजक ढंग से प्रकाश डालते हुए कहां कि आज मानव की असंतुष्ट मनोवृत्ति एवं इच्छाओं ने उसके जीवन को उलझन में डाल दिया है।



(प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. बाबासाहेब फंड, वरिष्ठ वैज्ञानिक, फसल संरक्षण विभाग, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर संस्थान में आयोजित हिंदी कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए)

मानव को इस स्थिति से उभरने हेतु उसे अपने जीवन को वास्तविक रूप से सुंदर एवं संतुष्ट बनाने हेतु कैसे वह अपनी इच्छाओं एवं मन की चंचल मनोवृत्ति पर अंकुश लगाते हुए अपने जीवन को सुंदर बना सकता है, इस संबंध में डॉ. बाबासाहेब फंड ने संत, महात्माओं के सामजिक एवं अध्यात्मिक जीवन से जुड़े अनेकों सुंदर उदाहरण देते हुए कहां कि कैसे उन्होंने मात्र अपनी संतोष/संतुष्ट मनोवृत्ति के बल पर अपने जीवन को देश और समाज के हित में सुंदर एवं प्रेरणादायी बनाया।





(डॉ. जी. बालासुब्रमणी, प्रभारी निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर अपने अध्यक्षीय संबोधन में हिंदी कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए)

डॉ. जी. बालासुब्रमणी, प्रभारी निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर अपने अध्यक्षीय संबोधन में सभा उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहां कि डॉ. बाबासाहेब फंड ने आज के जिस विषय पर सभा को संबोधित किया वह हमारे लिए एक बहुत ही जीवन उपयोगी एवं जीवन को सार्थक बनाने वाला विषय था, जिससे निसंदेह हम सभी श्रोतागण लाभान्वित हुए। इस संबंध में मेरा भी अपना यह मत है कि आज हम मोह–माया के चक्कर में पड़कर अपने जीवन को एक भौतिकवादी जीवन बनाते जा रहे हैं और इससे हमें उभरने हेतु एक अध्यात्मिक चिंतन–मनन की ओर बढ़ते हुए अपने जीवन को सुंदर एवं सार्थक बनाना होगा।

इस हिंदी कार्यशाला का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, भा.कृ.अनु.प.–केंद्रिय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने किया।

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 21 मार्च, 2023) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट ।

नागपुर। वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में एवं अतिथि वक्ता डॉ. जयंत मेश्राम, प्रधान वैज्ञानिक, फसल उत्पादन विभाग तथा सादर मंचासीन डॉ. सुनील रोकड़े, प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र, नागपुर डॉ. (श्रीमती) रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा.) की गणमान्य उपस्थिति में संस्थान में कार्यरत समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु 'हम सभी इंसान जुड़े हुए है धरती पर, इस विश्व में : एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण' विषय पर संस्थान के प्रशिक्षण हॉल में दिनांक 21 मार्च, 2023 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।



(डॉ वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर संस्थान में आयोजित हिंदी कार्यशाला का दीप प्रज्ज्वलित कर विधिवत् उद्घाटन करते हुए।





(हिंदी कार्यशाला के कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. वाय.जी. प्रसाद का पुष्प कलिका द्वारा स्वागत करते हुए डॉ. रचना पाण्डे एवं डॉ. वाय.जी. प्रसाद कार्यशाला के प्रमुख अतिथि वक्ता डॉ. जयंत मेश्राम का शॉल–श्रीफल देकर सम्मान करते हुए।)



(डॉ. महेंद्र साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) हिंदी कार्यशाला का संचालन करते हुए)

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. वाय. जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर तथा इस कार्यशाला के प्रमुख अतिथि वक्ता डॉ. जयंत मेश्राम प्रधान वैज्ञानिक, फसल उत्पादन विभाग, मंचासीन महानुभवों एवं कार्यशाला में सहभागी समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कार्यशाला के मुख्य उद्देश पर प्रकाश डाला। डॉ. (श्रीमती) रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कार्यशाला के मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. जयंत मेश्राम के व्यक्ति परिचय से सभा को अवगत कराया।



(डॉ. वाय. जी. प्रसाद, निदेशक महोदय उद्घाटन संबोधन करते हुए)

डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने अपने उद्घाटन संबोधन में सभा को संबोधित करते हुए कहा कि मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि संस्थान में राजभाषा हिंदी के सक्रिय प्रचार–प्रसार हेतु संस्थान का हिंदी अनुभाग सराहनीय कार्य कर रहा है। संस्थान में नियमित रूप से राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठकों का आयोजन किया जाता है और साथ ही नियमित रूप से हर तिमाही में विभिन्न जनउपयोगी विषयों पर एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। आज की इस हिंदी कार्यशाला का विषय भी विश्व बंधुत्वता एवं जनकल्याण की भावना से जुड़ा हुआ है, जिससे हम सभी लाभान्वित होंगे।

हिंदी कार्यशाला के मुख्य अतिथि वक्ता डॉ. जयंत मेश्राम ने इस कार्यशाला के विषय 'हम सभी इंसान जुड़े हुए है धरती पर, इस विश्व में : एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण' पर बड़े ही रोचक एवं मनोरंजक ढंग से प्रकाश डालते हुए उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बड़े ही वैज्ञानिक ढंग से यह बताया की मानव, धरती एवं ब्रम्हांड की उत्पत्ती और उनके विकास के पीछे कौन से महत्वपूर्ण कारक है और वे कैसे जीवन उपयोगी है। आज की आधुनिक संचार पद्धति एवं यातायात के संसाधनों ने तो पूरे विश्व को एक कुटुंब की भाँति एक–दुसरे से जोड़ दिया है, इसलिए तो कहा जाता है "वसुधैव कुटुम्बकम्" और साथ ही आज की इस अत्याधुनिक वैद्यकिय एवं चिकित्सा शास्त्र पद्धति ने तो मानव जीवन में एक क्रांतिकारी बदलाव लाते हुए उसे एक नया आयाम प्रदान किया है।







(प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. जयंत मेश्राम, प्रधान वैज्ञानिक, फसल उत्पादन विभाग, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर संस्थान में आयोजित हिंदी कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए)

इस हिंदी कार्यशाला का कुशल संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (रा.भा.) ने किया एवं आभार डॉ (श्रीमती) रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने माना।

भूकम्पों का वर्गीकरण और रिक्टर स्केल पर उनकी तीव्रता

2.0 से कम	–	आमतौर पर महसूस नहीं होता, मगर रिकार्ड किया जा सकता है।
2.0 से कम	–	आमतौर पर महसूस नहीं होता, मगर रिकार्ड किया जा सकता है।
2.0 से 2.9	–	महसूस किया जा सकता है।
3.0 से 3.9	–	कुछ लोगों द्वारा महसूस किया जा सकता है।
4.0 से 4.9	–	अधिकतर लाग महसूस करते हैं।
5.0 से 5.9	–	तबाही वाले झटके
6.0 से 6.9	–	आबादी वाले इलाकों में तबाही
7.0 से 7.9	–	भीषण भूकम्प, भारी तबाही
8.0 से अधिक	–	जबर्दस्त तबाही, केन्द्र बिन्दु के आस–पास महाविनाश

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर द्वारा 'प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग' के कार्मिकों हेतु आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 18 अप्रैल, 2023) हिंदी कार्यशाला रिपोर्ट।

भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में मुख्य अतिथि डॉ. वाय.जी. प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. के. रथिनवेल, भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर अतिथि व्याख्याता श्री अ.अं. गोस्वामी, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, मार्गदर्शक डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा), भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर तथा श्रीमती के. एस. सुभश्री, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर की मुख्य उपस्थिति में केंद्र में प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग के कार्मिकों हेतु एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का सफलता पूर्वक आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला का संचालन डॉ. महेंद्र कुमार साहू ने किया और इस हिंदी कार्यशाला में प्रशासनिक/तकनीकी संवर्ग के लगभग 18 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सहभागी होकर इस आयोजन को सफल बनाया।



डॉ. वाय.जी.प्रसाद, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर का पुष्पगुच्छ द्वारा हार्दिक स्वागत करते हुए



डॉ. के. रथिनवेल, प्रमुख, क्षे.कें., कोयंबटूर एवं डॉ. वाय.जी. प्रसाद की अध्यक्षता में क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर में आयोजित हिंदी कार्यशाला का परिदृश्य।

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में केंद्राध्यक्ष डॉ. के. रथिनवेल ने मुख्य अतिथि डॉ. वाय.जी. प्रसाद निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर का तथा इस कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों एवं कर्मचारीयों का हार्दिक स्वागत किया ।

डॉ. वाय.जी. प्रसाद ने अपने उद्घाटन संबोधन में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि संवैधानिक रूप से हिंदी इस देश की राजभाषा होने के नाते हमारा यह संवैधानिक एवं नैतिक उत्तरदायित्व बन पड़ता हैं कि हम अपने सरकारी कार्यालयीन कार्यों में इसका अधिक से अधिक उपयोग कर इसके सक्रिय प्रचार–प्रसार में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करें। वास्तव में इस तरह की हिंदी कार्याशाला के आयोजन का मुख्य उद्देश्य यही हैं कि कैसे हम बेहिचक अपने दैनिक कार्य व्यवहार में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक उपयोग कर राष्ट्रहित में इसका गौरव बढ़ाएँ।



श्री अ.अं. गोस्वामी, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.–के.क.अनु.सं., नागपुर हिंदी कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित करते हुए।

इस कार्यशाला के अंतिम चरण में सहभागी प्रतिक्रिया स्वरूप अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए श्रीमती के.एस. सुभश्री, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर ने कहा कि यह कार्यशाला अपने लक्ष्य को हासिल करने मे पूर्णरुपेन सफल रही हैं। साथ ही अतिथि वक्ता के मार्गदर्शन से कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों/कर्मचारियों को अच्छी जानकारी मिली है जिससे निसंदेह उन्हें अपना दैनिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने हेतु बढ़ावा मिलेगा। कार्यक्रम के अंतिम बिन्दु पर इस कार्यशाला में सहभागी समस्त हिंदी प्रेमी अधिकारियों/कर्मचारियों का आभार केंद्र की प्रभारी अधिकारी (हिंदी) श्रीमती के. एस. सुभश्री, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, कोयंबटूर ने माना।

विचार-कण

- दुनिया में जितनी भी तरह की फिजूलखर्ची हो सकती हैं उनमें से समय की बरबादी सबसे नुकसानदेह है। –थियोफ्रस्टस
- समाजशास्त्र के अनुसार समाज में महिला का स्थान सभ्यता के स्तर को दर्शाता है। – एलिजाबेथ कैडी स्टेनटन
- स्त्री, पुरुष की सहचरी है जो किसी भी दृष्टि से उससे कम नहीं है। – महात्मा गांधी
- शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को, क्या था और क्या है, इसका एहसास कराना तथा क्या हो सकता है, इसकी खोज के लिए प्रोत्साहित करना है। शिक्षा मनुष्य को समझना, मूल्यांकन करना और सम्प्रेषण करना सिखाती है। – ओट्टो क्लेपनर
- जो लोग देखने के इच्छुक है उनके लिए पर्याप्त प्रकाश है और जो इसके विपरीत इच्छ रखते हैं उनके लिए अंधकार है। – ब्लेस पास्कल
- सफलता के लिए मन और आत्मा से प्रयास करने की आवश्यकता पड़ती है और अगर आप सचमुच कुछ हासिल करना चाहते हैं तो उसके लिए अपने मन और आत्मा दोनों को दाँव पर लगा सकते है। – डी. शवार्ट्ज
- किसी युद्ध को जीतने को सबसे अच्छा तरीका यह है कि इसे रोक दिया जाए। – जॉर्ज कैटलेट मार्शल
- किसी भी व्यक्ति को चाहिए कि उसका जो भी व्यवसाय है उसका सम्मन करे और अपने आप को उसके प्रति समर्पित माने तथा उसक व्यवसाय को करते हुए जिस सम्मान का हकदार है उसका दावा करे। – चार्ल्स डिकेन्स
- मैं श्रम की गरिमा में विश्वास रखता हूँ। चाहे वह मानसिक हो या फिर शारीरिक। संसार में हर एक प्राणी को वह जीविकोपार्जन को अवसर देता है। – जॉन डी. रॉकफैलर
- शिक्षा का उद्देश्य हमारी अन्तर्दृष्टि को परिपक्व, दृष्टिकोण को व्यापक और विचारधारा को अर्थपूर्ण बनाना है। – डॉ. एस. राधाकृष्णन

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'कार्बनिक कृषि : अमृत पोषण' विषय पर आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 20 सितम्बर, 2023) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट ।

नागपुर वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में डॉ. जी.टी. बेहेरे, विभागप्रमुख, फसल संरक्षण विभाग, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर की अध्यक्षता में एवं अतिथि वक्ता श्रीमती सुनीता चौहान, विषय विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र., नागपुर तथा सादर मंचासीन डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं डॉ. महेंद्र कुमार साहू, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी(रा.भा.) की गणमान्य उपस्थिति में संस्थान में कार्यरत समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु 'कार्बनिक कृषि : अमृत पोषण' विषय पर संस्थान के प्रशिक्षण हॉल में दिनांक 20 सितम्बर, 2023 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में किया गया।



(डॉ जी.टी. बेहेरे, विभागप्रमुख, फसल संरक्षण विभाग, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर हिंदी कार्यशाला की अतिथि वक्ता श्रीमती सुनीता चौहान, विषय विशेषज्ञ, के.वी.के. नागपुर का शॉल श्रीफल देकर स्वागत करते हुए।)









(डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक हिंदी कार्यशाला का संचालन करते हुए)

सर्वप्रथम अपने स्वागत भाषण में डॉ. रचना पाण्डे ने कार्यक्रमाध्यक्ष डॉ. जी.टी. बेहेरे तथा इस कार्यशाला के प्रमुख अतिथि वक्ता श्रीमती सुनीता चौहान एवं मंचासीन डॉ. महेंद्रकुमार साहू तथा कार्यशाला में सहभागी समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत करते हुए हिंदी कार्यशाला के मुख्य उद्देश पर प्रकाश डाला।

प्रमुख वक्ता के रूप में कार्यशाला में सहभागी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को 'कार्बनिक कृषि : अमृत पोषण' विषय पर संबोधित करते हुए श्रीमती सुनीता चौहान ने कहा कि आज देश में निरन्तर बढ़ते हुए विभिन्न प्रकार के प्रदूषण का प्रतिकूल प्रभाव देश की जनसंख्या पर पड़ रहा है। अतः इस स्थिति में हम कृषि से जुडे वैज्ञानिकों का यह उत्तरदायित्व हो जाता है कि हम कार्बनिक कृषि को बढ़ावा दे जो स्वास्थ्य के दृष्टीकोण से इस देश की जनता के लिए अमृत आहार के रूप में साबित हो।





(डॉ. जी.टी. बेहेरे, विभाग प्रमुख, फसल संरक्षण विभाग अध्यक्षीय संबोधन करते हुए)

डॉ. जी.टी. बेहेरे, विभागप्रमुख, फसल संरक्षण विभाग, भा.कृ.अनु.प.– केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में सभा को संबोधित करते हुए कहा कि मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि संस्थान में राजभाषा हिंदी के सक्रिय प्रचार–प्रसार हेतु संस्थान का हिंदी अनुभाग सराहनीय कार्य कर रहा है। संस्थान में नियमित रूप से राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठकों का आयोजन किया जाता है और साथ ही नियमित रूप से हर तिमाही में विभिन्न जनउपयोगी विषयों पर एक हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया जाता है। आज की इस हिंदी कार्यशाला का विषय 'कार्बनिक कृषि : अमृत पोषण' भी जनकल्याण की भावना से जुड़ा हुआ है, जिससे हम सभी लाभान्वित होंगे।

इस हिंदी कार्यशाला का कुशल संचालन डॉ रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर ने किया।

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर द्वारा 'कपास के परिप्रेक्ष्य मे' विषय पर आयोजित 'एक दिवसीय (दिनांक : 28 दिसम्बर, 2023) हिंदी कार्यशाला' रिपोर्ट

नागपुर वर्धा रोड, पांजरी फार्म स्थित भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर कार्यालय में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में दिनांक 28 दिसम्बर, 2023 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें दादा रामचंद भाकरू सिंधू महाविद्यालय, नागपुर के 30 छात्रों ने हिस्सा लिया। साथ ही इस अवसर पर इसी महाविद्यालय की मुख्याध्यापिका डॉ. शारदा भागचंदानी अपने दो शिक्षिकाओं के साथ उपस्थित थी। डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक अतिथि वक्ता ने कार्यशाला में सहभागी कार्मिकों/छात्रों को 'कपास के परिप्रेक्ष्य में' विषय पर संबोधित किया।



डॉ. रचना पाण्डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने 'कपास के परिप्रेक्ष्य में' विषय पर आयोजित हिंदी कार्यशाला में सहभागी कार्मिकों को संबोधित किया।

डॉ. रचना पाण्डे ने इस हिंदी कार्यशाला में सहभागी कार्मिकों/छात्रों को 'कपास' संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए कहा कि कपास भारत की आदि फसल है, जिसकी खेती बहुत ही बड़ी मात्रा में की जाती है। आर्यवर्त में ऋगवैदिक काल से ही इसकी खेती की जाती रही है। भारत में इसका इतिहास काफी पुराना है। हड़प्पा निवासी कपास के उत्पादन में संसार भर में प्रथम माने जाते थे।

कपास इस देश की एक नकदी फसल है और इससे रूई तैयार की जाती है, जिसे सफेद सोना कहा जाता है। कपास विविध प्रकार के कीटों से भी ग्रसित रहता है जिस कारण उसकी उत्पादकता में कमी आती है। कार्यशाला के अन्तर्गत कपास में पाये जाने वाले विभिन्न कीटों जैसे कि रसचूसक कीट एवं बॉलवर्म आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी।

कीटों का वानस्पतिक अर्क, ट्रेप जैसे कि फेरोमॉन ट्रेप, पीले चिपचिपे ट्रेप, ट्राइकोग्रामा कार्ड आदि के द्वारा प्राकृतिक संतुलन बनाये रखते हुए इन कीटों के नियंत्रण के विषय में भी व्याख्यान दिया गया। संस्थान में उपस्थित इन्सेक्ट्री में कृत्रिम भोजन पर पाले जाने वाले कीटों का भी छात्रों द्वारा अवलोकन किया गया। वर्तमान समय में कपास की खेती एक बहुत बड़े क्षेत्रफल में हो रही है। इस प्रकार से हम देखते है कि मानव जीवन में इसका एक महत्वपूर्ण स्थान है।

14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रुप में प्रतिष्ठित किया गया। संविधान के तीन भागों–5, 6 और 17 के कुल 11 अनुच्छेदों में राजभाषा से संबंधित प्रावधानों का विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है। भाग 5 के अनुच्छेद 120 में संसद में प्रयोग की भाषा तथा भाग 6 अनुच्छेद 210 में विधान मण्डलों में प्रयोग की जाने वाली भाषा के सम्बन्ध में निर्देश दिए गए हैं। संविधान के भाग 17 में संघ की राजभाषा, राज्यों की राजभाषा, उच्च न्यायालयों की और सर्वोच्च न्यायालय की भाषा तथा व्यथा निवारण हेतु प्रयुक्त भाषा और हिंदी के विकास के लिए निर्देशों का विशद विवेचन किया गया है।

संसद में प्रयुक्त होने वाली भाषा (अनुच्छेद 120)

इस अनुच्छेद की व्यवस्था के अनुसार संसद का कार्य हिंदी अथवा अंग्रेजी में किया जाएगा। जो संसद सदस्य हिंदी अथवा अंग्रेजी में अपने विचार प्रस्तुत नहीं कर पाते हों, वे राज्यसभा के सभापति तथा लोकसभा अध्यक्ष की अनुमति से अपनी मातृभाषा में सदन में विचार रख सकते हैं।

विधान मण्डलों में प्रयोग की जाने वाली भाषा (अनुच्छेद 210)

राज्य के विधान मण्डल का कामकाज उस राज्य की राजभाषा या राजभाषाओं में अथवा हिंदी में या अंग्रेजी में किया जाएगा। जो सदस्य उपर्युक्त भाषाओं में से किसी भी भाषा में अपने विचार प्रस्तुत नहीं कर सकते हों, उन्हें विधान सभा अध्यक्ष या विधान परिषद के सभापति द्वारा अपनी मातृभाषा में सदन को सम्बोधित करने को अनुमति प्रदान की जा सकती है।

संघ की राजभाषा (अनुच्छेद 343)

संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी और संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा।

26 जनवरी, 1965 तक संघ के उन शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता रहेगा, जिनके लिए संविधान लागू होने के ठीक पहले होता था।

राजभाषा आयोग एवं संसदीय समिति (अनुच्छेद 344)

राष्ट्रपति महोदय द्वारा संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले संसद सदस्यों में से आयोग का गठन किया जाएगा जो कि राजभाषा विषयक विभिन्न पक्षों के सम्बन्ध में अपनी सिफारिश देगा। सिफारिश प्रस्तुत करने समय आयोग भारत की औद्योगिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक उन्नति का तथा लोक सेवाओं के सम्बन्ध में अहिंदी भाषाओं के न्यायसंगत दावों व हितों का सम्यक् ध्यान रखेगा। राजभाषा आयोग द्वारा प्रस्तुत की गई सिफारिशों की परीक्षा करने के लिए 30 सदस्यीय संसदीय समिति का गठन किया जाएगा जिसमें 20 सदस्य लोकसभा व 10 राज्यसभा के होंगे।

राज्य की राजभाषा अथवा राजभाषाएं (अनुच्छेद 345)

राज्य का विधानमण्डल कानून द्वारा उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं में से किसी एक अथवा अधिक भाषाओं को या हिंदी को उस राज्य के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा अर्थात् उस राज्य की भाषा के रुप में अंगीकरण कर सकेगा।

दो राज्यों अथवा राज्य और संघ के बीच संचार की भाषाएं (अनुच्छेद 346)

संघ की शासकीय प्रयोजनों के लिए प्राधिकृत भाषा (हिंदी, अंग्रेजी) एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा किसी राज्य तथा संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा होगी।

उच्चतम न्यायालय/उच्च न्यायालयों आदि की भाषा (अनुच्छेद 348)

जब तक संसद विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय की समस्त कार्यवाहियों, विधेयकों और उनके संशोधनों, संसद तथा विधान मण्डल के अधिनियमों, आदेशों, नियमों, विनियमों आदि के प्राधिकृत पाठ अंग्रेजी भाषा में होंगे। किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से उच्च न्यायालय की कार्यवाहियों के लिए हिंदी भाषा या उस राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाली किसी अन्य भाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा। यदि किसी राज्य के विधेयकों, अधिनियमों, अध्यादेशों आदि में प्रयोग हेतु उस राज्य के राज्यपाल द्वारा अंग्रेजी भाषा से भिन्न कोई अन्य भाषा निर्धारित की गई हो, वहां उस राज्य के राजपत्र में राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से प्रकाशित अंग्रेजी भाषा में प्राधिकृत पाठ माना जाएगा।

व्यथा निवारण के लिए अधिवेदन Representation की भाषा (अनुच्छेद 350)

कोई भी व्यक्ति संघ या राज्य सरकार के पदाधिकारी को संघ या उस राज्य में प्रयोग होने वाली किसी भाषा में अपना अभिवेदन दे सकता है।

हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश (अनुच्छेद 351)

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामाजिक संस्कृति (Composite culture) के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। इस अनुच्छेद में हिंदी भाषा के शब्द–भण्डार को समृद्ध बनाने की बात की गई है। हिंदी भाषा की प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और संविधान की आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के रूप, शैली और पदों को आत्मसात किया जाएगा। शब्द भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण किए जाएंगे।

संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित भाषाएँ

1. असमिया 2. उड़िया 3. उर्दू 4. कन्नड़ 5. कश्मीरी 6. गुजराती 7. तमिल 8. तेलगु 9. पंजाबी 10. बंगला 11. मराठी 12. मलयालम 13. संस्कृत 14. सिंधी 15. हिंदी 16. नेपाली 17. कोंकणी 18. मणीपुरी

राजभाषा अधिनियम 1963

पन्द्रह वर्ष की अवधि के दौरान केन्द्रीय सरकार के कार्य तन्त्र में हिंदी के प्रयोग के लिए सभी व्यवस्थाएं की जानी थीं। संवैधानिक व्यवस्था को कार्यान्वित करने के लिए संसद ने 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित किया जिसे 'राजभाषा अधिनियम 1963' कहा जाता है। इसके अन्तर्गत 26 जनवरी, 1965 के बाद भी हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा के प्रयोग को भी संविधान सम्मत बनाए रखा गया। 1967 में इस अधिनियम में संशोधन किया गया और कुछ विशिष्ट कार्यों में हिंदी के साथ–साथ अंग्रेजी का प्रयोग भी रखा गया। प्रशासनिक रिपोर्ट, राजपत्र में प्रकाशित अधिसूचनाएं, संसद में रखे जाने वाले समस्त कागजात, कार्यालय आदेश, परिपत्र, मेनुअल, फार्म, अखिल भारतीय स्तर के विज्ञापन आदि मदें इसी श्रेणी में आती है।

अधिनियम की धारा 5 में स्पष्ट किया गया है कि भारत के राजपत्र (गॅजेट) में राष्ट्रपति के प्राधिकार से अधिनियम, अध्यादेश का प्रकाशित हिंदी अनुवाद उसका हिंदी में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

अधिनियम की धारा 6 के अनुसार यदि राज्य के राज्यपाल द्वारा जारी अध्यादेशों और विधानमण्डल द्वारा पारित अधिनियम में हिंदी से भिन्न कोई भाषा प्रयोग की गई है तो राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से राज्य के राजपत्र में प्रकाशित हिंदी अनुवाद उसका हिंदी भाषा में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

उच्च न्यायालयों के निर्णयों आदि में हिंदी या अन्य राजभाषा का वैकल्पिक प्रयोग (धारा 7)

राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से, अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी या उस राज्य की राजभाषा का प्रयोग उस राज्य के उच्च न्यायालय द्वारा पारित या दिए गए किसी निर्णय, डिग्री या आदेश के प्रयोजनों के लिए प्राधिकृत कर सकता है।

राजभाषा नियम, 1976

1976 में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए कुछ नियम निर्धारित किए गए जिन्हें 'राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम 1976' कहा जाता है। ये नियम तमिलनाडु राज्य को छोड़कर सम्पूर्ण भारत पर लागू हैं।

इन नियमों के अन्तर्गत देश का भाषावार वर्गीकरण तीन क्षेत्रों में किया गया है अर्थात् :

क्षेत्र 'क': हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल, दिल्ली एवं संघशासित क्षेत्र अण्डमान निकोबार द्वीप समूह।

क्षेत्र 'ख': महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब और चण्डीगढ़ संघ शासित क्षेत्र।

क्षेत्र 'ग' : उपर्युक्त राज्यों तथा तमिलनाडु को छोड़कर, अन्य सभी राज्य तथा संघशासित क्षेत्र।

नियम 5 के अन्तर्गत यह व्यवस्था है कि हिंदी में प्राप्त सभी पत्रों का उत्तर केवल हिंदी में दिया जाएगा।

नियम 6 के प्रावधानों के अनुसार राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) में उल्लिखित दस्तावेजों को द्विभाषिक जारी करवाने का दायित्व उस दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी का होगा।

नियम 7

कर्मचारी आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी या अंग्रेजी में कर सकता है। हिंदी में हस्ताक्षरित आवेदन, अपील या अभ्यावेदन का उत्तर हिंदी में दिया जाएगा।

नियम 8

यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा संबंधी विषयों (जिनके अन्तर्गत अनुशासनिक कार्रवाइयां भी हैं) से संबंधित कोई आदेश या सूचना, जिसका कर्मचारी पर तामील किया जाना अपेक्षित है, यथस्थिति हिंदी या अंग्रेजी में होनी चाहिएं तो वह उसे उसी भाषा में उपलब्ध करवाई जाएगी। इस नियम में यह भी व्यवस्था की गई है कि केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है हिंदी के किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का हो। कोई दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का है या नहीं, इसका विनिश्चय विभाग या कार्यालय के प्रधान द्वारा किया जाएगा।

नियम 8 (4) के अन्तर्गत यह व्यवस्था है कि जिन कार्यालयों में 80 प्रतिशत या अधिक अधिकारी/कर्मचारी हिंदी का प्रवीणता स्तर का ज्ञान रखते हैं उन्हें इस नियम के अन्तर्गत विर्निदिष्ट किया जाएगा। ऐसे कर्मचारियों/अधिकारियों को अपना सम्पूर्ण

कार्य हिंदी में करने के लिए व्यक्तिशः आदेश दिए जा सकते हैं।

हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान एवं हिंदी में प्रवीणता

नियम 9 हिंदी में प्रवीणता प्राप्त तथा नियम 10 हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर्मचारी को परिभाषित करता है। कर्मचारी के बारे में समझा जाएगा कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है, यदि

(क) उसने मैट्रिक परीक्षा या उसके कोई समतुल्य या उच्चतर परीक्षा, हिंदी को माध्यम के रूप में अपनाकर, उत्तीर्ण की है, अथवा

(ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक के समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी उसका एक वैकल्पिक विषय था, अथवा

(ग) वह फार्म में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है।

कर्मचारी के बारे में समझा जाएगा कि उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है, यदि उसने :

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उच्चतर परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण की है, अथवा

(ख) केन्द्रीय सरकार को हिंदी शिक्षण योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण की है, अथवा

(ग) केन्द्रीय सरकार द्वारा विर्निदिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है अथवा

(घ) निर्धारित फार्म में यह घोषण करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

नियम 10 (4) में यह व्यवस्था है कि जिन कार्यालयों के 80 प्रतिशत या अधिक अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त है उन्हें भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया जाएगा ताकि इन कार्यालयों के साथ सरकारी विभाग अन्य कार्यालय या व्यक्ति हिंदी में पत्राचार करें। सभी कार्यालय का दायित्व है कि वे निर्धारित समय के अन्दर सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान दिलाने की व्यवस्था करें।

नियम 12 के अन्तर्गत कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का दायित्व है कि वह यह सुनिश्चित करें कि उसके संगठन/कार्यालय में अधिनियम व नियमों का समुचित रूप से अनुपालन किया जा रहा है।

भारत का विश्व में स्थान

विश्व में भारत का स्थान विभिन्न फसलों के उत्पादन/अथवा संख्या में निम्नवत् है –

प्रथम – दूध, केला, आम, मसाले(विश्व का 18 प्रतिशत), नारियल(विश्व का 90 प्रतिशत उत्पादन), चाय, अदरक (65 प्रतिशत), हल्दी(76 प्रतिशत) फूलगोभी, कपास की संकर प्रजातियों के विकास में, दलहनी फसलों के क्षेत्रफल में, काजू (विश्व का 40 प्रतिशत), जूट, तिल, भैंस संख्या, दूध।

द्वितीय – चावल (चीन-I), गेहूँ(चीन-I), फलों (विश्व का 10 प्रतिशत), सब्जियों (चीन-I), आइसलैण्ड मत्स्य, कृषित भूमि (Arable land), राई–सरसों, प्याज, बकरी संख्या तथा (cattle)गाय।

तृतीय – धान्य(cereals), कपास उत्पादन, पातगोभी, भेड़ संख्या।

चतुर्थ – रबर(मलेशिया-I), मोटे अनाज, ट्रैक्टर संख्या, उर्वरक खपत(I-अमरिका), II-पूर्व USSR, III-चीन), Ducks (बतखें)

पंचम – कहवा या कॉफी(I पर ब्राजील, जहाँ विश्व का 20 प्रतिशत उत्पादन है), विट्ठा बहाव या लक्स (Wastes and Studge), मुर्गी संख्या।

छठवाँ – उँट संख्या।

1. निम्नलिखित पत्रों का प्रारुप केवल हिंदी में प्रस्तुत करें :
   1. क तथा ख क्षेत्र की राज्य सरकारों या संघ राज्य क्षेत्र के प्रशासन और इन क्षेत्रों में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों आदि और गैर सरकारी व्यक्तियों को जाने वाले सभी पत्रादि।
   2. हिंदी में प्राप्त सभी पत्र आदि के उत्तर।
   3. किसी कर्मचारी द्वारा हिंदी में दिए या हस्ताक्षर किए गए आवेदन, अपील या अभ्यावेदन का उत्तर।
   4. संबंधित पत्रावलियों पर टिप्पणियाँ।
2. द्विभाषी रुप अर्थात् हिंदी और अंग्रेजी दोनों में जारी किये जाने वाले कागजात :

   1. संकल्प (Resolution) 2. अधिसूचना (Notifications) 3. सामान्य आदेश (General Orders) 4. नियम 5. प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट 6. प्रेस विज्ञाप्तियाँ 7. संविदाएं (Contracts) 8. एग्रीमैंटस (Agreements) 9 परमिट (Permits) 10. लाइसेंस (Licence) 11. टेंडर नोटिस (Tender Notice) 12. टेंडर फार्म (Forms of Tender) 2. संसद के सदन या दोनों सदनों में प्रस्तुत प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट और सभी सरकारी कागजात।

   (सामान्य आदेशों में सभी प्रकार के आदेश, विभागीय प्रयोग वाले या स्थाई किस्म के निर्णय, कर्मचारियों के लिए सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस, विभागीय प्रयोग या सरकारी कर्मचारियों के लिए सभी परिपत्र शामिल हैं)
3. हिंदी में लिखे या हस्ताक्षर किए सभी पत्रों, आवेदनों, अपीलों या अभ्यावेदनों के उत्तर हिंदी में ही दिए जाएँ।
4. उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तरांचल, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, दिल्ली और संघ शासित राज्य अण्डमान निकोबार द्वीप समूह तथा महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब और संघ राज्य क्षेत्र चण्डीगढ़ में स्थित किसी कार्यालय या व्यक्ति द्वारा भेजे जाने वाले और उन्हें सम्बोधित मूल पत्र हिंदी में ही भेजे जाएं।
5. उपर्युक्त सूची में शामिल राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को छोड़कर अन्य राज्यों और संघ राज्य स्थित केवल केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों को हिंदी में पत्र भेजे जा सकते हैं।

नोट : उपर्युक्त कागजात और पत्रों पर हस्ताक्षर करनेवाले अधिकारी उन्हें हिंदी और अंग्रेजी में भेजने और निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार हिंदी में पत्र व्यवहार के लिए उत्तरदायी होंगे।

समाज शास्त्र के अनुसार समाज में महिला का स्थान सभ्यता के स्तर को दर्शाता है। – एलिजाबेथ कैडी स्टेनटन

अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता समझता है। – महात्मा गांधी

सरकारी कामकाज में सरल हिन्दी भाषा का प्रयोग होना चाहिए। हिन्दी एक जानदार भाषा है वह जितनी ही बढ़ेगी, देश का उतना ही कल्याण होगा। – पं जवाहर लाल नेहरू

महान व्यक्तियों के मौलिक व वैकल्पिक नाम

वैकल्पिक नाम	मौलिक नाम		वैकल्पिक नाम	मौलिक नाम
आन्ध्र केसरी	टी. प्रकाशनम		ग्रांड ओल्डमैन ऑफ इण्डिया	दादा भाई नौराजी
अन्ना	सी.एन अन्नादुराई		गुरुदेव	रवीन्द्र नाथ टैगोर
अपोजल ऑफ फ्री ट्रेड	रिचर्ड कॉबडन		गुरूजी	एम.एस.गोलवलकर
बादशाह खाँ व सीमान्त गाँधी	खान अब्दुल गफ्फार खान		आइक ड्यूक	ड्यूक ऑफ वेलिंगटन
बंग बंधु	शेख मुजीबुर रहमान		कुवेम्पु	के.वी.पुटप्पा
बापू	महात्मा गाँधी		लेडी विद द लेम्प	फ्लोरेंस नाइटिंगेल
वार्ड ऑफ एवन	विलियम शेक्सपियर		पंजाब केसरी	लाला लाजपतराय
सी. आर.	सी. राजगोपालचारी		लिटिल कॉरपोरल	नेपोलियन
दीन बन्धु	सी. एफ. एण्ड्रूज		लोकनायक	जयप्रकाश नारायण
डेजर्ट फॉक्स	जनरल रोमेल		लोकमान्य	बाल गंगाधर तिलक
देशबन्धु	सी. आर. दास		मैन ऑफ ब्लड एण्ड आयरन	बिसमार्क
राष्ट्रपिता	महात्मा गाँधी		मैन ऑफ डेस्टिनी	नेपोलियन
फ्यूहरर	अडोल्फ हिटलर		मैन ऑफ आयरन	सरदार वल्लभ भाई पटेल
जी. बी. एस.	जार्ज बर्नार्ड शॉ		मैन ऑफ पीस	लाल बहादुर शास्त्री
			नाइटिंगेल ऑफ इण्डिया	सरोजिनी नायडू

सफलता बनाम विफलता

सफल	विफल
उपलब्धियों को देखता है।	तकलीफों को देखता है।
संभावना को तलाशता है।	देखता है कि क्या अंसभव है।
हर किसी पर विश्वास रखता हैं।	सोचता है कि उसे सभी धोखा देंगे।
भवष्यि को देखता है।	भूतकाल को देखता है।
बोलने के पहले सोचता है।	बोलने के बाद सोचता है।
नम्रता के साथ अपने ठोस तर्क पेश करता है।	कड़े शब्दों में कुतर्क करता है।
अपने सिद्धांतों पर टिका रहता है परंतु छोटी– मोटी बातों पर समझौता कर लेता है।	छोटी –मोटी बातों पर अड़ा रहता है और अपने सिद्धांतों से समझौता कर लेता है।
सहानुभूति के इस विचार में विश्वास करता है कि दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करो, जैसा तुम दूसरों से चाहते हो।	इस विचार में विश्वास करता है कि उसका व्यवहार चाहे जैसा हो, पर लोग उसके अनुकूल व्यवहार करें।
कुछ करके दिखाता है।	कुछ होने का इंतजार करता है।
योजना बनाकर जीत का तैयारी करता है।	बिना योजना बनाए सपने देखता है।

विभिन्न विषयों से सम्बन्धित विज्ञान

एरोनोटिक्स – विमान की उड़ानों से सम्बद्ध विज्ञान।

एनेटोमी – जीवों के शरीर की आन्तरिक रचना सम्बन्धी विज्ञान।

एन्थ्रोपोलोजी – मानव के विकास तथा सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन।

कीमोथेरपी – यह चिकित्सा विज्ञान की वह शाखा है, जो रासायनिक यौगिकों से उपचार करती है।

ज्योतिर्विज्ञान – आकाश के पिण्डों का अध्ययन करने वाला विज्ञान।

अन्तरिक्ष विज्ञान – अन्तरिक्ष यात्रा सम्बन्ध विज्ञान।

बायोलॉजी – जीवों के बारे में समस्त प्रकार का अध्ययन करने वाला विज्ञान।

एक्सबायलोजी – पृथ्वी से परे, अर्थात् अन्त ग्रहों पर जीवन या जीवन के अस्तित्व की सम्भावनाओं से सम्बन्धित विज्ञान।

वनस्पति विज्ञान – पेड़ पौधों या वनस्पतियों का अध्ययन करने वाला विज्ञान।

क्रिप्टोग्राफी – गुप्त लेखन के अध्ययनों का विज्ञान।

साइरोजेनिक्स – निम्न ताप के विभिन्न प्रयोगों, नियन्त्रण का अध्ययन करने वाला विज्ञान।

साइटोजेनेटिक्स – कोशिका तथा आनुवांशिकी का अध्ययन करने वाला विज्ञान।

एन्टोमोलोजी – कीटाणु का विज्ञान।

भूगर्भ शास्त्र – पृथ्वी की दशा व बनावट के अध्ययन का विज्ञान।

हॉर्टीकल्चर – बागवानी से सम्बद्ध विज्ञान।

आइकोनोग्राफी – चित्रों और मॉडलों से पढ़ाने सम्बन्धी विज्ञान।

ज्यूरिस्प्रडेन्स – विधिशास्त्र।

लेक्सीकोग्राफी – शब्दकोष का संकलन।

न्यूरोलोजी – तंत्रिका का अध्ययन करने वाला विज्ञान।

न्यूमिस्मेटिक्स – पुराने सिक्के और पदकों का अध्ययन करने वाला विज्ञान।

ओडोन्टोग्राफी – दाँतों का अध्ययन करने वाला विज्ञान।

ओर्नीथोलोजी – पक्षियों का अध्ययन करने वाला विज्ञान।

ओस्टियोलोजी – अस्थियों का अध्ययन करने वाला विज्ञान।

पेनोलोजी – दण्ड विज्ञान तथा जेल व्यवस्था का विज्ञान।

फ्रेनोलोजी – खोपड़ी और मस्तिष्क का विज्ञान।

फिलेटली – डाक टिकटों का संग्रह।

फिलोलोजी – भाषा का अध्ययन विषयक विज्ञान।

फोनेटिक्स – भाषा की आवाज का अध्ययन विषयक विज्ञान।

पोमोलोजी – फलों का अध्ययन करने वाला विज्ञान।

सोशियोलोजी – सामाजिक समस्याओं और मानवीय प्रगति का विज्ञान।

सीज्मोलोजी – भूचालों का अध्ययन करने वाला विज्ञान।

थैराप्यूटिक्स – रोगों का ठीक होना और स्वास्थ के नियमों से सम्बन्धित अध्ययन।

सेरीकल्चर – रेशम के कीड़ों का पालना।

जूलौजी – जन्तु विज्ञान।

जीओलॉजी – भूगर्भ विज्ञान

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं है। मेरे विचार में हिन्दी ही ऐसी भाषा है।

– लोकमान्य तिलक

काया खेत किसान मन, पाप पुण्य दो बींज
बोया लूनै अपना, काया कसकै जीव।।

भावार्थ : मनुष्य का शरीर खेत तथा मन किसान की भाँति है। यहाँ शुभ–अशुभ, पाप–पुण्य इत्यादि दो बीज जैसे है। जो जिको बोयेगा, उसको वैसा ही फल प्राप्त होगा।

– कबीर दास

अल्टी मीटर – इस उपकरण का वायुयानों में यह पता लगाने के लिये उपयोग किया जाता है कि वायुयान कितनी उँचाई पर उड़ रहा है।

अनीमोमीटर – वायु में उपयोग होने वाले इस उपकरण से पता लगता है कि वायु की गति क्या है और उसका दाब कितना है?

ओडियोमीटर – ध्वनि की तीव्रता मापने के लिये इसका उपयोग किया आता है।

ओडियोफोन – सुनने में सहायता के लिये कान में लगाया जाने वाला उपकरण ओडियोफोन कहलाता है।

बैरोमीटर – इस उपकरण से वायुमण्डल का दाब नापा जा सकता है। इससे किसी स्थान की समुद्र तल से ऊँचाई का पता भी चलता है।

बैरोग्राफ – इस उपकरण के द्वारा वायुमण्डल के दाब में होने वाले परिवर्तनों का पता लगाया जाता है।

कैलोरीमीटर – इस उपकरण का उपयोग ताप की मात्रा नापने के लिये किया जाता है।

कारब्यूरेटर – इसका अन्तर्दहन इंजन में उपयोग होता है। इस उपकरण में वायु और पेट्रोल के वाष्प कणों को मिलाया जाता है।

क्रोनोमीटर – घड़ी की तरह इस उपकरण को जहाजों में समय का पता लगाने के लिये उपयोग किया जाता है।

क्रेसकोग्राफ – इसका आविष्कार जे. सी. बोस ने किया था। इसका उपयोग पौधों की बढ़वार नापने के लिये किया आता है।

कार्डियोग्राम – हृदय के संवेदनों या कम्पनों को रिकार्ड करने के लिये इसका उपयोग किया जाता है।

डायलिसिस – गुर्दों के खराब हो जाने पर खून को साफ करने वाली मशीन डायलिसिस मशीन कहलाती है।

इलैक्ट्रोमीटर – विद्युत की मात्रा को मापने के लिये बनाया गया उपकरण इलैक्ट्रोमीटर कहलाता है।

हाइड्रोफोन – यह जल के भीतर ध्वनि मापने के लिये बनाया गया उपकरण है।

हाइग्रोमीटर – वायुमण्डल की नमी मापने के लिये इसका उपयोग किया जाता है।

लैक्टोमीटर – दूध की शुद्धता मापने के लिये इस उपकरण का उपयोग किया जाता है।

रडार – इसका उपयोग आते हुये वायुयान की दिशा व क्षेत्र को जानने के लिये किया जाता है।

सीस्मोमीटर अथवा सीस्मोग्राफ – यह उपकरण भूकम्प के झटकों को रिकार्ड करता है।

सेक्सटैंट – आकाशीय पिण्डों की कोणीय उच्चता को मापने में इसका उपयोग किया जाता है।

स्टेथिस्कोप – डाक्टरों द्वारा हृदय और फेफड़ों की गति का विश्लेषण इसी उपकरण से किया जाता है।

स्टाप वाच – प्रयोगशाला, खेल–कूदों आदि में समय की सूक्ष्म अवधि को रिकार्ड करने के लिये इसका उपयोग किया जाता है।

स्पीडोमीटर – किसी मोटर अथवा अन्य गाड़ी की चाल का पता लगाने के लिये इस उपकरण का उपयोग किया जाता है।

टेकोमीटर – यह वायुयान और मोटर नौका की चाल को निर्धारित करने वाला यन्त्र है।

मैनोमीटर – यह गैस की दाब को निर्धारित करने वाला उपकरण है।

पाइरोमीटर – इस उपकरण से दूर के पदार्थों के, जिनका तापमान बहुत अधिक होता है, तापमान अंकित किये जाते हैं।

फोटोटेलीग्राफ – तार के द्वारा फोटो भेजने के लिये काम में लाया जाने वाला यन्त्र।

रेनगेज – किसी विशेष स्थान पर हुई वर्षा को मापने के लिये इसका उपयोग किया जाता है।

टेलिस्कोप – यह उपकरण बहुत दूर की वस्तुओं को देखने के काम में आता है।

थर्मोस्टेट – इस यन्त्र द्वारा तापक्रम पर नियन्त्रण किया जाता है और किसी वस्तु का तापमान किसी बिन्दु पर नियत कर दिया जाता है।

चुटकुले

- एक पर्यटक छोटे से नगर के एक होटल में गया और उसने 2 अंडे और एक प्याली चाय मंगवाई। जब बिल आया तो उस में 50 रुपए लिख हुए थे।

  "क्यों, क्या यहाँ अंडे बड़ी मुश्किल से मिलते हैं?" पर्यटक ने पूछा।

  "नहीं, पर्यटक बड़ी मुश्किल से मिलते हैं," वेटर ने जवाब दिया।

- एक दिन संजय बाजार से सामान खरीद कर लाया, जिसमें पत्नी की 2 साड़ियाँ भी थीं, जो उसे पसंद न आई।

  संजय पत्नी का मुँह देखकर समझ गया और चिढ़ाने के अंदाज में बोला, "क्यों जी, साड़ी बहुत पसंद आई?"

  पत्नी चिढ़ कर बोली, "तुम्हारी लाई कभी कोई चीज बढ़िया होती है?"

  संजय ने तत्काल उत्तर दिया, "शायद नहीं, क्योंकि तुम्हें भी मैं ही लाया था।"

- रंजना ने अपनी सहेली अनिता से पूछा, "आखिर तुमने अपने नौकर में क्या देखा जो उससे शादी कर ली?"

  अनिता ने कारण स्पष्ट करते हुए कहा, "दरअसल, वह बहुत बदतमीज हो गया था, मैं उसका दिमाग ठीक करना चाहती थी।"

- एक व्यक्ति थाने में पहुँच कर बोला, "इंस्पेक्टर साहब, मेरे बगीचे में बम पड़ा है।" इंस्पेक्टर ने जवाब दिया, "कोई बात नहीं, अगर 3 दिन तक कोई लेने न आए तो उसे आप रख सकते हैं।

- पति महोदय उदास बैठे थे, लेकिन पत्नी थी कि अपनी ही हाँके जा रही थी। अचानक पत्नी ने पूछा, "अच्छा यह तो बताओ कि वह कौन सी चीज है जो मर्दों को तो पसंद है, पर औरतों को नहीं।"

  पति ने गहरी सांस लेते हुए कहा, "खामोशी"

- मनोज बस कंडक्टर से : चलती बस से कब उतरना चाहिए?

  बस कंडक्टर मनोज से : जब अस्पताल नजदीक हो।

- एक पड़ोसन अपनी दूसरी पड़ोसिन से : कुछ भी कहो बहन, पर तुम्हारा कुत्ता है बड़ा समझदार।

  पहली पड़ोसन : हाँ बहन, कुछ ज्यादा ही समझदार है, उस से जो चीज माँगो फौरन ले आता है। एक दिन चोर ने मेरे कुत्ते से तिजोरी की चाबी माँगी। उस ने चाबी ला कर फौरन चोर को दे दी।

- पति : अविश्वसनीय सी बात है, पर इस की सच्चाई से इन्कार नहीं किया जा सकता। यूरोप के एक विद्वान ने लिखा है कि जो आदमी जितना बेवकूफ होता है उसे उतनी ही खूबसूरत पत्नी मिलती है। पत्नीः बस..... बस..... रहने भी दो। मेरी प्रशंसा करने के सिवा तुम्हें कुछ और काम भी है?

  पति (पत्नी से) : तुम इतना काम करती हो, क्या थक नहीं जाती?एक नौकर क्यों नहीं रख लेती?

  पत्नी : प्रिय, मुझे भला किसी और की क्या जरूरत। तुम मिल गए मानों मुझे सब–कुछ मिल गया।

- डॉक्टर (वकील से) : वकील साहब, आप का धंदा अच्छा है। आप की जरा सी भूल से आदमी को 5 फुट ऊपर लटका दिया जाता है। वकील : हाँ, डॉक्टर साहब, यह तो है ही, लेकिन आप का धंधा मेरे धंधे से भी अच्छा है। आप की जरा सी भूल से आदमी 5 फुट नीचे दबा दिया जाता है।

- हीरो (निर्देशक से) : जनाब, दावत के सीन में मुझे असली शराब दीजिएगा, ताकि मेरा अभिनय वास्तविक लगे। निर्देशिका (चिढ़ते हुए) : हाँ हाँ, क्यों नहीं, आखिरी सीन में असली जहर भी खा लेना, जिस से मरने का अभिनय भी वास्तविक लगे।

- महेश : यार, तुम्हारे हाथ इतने काले कैसे?

  रमेश : मैं अपनी पत्नी को रेलवे स्टेशन छोड़ने गया था

  महेश : तो उस से हाथ गंदे होने का क्या मतलब?

  रमेश : यार, मैंने गाड़ी के इंजन को शाबाशी दी थी।

- एक वृद्ध नेता किसी बात से नाराज होकर पत्रकार को डांटते हुए बोला –

  "मेरी इतनी उम्र हो गयी, लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा है कि मैंने कभी झूठ बोला हो।"

  इस पर पत्रकार ने सहजता से कहा "इसमें आपका दोष नहीं है बाबूजी,

  इस उम्र में याददाश्त कमजोर हो ही जाती है।"

- रमेश ने सुरेश को अपने परिवार के बारे में बताते हुए कहा, "मेरा एक भाई अस्पताल में है और दूसरा जेल में" सुरेश, "क्या दोनों में खून–खराबा हो गया था?" रमेश, "नहीं, वो दोनों वहाँ नौकरी करते हैं।"

- एक युवक ने एक युवती से अपने प्रेम का इजहार करते हुए कहा, "मै जब भी तुम्हें देखता हूं, मेरे दिल में दर्द उठता है। क्या तुम्हें कुछ नहीं होता?" होता है, बिल्कुल होता है "तुम्हारी बातों से सिर में दर्द होता है" युवती ने कहा।



भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

पोस्ट बैग क्र. 2, शंकरनगर पोस्ट ऑफिस, नागपुर - 440033 (महाराष्ट्र)

दूरभाष - (07103) 275536/38 फैक्स : (07103) 275529

ई मेल : director.cicr@icar.gov.in ▪ वेब साइट : http://www.cicr.org.in

© Copyright. All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying or otherwise without the prior permission of the ICAR-CICR/ ICAR.